

पूजा-विधानम्

Colophon

This document was typeset using X_YTeX, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several L^AT_EX macros designed by H. L. Prasād. Practically all the encoding was done with the help of Itranslator 2003 and Ajit Krishnan's mudgala IME (<http://www.aupasana.com/>).

Acknowledgements

The initial encodings of some of these texts were obtained from <http://sanskritdocuments.org/> and/or <http://prapatti.com/>.

See also <http://stotrasamhita.github.io/about/>

स्तोत्रसङ्ग्रहः is also available online (in PDF format) at:
<http://stotrasamhita.github.io/>

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

| | |
|---|-----------|
| १ व्रतपूजाः | 1 |
| लघु-पञ्चायतन-पूजा | 2 |
| प्रधान पूजा — पञ्चायतनपूजा | 2 |
| षोडशोपचारपूजा | 5 |
| उत्तराङ्गपूजा | 15 |
| एकादशीव्रतम् — श्री-महाविष्णुपूजा | 20 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 20 |
| प्रधान पूजा - एकादशीपूजा | 22 |
| षोडशोपचारपूजा | 25 |
| विष्णुसहस्रनामावलिः | 29 |
| उत्तराङ्गपूजा | 49 |
| श्रीरामनवमी-पूजा | 54 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 54 |
| प्रधान-पूजा - श्रीराम-पूजा | 56 |
| षोडशोपचारपूजा | 59 |
| रामाष्टोत्तरशतनामावलिः | 64 |
| सीताष्टोत्तरशतनामावलिः | 66 |
| हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः | 68 |
| हनुमत्कृतं श्रीसीतारामस्तोत्रम् | 73 |
| प्रार्थना | 75 |
| कथा | 77 |
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा | 85 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 85 |
| प्रधान-पूजा - श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा | 87 |

| | |
|--|----|
| षोडशोपचारपूजा | 90 |
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलि: | 93 |
| उत्तराङ्गपूजा | 96 |

| | |
|---------------------------------------|------------|
| श्री-धन्वन्तरिपूजा | 100 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 100 |
| प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा | 102 |
| षोडशोपचारपूजा | 105 |
| उत्तराङ्गपूजा | 111 |

| | |
|---|------------|
| श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा | 114 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 114 |
| प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा | 116 |
| मातृगणपूजा | 119 |
| नवग्रहपूजा | 120 |
| लोकपालपूजा | 125 |
| षोडशोपचारपूजा | 127 |
| उत्तराङ्गपूजा | 133 |
| ईशानादि पूजा | 135 |
| कुबेर पूजा | 135 |
| प्रार्थना | 139 |
| अपराध-क्षमापनम् | 139 |

| | |
|-------------------------------------|------------|
| श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा | 140 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 140 |
| प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा | 142 |
| षोडशोपचारपूजा | 144 |

| | |
|-----------------------------------|------------|
| श्री तुलसी-पूजा | 158 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 158 |

| | |
|------------------------------------|-----|
| प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा | 159 |
| षोडशोपचारपूजा | 163 |
| उत्तराङ्गपूजा | 171 |

बृन्दावनपूजा (तुलसी-विष्णु-पूजा) **174**

| | |
|------------------------------------|-----|
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 174 |
| प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा | 176 |
| षोडशोपचारपूजा | 178 |
| अङ्गपूजा | 181 |
| तुलसीविवाहविधि: | 186 |

शिवरत्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा **188**

| | |
|--|-----|
| व्रत-सङ्कल्प: | 188 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 189 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-याम:) | 191 |
| षोडशोपचारपूजा | 194 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलि: | 196 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 198 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-याम:) | 201 |
| षोडशोपचारपूजा | 202 |
| महान्यास: | 203 |
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यास: रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 203 |
| पञ्चाङ्गमुखन्यास: रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् | 205 |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यास: | 207 |
| मूर्धादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यास: | 212 |
| पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यास: | 212 |
| हंसगायत्री | 213 |
| दिक् सम्पुटन्यास: | 214 |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् | 217 |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यास: | 220 |

| | |
|--|-----|
| आत्मरक्षा | 221 |
| शिवसङ्कल्पः | 222 |
| पुरुषसूक्तम् | 226 |
| उत्तरनारायणम् | 228 |
| अप्रतिरथम् | 228 |
| प्रतिपूरुषम् (सं०) | 230 |
| प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) | 230 |
| शतरुद्रीयम् (सं०) | 231 |
| शतरुद्रीयम् (ब्रा०) | 233 |
| पञ्चाङ्गम् | 234 |
| अष्टाङ्ग-नमस्काराः | 235 |
| लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम् | 236 |
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम् | 237 |
| आत्मपूजा | 238 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | 239 |
| प्रदक्षिणम् | 240 |
| नमस्काराः | 241 |
| चमकानुवाकैः प्रार्थना | 242 |
| प्रार्थना | 246 |
| श्रीरुद्रजपः | 246 |
| ध्यानम् | 247 |
| रुद्रप्रश्नः | 248 |
| रुद्रप्रश्नः | 249 |
| रुद्रप्रश्नः | 250 |
| रुद्रप्रश्नः | 251 |
| रुद्रप्रश्नः | 251 |
| रुद्रप्रश्नः | 252 |
| रुद्रप्रश्नः | 253 |
| रुद्रप्रश्नः | 254 |
| रुद्रप्रश्नः | 254 |

| | |
|---|-----|
| रुद्रप्रश्नः | 255 |
| रुद्रप्रश्नः | 256 |
| श्रीरुद्रनाम त्रिशती | 259 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 265 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 267 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः) | 270 |
| षोडशोपचारपूजा | 271 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 273 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 275 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) | 278 |
| षोडशोपचारपूजा | 279 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 281 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 284 |

| | |
|----------------------------------|-----|
| सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः | 287 |
|----------------------------------|-----|

| | |
|------------|-----|
| २ उपाङ्गाः | 290 |
|------------|-----|

| | |
|--------------------------|-----|
| संवत्सर-नामानि | 291 |
|--------------------------|-----|

| | |
|----------------|-----|
| नक्षत्र-नामानि | 292 |
|----------------|-----|

| | |
|------------|-----|
| योग-नामानि | 293 |
|------------|-----|

विभाग: १

व्रतपूजा:

॥ लघु-पञ्चायतन-पूजा ॥

॥ प्रधान पूजा — पञ्चायतनपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवस्सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
()^१ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् /
हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक
/ सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन)
मासे (शुक्ल / कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्दु /
भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^२ नक्षत्र
()^३ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम्
अस्याम् () शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय
आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं श्री महागणपति-प्रीत्यर्थं श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-
सूर्यनारायण-प्रीत्यर्थं श्री लक्ष्मीनारायण-प्रीत्यर्थं श्री महालक्ष्मीसमेतं श्री

^१पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^२पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^३पृष्ठं २९३ पश्यताम्

सन्तानगोपाल-प्रीत्यर्थं श्री गौरीदेवी-प्रीत्यर्थं श्री साम्बपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं
श्री नन्दिकेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं श्री
सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति
ध्यानावाहनादि षोडशोपचारपूजां पञ्चायतनपूजां क्षीराभिषेकं च करिष्ये।
तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप

ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥ ॐ
महागणपतये नमः॥

अस्मिन् बिम्बे श्री महागणपतिं ध्यायामि। आवाहयामि॥

आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता
रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं ध्यायामि।
आवाहयामि॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।

च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जा॒तवे॑दो म॒ आव॑ह॥

अस्मिन् बिम्बे श्री लक्ष्मीनारायणं ध्यायामि। अस्मिन् बिम्बे श्री
महालक्ष्मीसमेतं श्री सन्तानगोपालं ध्यायामि।

त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒गन्धिं पु॑ष्टि॒वर्ध॑नम्।

उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृत्योर्मु॒क्षीय॑ माऽमृता॑त्॥

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।

अष्टापदी नवपदी बभूवुषी। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री सपरिवार-साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

अस्मिन् बिम्बे श्री गौरीदेवीं ध्यायामि। आवाहयामि॥

अस्मिन् बिम्बे श्री साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्। अस्मिन्
बिम्बे श्री नन्दिकेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री वल्लिदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिनं ध्यायामि।

कल्पद्रुमं प्रणमतां कमलारुणभम्
स्कन्दं भुजद्वयमनामयमेकवक्त्रम्।

कात्यायनी-प्रियसुतं कटिबद्धवामम्
कौपीन-दण्डधर-दक्षिणहस्तमीडे ॥

आवाहयामि॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।

अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं
ध्यायामि।

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

आवाहयामि॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः।

आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

॥ अभिषेकः ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥ ॐ
महागणपतये नमः॥

ॐ आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता
रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशङ्गुलम्॥

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवाह॥

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
 अष्टापदी नवपदी बभ्रुवर्षी। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।
 तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्।
 तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

रुद्रप्रश्न-चमकप्रश्न-पुरुषष्टुक्तेः अभिषेकम् कृत्वा।
 अभिषेकानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।
 यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
 दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।
 अक्षतान् समर्पयामि।
 पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ महागणपति-अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

ॐ श्री महागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ आदित्य-अर्चना ॥

- | | |
|------------------|-----------------------|
| १. ॐ मित्राय नमः | ७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः |
| २. ॐ रवये नमः | ८. ॐ मरीचये नमः |
| ३. ॐ सूर्याय नमः | ९. ॐ आदित्याय नमः |
| ४. ॐ भानवे नमः | १०. ॐ सवित्रे नमः |
| ५. ॐ खगाय नमः | ११. ॐ अर्काय नमः |
| ६. ॐ पूष्णे नमः | १२. ॐ भास्कराय नमः |

ॐ श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ लक्ष्मीनारायण-अर्चना ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-अर्चना ॥

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

ॐ श्री महालक्ष्मीसमेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-साम्बपरमेश्वर-अर्चना ॥

- | | |
|------------------------|------------------------|
| १. ॐ भवाय देवाय नमः | ५. ॐ रुद्राय देवाय नमः |
| २. ॐ शर्वाय देवाय नमः | ६. ॐ उग्राय देवाय नमः |
| ३. ॐ ईशानाय देवाय नमः | ७. ॐ भीमाय देवाय नमः |
| ४. ॐ पशुपतये देवाय नमः | ८. ॐ महते देवाय नमः |
- ॐ श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ नन्दिकेश्वराय नमः।

॥ गौरी-अर्चना ॥

- | |
|----------------------------------|
| १. ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| २. ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ३. ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ४. ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः |
| ५. ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ६. ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ७. ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ८. ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः |
- ॐ श्री-गौरी-देव्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-सुब्रह्मण्यस्वामी-अर्चना ॥

- | | |
|----------------------------|-------------------------|
| १. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः | ८. ॐ कुमाराय नमः |
| २. ॐ स्कन्दाय नमः | ९. ॐ षण्मुखाय नमः |
| ३. ॐ अग्निभुवे नमः | १०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः |
| ४. ॐ बाहुलेयाय नमः | ११. ॐ शक्तिधराय नमः |
| ५. ॐ गाङ्गेयाय नमः | १२. ॐ गुहाय नमः |
| ६. ॐ शरवणोद्भवाय नमः | १३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः |
| ७. ॐ कार्तिकेयाय नमः | १४. ॐ षण्मातुराय नमः |

१५. ॐ क्रौञ्चभिन्ने नमः

१६. ॐ शिखिवाहनाय नमः

ॐ श्री वल्लिदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-राम-अर्चना ॥

१. ॐ श्रीरामाय नमः

१३. ॐ परमात्मने नमः

२. ॐ रामभद्राय नमः

१४. ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः

३. ॐ रामचन्द्राय नमः

१५. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय

४. ॐ शाश्वताय नमः

१६. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः

५. ॐ राजीवलोचनाय नमः

१७. ॐ परस्मै धाम्ने नमः

६. ॐ श्रीमते नमः

१८. ॐ पराकाशाय नमः

७. ॐ राजेन्द्राय नमः

१९. ॐ परात्पराय नमः

८. ॐ रघुपुङ्गवाय नमः

२०. ॐ परेशाय नमः

९. ॐ जानकीवल्लभाय नमः

२१. ॐ पारगाय नमः

१०. ॐ जैत्राय नमः

२२. ॐ पाराय नमः

११. ॐ जितामित्राय नमः

२३. ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः

१२. ॐ जनार्दनाय नमः

२४. ॐ पराय नमः

॥ श्री-सीता-अर्चना ॥

१. ॐ श्रीसीतायै नमः

७. ॐ अवनिसुतायै नमः

२. ॐ जानक्यै नमः

८. ॐ रामायै नमः

३. ॐ देव्यै नमः

९. ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै

४. ॐ वैदेह्यै नमः

१०. ॐ रत्नगुप्तायै नमः

५. ॐ राघवप्रियायै नमः

११. ॐ मातुलुङ्ग्यै नमः

६. ॐ रमायै नमः

१२. ॐ मैथिल्यै नमः

॥ श्री-हनूमद्-अर्चना ॥

१. ॐ हनुमते नमः
२. ॐ अञ्जनासूनवे नमः
३. ॐ वायुपुत्राय नमः
४. ॐ महाबलाय नमः
५. ॐ कपीन्द्राय नमः
६. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः
७. ॐ लङ्काद्वीपभयङ्कराय नमः
८. ॐ प्रभञ्जनसुताय नमः
९. ॐ वीराय नमः
१०. ॐ सीताशोकविनाशकाय नमः
११. ॐ अक्षहन्त्रे नमः
१२. ॐ रामसखाय नमः
१३. ॐ रामकार्यधुरन्धराय नमः
१४. ॐ महौषधगिरेर्धारिणे नमः
१५. ॐ वानरप्राणदायकाय नमः
१६. ॐ वारीशतारकाय नमः
१७. ॐ मैनाकगिरिभञ्जनाय नमः
१८. ॐ निरञ्जनाय नमः
१९. ॐ जितक्रोधाय नमः
२०. ॐ कदलीवनसंवृताय नमः
२१. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
२२. ॐ महासत्त्वाय नमः
२३. ॐ सर्वमन्त्रप्रवर्तकाय नमः
२४. ॐ महालिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः
२५. ॐ बाष्पकृत् जपतान्तराय नमः
२६. ॐ नित्यं शिवध्यानपराय नमः

२७. ॐ शिवपूजापरायणाय नमः

ॐ श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

धूपमाघ्रापयामि।

पञ्चहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतं सन्तम्।
पञ्चहोतेत्याचक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥
पञ्चहारतीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
गायत्रीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।
पशूँश्च मह्यमावह जीवं च दिशो दिश॥
मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।
अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥
एकहारतीदीपं दर्शयामि।
दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं कृत्वा।

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-
परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः
श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय
नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः
श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः ()
महानैवेद्यं निवेदयामि।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।
हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि।
निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते। यो राजा सत्राज्यो वा सोमैः यजते।
देवसुवामेतानि हवींषि भवन्ति। एतावन्तो वै देवानां सुवाः। त एवास्मै
सुवान्प्रयच्छन्ति। त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय। देवसू राजा भवति॥
न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव
भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-
परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः
श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय
नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः
श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः
समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोऽनमः॥

अन्तश्चरति॑ भूतेषु॒ गुहायां॑ वि॒श्वमूर्तिषु॑।
 त्वं यज्ञस्त्वं॑ वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व॑
 रुद्रस्त्वं॑ विष्णुस्त्वं॑ ब्रह्म त्वं॑ प्रजापतिः।
 त्वं तदाप॑ आपो॒ ज्योती॒ रसोऽमृतं॑ ब्रह्म॒ भूर्भुवः॑ सुव॒रोम्॥

यो वेदादौ॑ स्वरः॒ प्रोक्तो॒ वेदान्ते॑ च प्रतिष्ठितः।
 तस्य॑ प्र॒कृति॑लीनस्य॒ यः परः॑ स महेश्वरः॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि॑ कानि॑ च पापानि॑ जन्मान्तरकृतानि॑ च।
 तानि॑ तानि॑ विनश्यन्ति॑ प्रदक्षिण पदे पदे॥
 प्रदक्षिणं॑ कृत्वा।

नमः॑ शिवाय॒ साम्बाय॒ सगणाय॒ ससूनवे॑।
 सनन्दिने॑ सगङ्गाय॒ सवृषाय॒ नमो॑ नमः॥

नमः॑ शिवाभ्यां॒ नवयौवनाभ्याम्
 परस्पराश्लिष्टवर्धराभ्याम् ।
 नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम्
 नमो॑ नमः॑ शङ्करपार्वतीभ्याम्॥

॥ नमस्कारमन्त्राः ॥

नमो॑ हिरण्यबाहवे॒ हिरण्यवर्णाय॒ हिरण्यरूपाय॒ हिरण्यपतये॑ऽम्बिकापतय॒
 उमापतये॑ पशुपतये॒ नमो॑ नमः॥

ऋत॑ सत्यं॒ परं॑ ब्रह्म॒ पुरुषं॑ कृष्णपिङ्गलम्।
 ऊर्ध्वरे॑तं विरूपाक्षं॒ विश्वरूपाय॒ वै नमो॑ नमः॥

सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु।

पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः।

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्।

सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे।

वो चेम् शन्तम् ५ हृदे। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। नमस्कारान् कृत्वा।

छत्र-चामर-नृत्त-गीत-वाद्य-समस्त-राजोपचारान् समर्पयामि।

बाण-रावण-चण्डेश-नन्दि-भृङ्गि-रिटादयः।

महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥

नन्दिकेश्वराय नमः बलिं निवेदयामि। ॐ हर। ॐ हर। ॐ हर।

शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं शङ्करोपरि।

अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥

शङ्खजलेन प्रोक्ष्य।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।

आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।

सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभम्॥

इति अभिषेकतीर्थं प्राश्य।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।

तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाऽऽराधनं मम॥

हृद्द्वयकर्णिका-मध्यमुमया सह शङ्कर।

प्रविश त्वं महादेव सर्वैरावरणैः सह॥

सम्पूजकानां परिपालकानां
 यतेन्द्रियानां च तपोधनानाम्।
 देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञाम्
 करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥

अनया पूजया सपरिवार-साम्ब-परमेश्वरः प्रीयताम्।

॥ उद्वासनम् ॥

निर्याणमुद्रया पुष्पाण्यादाय आघ्राय हृदये स्थापयित्वा उद्वासयेत्। निर्माल्यं
 शिरसि धारयेत्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

आचामेत्।



॥ एकादशीव्रतम् — श्री-महाविष्णुपूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान पूजा - एकादशीपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^४ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त
/ शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह /
कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्ल
/ कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध /
गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^५ नक्षत्र ()^६ नाम योग
() करण युक्तायां च एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् (एकादश्यां
/ द्वादश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय
आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं श्रीभूमिनीलासमेतश्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि
षोडशोपचारपूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

^४पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^५पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^६पृष्ठं २९३ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ५. ॐ अनन्ताय नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ६. ॐ पृथिव्यै नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेत् चतुर्भुजं देवं शङ्खचक्रगदाधरम्।
पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्।
लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

पाद्यं समर्पयामि।

त्रि॒पादूर्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः। पादौ॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑।
ततो॑ वि॒श्वङ्म॑क्रामत्। सा॒श॒नान॑श॒ने अ॒भि॥
अर्घ्यं॑ समर्पयामि।

तस्मा॑द्विराड॑जायत। वि॒राजो॑ अ॒धि पू॑रुषः।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॑॥
आचमनीयं॑ समर्पयामि।

यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत।
व॒स॒न्तो अ॑स्याऽऽसी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॑विः॥
मधु॑पर्कं समर्पयामि।

स॒प्तास्या॑ऽऽसन् परि॒धयः॑। त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः।
दे॒वा यद्य॑ज्ञं त॑न्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पु॒रुषं॑ प॒शुम्॥
शुद्धो॑दकस्नानं॑ समर्पयामि। स्नानानन्तरम्॑ आचमनीयं॑ समर्पयामि।

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पु॒रुषं॑ जा॒तम॑ग्रतः।
तेन॑ दे॒वा अये॑जन्त। सा॒ध्या ऋ॑षेयश्च॒ ये॥
वस्त्रं॑ समर्पयामि।

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। सम्भृ॑तं पृषदा॒ज्यम्।
प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्यान्। आ॒र॒ण्यान्प्रा॒म्याश्च॒ ये॥
यज्ञो॑पवीतं॑ समर्पयामि।

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। ऋचः॑ सा॒मानि॑ जज्ञिरे।
छन्दाँ॑सि जज्ञिरे॒ तस्मा॑त्। यजु॑स्तस्मा॑दजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।
अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः।
गार्वो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ वराहाय नमः — पादौ पूजयामि
२. सङ्कर्षणाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. कालात्मने नमः — जानुनी पूजयामि
४. विश्वरूपाय नमः — जङ्घे पूजयामि
५. क्रोढाय नमः — ऊरू पूजयामि
६. भोक्त्रे नमः — कटिं पूजयामि
७. विष्णवे नमः — मेढ्रं पूजयामि
८. हिरण्यगर्भाय नमः — नाभिं पूजयामि
९. श्रीवत्सधारिणे नमः — कुक्षिं पूजयामि
१०. परमात्मने नमः — हृदयं पूजयामि
११. सर्वास्त्रधारिणे नमः — वक्षः पूजयामि
१२. वनमालिने नमः — कण्ठं पूजयामि
१३. सर्वात्मने नमः — मुखं पूजयामि
१४. सहस्राक्षाय नमः — नेत्राणि पूजयामि
१५. सुप्रभाय नमः — ललाटं पूजयामि
१६. चम्पकनासिकाय नमः — नासिकां पूजयामि
१७. सर्वेशाय नमः — कर्णौ पूजयामि
१८. सहस्रशिरसे नमः — शिरः पूजयामि

१९. नीलमेघनिभाय नमः — केशान् पूजयामि

२०. महापुरुषाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ विष्णुसहस्रनामावलि: ॥

ॐ विश्वस्मै नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वषट्काराय नमः
 ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः
 ॐ भूतकृते नमः
 ॐ भूतभृते नमः
 ॐ भावाय नमः
 ॐ भूतात्मने नमः
 ॐ भूतभावनाय नमः
 ॐ पूतात्मने नमः १०
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ मुक्तानां परमायै गतये नमः
 ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ पुरुषाय नमः
 ॐ साक्षिणे नमः
 ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः
 ॐ अक्षराय नमः
 ॐ योगाय नमः
 ॐ योगविदां नेत्रे नमः
 ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः २०
 ॐ नारसिंहवपुषे नमः
 ॐ श्रीमते नमः
 ॐ केशवाय नमः
 ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
 ॐ सर्वस्मै नमः

ॐ शर्वाय नमः
 ॐ शिवाय नमः
 ॐ स्थाणवे नमः
 ॐ भूतादये नमः
 ॐ निधयेऽव्ययाय नमः ३०
 ॐ सम्भवाय नमः
 ॐ भावनाय नमः
 ॐ भर्त्रे नमः
 ॐ प्रभवाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ ईश्वराय नमः
 ॐ स्वयम्भुवे नमः
 ॐ शम्भवे नमः
 ॐ आदित्याय नमः
 ॐ पुष्कराक्षाय नमः ४०
 ॐ महास्वनाय नमः
 ॐ अनादिनिधनाय नमः
 ॐ धात्रे नमः
 ॐ विधात्रे नमः
 ॐ धातव उत्तमाय नमः
 ॐ अप्रमेयाय नमः
 ॐ हृषीकेशाय नमः
 ॐ पद्मनाभाय नमः
 ॐ अमरप्रभवे नमः
 ॐ विश्वकर्मणे नमः ५०

ॐ मनवे नमः
 ॐ त्वष्ट्रे नमः
 ॐ स्थविष्ठाय नमः
 ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः
 ॐ अग्राह्याय नमः
 ॐ शाश्वताय नमः
 ॐ कृष्णाय नमः
 ॐ लोहिताक्षाय नमः
 ॐ प्रतर्दनाय नमः
 ॐ प्रभूताय नमः
 ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः
 ॐ पवित्राय नमः
 ॐ मङ्गलाय परस्मै नमः
 ॐ ईशानाय नमः
 ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ प्राणाय नमः
 ॐ ज्येष्ठाय नमः
 ॐ श्रेष्ठाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
 ॐ भूगर्भाय नमः
 ॐ माधवाय नमः
 ॐ मधुसूदनाय नमः
 ॐ ईश्वराय नमः
 ॐ विक्रमिणे नमः
 ॐ धन्विने नमः
 ॐ मेधाविने नमः

६०

७०

ॐ विक्रमाय नमः
 ॐ क्रमाय नमः
 ॐ अनुत्तमाय नमः
 ॐ दुराधर्षाय नमः
 ॐ कृतज्ञाय नमः
 ॐ कृतये नमः
 ॐ आत्मवते नमः
 ॐ सुरेशाय नमः
 ॐ शरणाय नमः
 ॐ शर्मणे नमः
 ॐ विश्वरेतसे नमः
 ॐ प्रजाभवाय नमः
 ॐ अहे नमः
 ॐ संवत्सराय नमः
 ॐ व्यालाय नमः
 ॐ प्रत्ययाय नमः
 ॐ सर्वदर्शनाय नमः
 ॐ अजाय नमः
 ॐ सर्वेश्वराय नमः
 ॐ सिद्धाय नमः
 ॐ सिद्धये नमः
 ॐ सर्वादये नमः
 ॐ अच्युताय नमः
 ॐ वृषाकपये नमः
 ॐ अमेयात्मने नमः
 ॐ सर्वयोगविनिस्सृताय नमः
 ॐ वसवे नमः

८०

९०

१००

ॐ वसुमनसे नमः
 ॐ सत्याय नमः
 ॐ समात्मने नमः
 ॐ असम्मिताय नमः
 ॐ समाय नमः
 ॐ अमोघाय नमः ११०
 ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः
 ॐ वृषकर्मणे नमः
 ॐ वृषाकृतये नमः
 ॐ रुद्राय नमः
 ॐ बहुशिरसे नमः
 ॐ बभ्रवे नमः
 ॐ विश्वयोनये नमः
 ॐ शुचिश्रवसे नमः
 ॐ अमृताय नमः
 ॐ शाश्वतस्थानवे नमः १२०
 ॐ वरारोहाय नमः
 ॐ महातपसे नमः
 ॐ सर्वगाय नमः
 ॐ सर्वविद्वानवे नमः
 ॐ विष्वक्सेनाय नमः
 ॐ जनार्दनाय नमः
 ॐ वेदाय नमः
 ॐ वेदविदे नमः
 ॐ अव्यङ्गाय नमः
 ॐ वेदाङ्गाय नमः १३०
 ॐ वेदविदे नमः

ॐ कवये नमः
 ॐ लोकाध्यक्षाय नमः
 ॐ सुराध्यक्षाय नमः
 ॐ धर्माध्यक्षाय नमः
 ॐ कृताकृताय नमः
 ॐ चतुरात्मने नमः
 ॐ चतुर्व्यूहाय नमः
 ॐ चतुर्दष्टाय नमः
 ॐ चतुर्भुजाय नमः १४०
 ॐ भ्राजिष्णवे नमः
 ॐ भोजनाय नमः
 ॐ भोक्त्रे नमः
 ॐ सहिष्णवे नमः
 ॐ जगदादिजाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ विजयाय नमः
 ॐ जेत्रे नमः
 ॐ विश्वयोनये नमः
 ॐ पुनर्वसवे नमः १५०
 ॐ उपेन्द्राय नमः
 ॐ वामनाय नमः
 ॐ प्रांशवे नमः
 ॐ अमोघाय नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ ऊर्जिताय नमः
 ॐ अतीन्द्राय नमः
 ॐ सङ्ग्रहाय नमः

| | | | |
|-----------------------|-----|---------------------|-----|
| ॐ सर्गाय नमः | | ॐ सुरानन्दाय नमः | |
| ॐ धृतात्मने नमः | १६० | ॐ गोविन्दाय नमः | |
| ॐ नियमाय नमः | | ॐ गोविदां पतये नमः | |
| ॐ यमाय नमः | | ॐ मरीचये नमः | |
| ॐ वेद्याय नमः | | ॐ दमनाय नमः | १९० |
| ॐ वैद्याय नमः | | ॐ हंसाय नमः | |
| ॐ सदायोगिने नमः | | ॐ सुपर्णाय नमः | |
| ॐ वीरघ्ने नमः | | ॐ भुजगोत्तमाय नमः | |
| ॐ माधवाय नमः | | ॐ हिरण्यनाभाय नमः | |
| ॐ मधवे नमः | | ॐ सुतपसे नमः | |
| ॐ अतीन्द्रियाय नमः | | ॐ पद्मनाभाय नमः | |
| ॐ महामायाय नमः | १७० | ॐ प्रजापतये नमः | |
| ॐ महोत्साहाय नमः | | ॐ अमृत्यवे नमः | |
| ॐ महाबलाय नमः | | ॐ सर्वदृशे नमः | |
| ॐ महाबुद्धये नमः | | ॐ सिंहाय नमः | २०० |
| ॐ महावीर्याय नमः | | ॐ सन्धात्रे नमः | |
| ॐ महाशक्तये नमः | | ॐ सन्धिमतये नमः | |
| ॐ महाद्युतये नमः | | ॐ स्थिराय नमः | |
| ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः | | ॐ अजाय नमः | |
| ॐ श्रीमते नमः | | ॐ दुर्मर्षणाय नमः | |
| ॐ अमेयात्मने नमः | | ॐ शास्त्रे नमः | |
| ॐ महाद्रिधृषे नमः | १८० | ॐ विश्रुतात्मने नमः | |
| ॐ महेष्वासाय नमः | | ॐ सुरारिघ्ने नमः | |
| ॐ महीभर्त्रे नमः | | ॐ गुरवे नमः | |
| ॐ श्रीनिवासाय नमः | | ॐ गुरुतमाय नमः | २१० |
| ॐ सतां गतये नमः | | ॐ धाम्ने नमः | |
| ॐ अनिरुद्धाय नमः | | ॐ सत्याय नमः | |

ॐ सत्यपराक्रमाय नमः
 ॐ निमिषाय नमः
 ॐ अनिमिषाय नमः
 ॐ स्रग्विणे नमः
 ॐ वाचस्पतये उदारधिये नमः
 ॐ अग्रण्ये नमः
 ॐ ग्रामण्ये नमः
 ॐ श्रीमते नमः २२०
 ॐ न्यायाय नमः
 ॐ नेत्रे नमः
 ॐ समीरणाय नमः
 ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः
 ॐ विश्वात्मने नमः
 ॐ सहस्राक्षाय नमः
 ॐ सहस्रपदे नमः
 ॐ आवर्तनाय नमः
 ॐ निवृत्तात्मने नमः
 ॐ संवृताय नमः २३०
 ॐ सम्प्रमर्दनाय नमः
 ॐ अहःसंवर्तकाय नमः
 ॐ वह्नये नमः
 ॐ अनिलाय नमः
 ॐ धरणीधराय नमः
 ॐ सुप्रसादाय नमः
 ॐ प्रसन्नात्मने नमः
 ॐ विश्वधृषे नमः
 ॐ विश्वभुजे नमः

ॐ विभवे नमः २४०
 ॐ सत्कर्त्रे नमः
 ॐ सत्कृताय नमः
 ॐ साधवे नमः
 ॐ जह्वे नमः
 ॐ नारायणाय नमः
 ॐ नराय नमः
 ॐ असङ्ख्येयान् नमः
 ॐ अप्रमेयात्मने नमः
 ॐ विशिष्टाय नमः
 ॐ शिष्टकृते नमः २५०
 ॐ शुचये नमः
 ॐ सिद्धार्थाय नमः
 ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः
 ॐ सिद्धिदाय नमः
 ॐ सिद्धिसाधनाय नमः
 ॐ वृषाहिणे नमः
 ॐ वृषभाय नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वृषपर्वणे नमः
 ॐ वृषोदराय नमः २६०
 ॐ वर्धनाय नमः
 ॐ वर्धमानाय नमः
 ॐ विविक्ताय नमः
 ॐ श्रुतिसागराय नमः
 ॐ सुभुजाय नमः
 ॐ दुर्धराय नमः

ॐ वाग्मिने नमः
 ॐ महेन्द्राय नमः
 ॐ वसुदाय नमः
 ॐ वसवे नमः २७०
 ॐ नैकरूपाय नमः
 ॐ बृहद्रूपाय नमः
 ॐ शिपिविष्टाय नमः
 ॐ प्रकाशनाय नमः
 ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः
 ॐ प्रकाशात्मने नमः
 ॐ प्रतापनाय नमः
 ॐ ऋद्धाय नमः
 ॐ स्पष्टाक्षराय नमः
 ॐ मन्त्राय नमः २८०
 ॐ चन्द्रांशवे नमः
 ॐ भास्करद्युतये नमः
 ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः
 ॐ भानवे नमः
 ॐ शशबिन्दवे नमः
 ॐ सुरेश्वराय नमः
 ॐ औषधाय नमः
 ॐ जगतस्सेतवे नमः
 ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः
 ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः २९०
 ॐ पवनाय नमः
 ॐ पावनाय नमः
 ॐ अनलाय नमः

ॐ कामधे नमः
 ॐ कामकृते नमः
 ॐ कान्ताय नमः
 ॐ कामाय नमः
 ॐ कामप्रदाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ युगादिकृते नमः ३००
 ॐ युगावर्ताय नमः
 ॐ नैकमायाय नमः
 ॐ महाशनाय नमः
 ॐ अदृश्याय नमः
 ॐ व्यक्तरूपाय नमः
 ॐ सहस्रजिते नमः
 ॐ अनन्तजिते नमः
 ॐ इष्टाय नमः
 ॐ अविशिष्टाय नमः
 ॐ शिष्टेष्टाय नमः ३१०
 ॐ शिखण्डिने नमः
 ॐ नहुषाय नमः
 ॐ वृषाय नमः
 ॐ क्रोधधे नमः
 ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः
 ॐ विश्वबाहवे नमः
 ॐ महीधराय नमः
 ॐ अच्युताय नमः
 ॐ प्रथिताय नमः
 ॐ प्राणाय नमः ३२०

ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ वासवानुजाय नमः
 ॐ अपान्निधये नमः
 ॐ अधिष्ठानाय नमः
 ॐ अप्रमत्ताय नमः
 ॐ प्रतिष्ठिताय नमः
 ॐ स्कन्दाय नमः
 ॐ स्कन्दधराय नमः
 ॐ धुर्याय नमः
 ॐ वरदाय नमः
 ॐ वायुवाहनाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ बृहद्भानवे नमः
 ॐ आदिदेवाय नमः
 ॐ पुरन्दराय नमः
 ॐ अशोकाय नमः
 ॐ तारणाय नमः
 ॐ ताराय नमः
 ॐ शूराय नमः
 ॐ शौरये नमः
 ॐ जनेश्वराय नमः
 ॐ अनुकूलाय नमः
 ॐ शतावर्ताय नमः
 ॐ पद्मिने नमः
 ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः
 ॐ पद्मनाभाय नमः
 ॐ अरविन्दाक्षाय नमः

३३०

३४०

ॐ पद्मगर्भाय नमः
 ॐ शरीरभृते नमः
 ॐ महर्द्धये नमः
 ॐ ऋद्धाय नमः
 ॐ वृद्धात्मने नमः
 ॐ महाक्षाय नमः
 ॐ गरुडध्वजाय नमः
 ॐ अतुलाय नमः
 ॐ शरभाय नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ समयज्ञाय नमः
 ॐ हविर्हरये नमः
 ॐ सर्वलक्षणलक्षणाय नमः
 ॐ लक्ष्मीवते नमः
 ॐ समितिञ्जयाय नमः
 ॐ विक्षराय नमः
 ॐ रोहिताय नमः
 ॐ मार्गाय नमः
 ॐ हेतवे नमः
 ॐ दामोदराय नमः
 ॐ सहाय नमः
 ॐ महीधराय नमः
 ॐ महाभागाय नमः
 ॐ वेगवते नमः
 ॐ अमिताशनाय नमः
 ॐ उद्भवाय नमः
 ॐ क्षोभणाय नमः

३५०

३६०

३७०

| | | | |
|-------------------|-----|---------------------------|-----|
| ॐ देवाय नमः | | ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः | |
| ॐ श्रीगर्भाय नमः | | ॐ धर्माय नमः | |
| ॐ परमेश्वराय नमः | | ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः | |
| ॐ करणाय नमः | | ॐ वैकुण्ठाय नमः | |
| ॐ कारणाय नमः | | ॐ पुरुषाय नमः | |
| ॐ कर्त्रे नमः | ३८० | ॐ प्राणाय नमः | |
| ॐ विकर्त्रे नमः | | ॐ प्राणदाय नमः | |
| ॐ गहनाय नमः | | ॐ प्रणवाय नमः | |
| ॐ गुहाय नमः | | ॐ पृथ्वे नमः | ४१० |
| ॐ व्यवसायाय नमः | | ॐ हिरण्यगर्भाय नमः | |
| ॐ व्यवस्थानाय नमः | | ॐ शत्रुघ्नाय नमः | |
| ॐ संस्थानाय नमः | | ॐ व्याप्ताय नमः | |
| ॐ स्थानदाय नमः | | ॐ वायवे नमः | |
| ॐ ध्रुवाय नमः | | ॐ अधोक्षजाय नमः | |
| ॐ परर्द्धये नमः | | ॐ ऋतवे नमः | |
| ॐ परमस्पष्टाय नमः | ३९० | ॐ सुदर्शनाय नमः | |
| ॐ तुष्टाय नमः | | ॐ कालाय नमः | |
| ॐ पुष्टाय नमः | | ॐ परमेष्ठिने नमः | |
| ॐ शुभेक्षणाय नमः | | ॐ परिग्रहाय नमः | ४२० |
| ॐ रामाय नमः | | ॐ उग्राय नमः | |
| ॐ विरामाय नमः | | ॐ संवत्सराय नमः | |
| ॐ विरताय नमः | | ॐ दक्षाय नमः | |
| ॐ मार्गाय नमः | | ॐ विश्रामाय नमः | |
| ॐ नेयाय नमः | | ॐ विश्वदक्षिणाय नमः | |
| ॐ नयाय नमः | | ॐ विस्ताराय नमः | |
| ॐ अनयाय नमः | ४०० | ॐ स्थावरस्थाणवे नमः | |
| ॐ वीराय नमः | | ॐ प्रमाणाय नमः | |

ॐ बीजायाव्ययाय नमः
 ॐ अर्थाय नमः
 ॐ अनर्थाय नमः
 ॐ महाकोशाय नमः
 ॐ महाभोगाय नमः
 ॐ महाधनाय नमः
 ॐ अनिर्विण्णाय नमः
 ॐ स्थविष्ठाय नमः
 ॐ अभुवे नमः
 ॐ धर्मयूपाय नमः
 ॐ महामखाय नमः
 ॐ नक्षत्रनेमये नमः
 ॐ नक्षत्रिणे नमः
 ॐ क्षमाय नमः
 ॐ क्षामाय नमः
 ॐ समीहनाय नमः
 ॐ यज्ञाय नमः
 ॐ इज्याय नमः
 ॐ महेज्याय नमः
 ॐ क्रतवे नमः
 ॐ सत्राय नमः
 ॐ सताङ्गतये नमः
 ॐ सर्वदर्शिने नमः
 ॐ विमुक्तात्मने नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ ज्ञानाय उत्तमाय नमः
 ॐ सुव्रताय नमः

४३०

४४०

४५०

ॐ सुमुखाय नमः
 ॐ सूक्ष्माय नमः
 ॐ सुघोषाय नमः
 ॐ सुखदाय नमः
 ॐ सुहृदे नमः
 ॐ मनोहराय नमः
 ॐ जितक्रोधाय नमः
 ॐ वीरबाहवे नमः
 ॐ विदारणाय नमः
 ॐ स्वापनाय नमः
 ॐ स्ववशाय नमः
 ॐ व्यापिने नमः
 ॐ नैकात्मने नमः
 ॐ नैककर्मकृते नमः
 ॐ वत्सराय नमः
 ॐ वत्सलाय नमः
 ॐ वत्सिने नमः
 ॐ रत्नगर्भाय नमः
 ॐ धनेश्वराय नमः
 ॐ धर्मगुप्ते नमः
 ॐ धर्मकृते नमः
 ॐ धर्मिणे नमः
 ॐ सते नमः
 ॐ असते नमः
 ॐ क्षराय नमः
 ॐ अक्षराय नमः
 ॐ अविज्ञात्रे नमः

४६०

४७०

४८०

ॐ सहस्रांशवे नमः
 ॐ विधात्रे नमः
 ॐ कृतलक्षणाय नमः
 ॐ गभस्तिनेमये नमः
 ॐ सत्त्वस्थाय नमः
 ॐ सिंहाय नमः
 ॐ भूतमहेश्वराय नमः
 ॐ आदिदेवाय नमः ४९०
 ॐ महादेवाय नमः
 ॐ देवेशाय नमः
 ॐ देवभृद्गुरवे नमः
 ॐ उत्तराय नमः
 ॐ गोपतये नमः
 ॐ गोत्रे नमः
 ॐ ज्ञानगम्याय नमः
 ॐ पुरातनाय नमः
 ॐ शरीरभूतभृते नमः
 ॐ भोक्त्रे नमः ५००
 ॐ कपीन्द्राय नमः
 ॐ भूरिदक्षिणाय नमः
 ॐ सोमपाय नमः
 ॐ अमृतपाय नमः
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ पुरुजिते नमः
 ॐ पुरुसत्तमाय नमः
 ॐ विनयाय नमः
 ॐ जयाय नमः

ॐ सत्यसन्धाय नमः ५१०
 ॐ दाशार्हाय नमः
 ॐ सात्त्वतां पतये नमः
 ॐ जीवाय नमः
 ॐ विनयितासाक्षिणे नमः
 ॐ मुकुन्दाय नमः
 ॐ अमितविक्रमाय नमः
 ॐ अम्भोनिधये नमः
 ॐ अनन्तात्मने नमः
 ॐ महोदधिशयाय नमः
 ॐ अन्तकाय नमः ५२०
 ॐ अजाय नमः
 ॐ महार्हाय नमः
 ॐ स्वाभाव्याय नमः
 ॐ जितामित्राय नमः
 ॐ प्रमोदनाय नमः
 ॐ आनन्दाय नमः
 ॐ नन्दनाय नमः
 ॐ नन्दाय नमः
 ॐ सत्यधर्मणे नमः
 ॐ त्रिविक्रमाय नमः ५३०
 ॐ महर्षये कपिलाचार्याय नमः
 ॐ कृतज्ञाय नमः
 ॐ मेदिनीपतये नमः
 ॐ त्रिपदाय नमः
 ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः
 ॐ महाशृङ्गाय नमः

| | | | |
|--------------------------|-----|-------------------------|-----|
| ॐ कृतान्तकृते नमः | | ॐ ज्योतिरादित्याय नमः | |
| ॐ महावराहाय नमः | | ॐ सहिष्णवे नमः | |
| ॐ गोविन्दाय नमः | | ॐ गतिसत्तमाय नमः | |
| ॐ सुषेणाय नमः | ५४० | ॐ सुधन्वने नमः | |
| ॐ कनकाङ्गदिने नमः | | ॐ खण्डपरशवे नमः | |
| ॐ गुह्याय नमः | | ॐ दारुणाय नमः | |
| ॐ गभीराय नमः | | ॐ द्रविणप्रदाय नमः | ५७० |
| ॐ गहनाय नमः | | ॐ दिवस्पृशे नमः | |
| ॐ गुप्ताय नमः | | ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः | |
| ॐ चक्रगदाधराय नमः | | ॐ वाचस्पतयेऽयोनिजाय नमः | |
| ॐ वेधसे नमः | | ॐ त्रिसाम्ने नमः | |
| ॐ स्वाङ्गाय नमः | | ॐ सामगाय नमः | |
| ॐ अजिताय नमः | | ॐ साम्ने नमः | |
| ॐ कृष्णाय नमः | ५५० | ॐ निर्वाणाय नमः | |
| ॐ दृढाय नमः | | ॐ भेषजाय नमः | |
| ॐ सङ्कर्षणायाच्युताय नमः | | ॐ भिषजे नमः | |
| ॐ वरुणाय नमः | | ॐ सन्ध्यासकृते नमः | ५८० |
| ॐ वारुणाय नमः | | ॐ शमाय नमः | |
| ॐ वृक्षाय नमः | | ॐ शान्ताय नमः | |
| ॐ पुष्कराक्षाय नमः | | ॐ निष्ठायै नमः | |
| ॐ महामनसे नमः | | ॐ शान्त्यै नमः | |
| ॐ भगवते नमः | | ॐ परायणाय नमः | |
| ॐ भगन्ने नमः | | ॐ शुभाङ्गाय नमः | |
| ॐ आनन्दिने नमः | ५६० | ॐ शान्तिदाय नमः | |
| ॐ वनमालिने नमः | | ॐ स्रष्ट्रे नमः | |
| ॐ हलायुधाय नमः | | ॐ कुमुदाय नमः | |
| ॐ आदित्याय नमः | | ॐ कुव्लेशयाय नमः | ५९० |

ॐ गोहिताय नमः
 ॐ गोपतये नमः
 ॐ गोत्रे नमः
 ॐ वृषभाक्षाय नमः
 ॐ वृषप्रियाय नमः
 ॐ अनिवर्तिने नमः
 ॐ निवृत्तात्मने नमः
 ॐ सङ्क्षेत्रे नमः
 ॐ क्षेमकृते नमः
 ॐ शिवाय नमः
 ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
 ॐ श्रीवासाय नमः
 ॐ श्रीपतये नमः
 ॐ श्रीमतां वराय नमः
 ॐ श्रीदाय नमः
 ॐ श्रीशाय नमः
 ॐ श्रीनिवासाय नमः
 ॐ श्रीनिधये नमः
 ॐ श्रीविभावनाय नमः
 ॐ श्रीधराय नमः
 ॐ श्रीकराय नमः
 ॐ श्रेयसे नमः
 ॐ श्रीमते नमः
 ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः
 ॐ स्वक्षाय नमः
 ॐ स्वङ्गाय नमः
 ॐ शतानन्दाय नमः

६००

६१०

ॐ नन्दये नमः
 ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
 ॐ विजितात्मने नमः
 ॐ अविधेयात्मने नमः
 ॐ सत्कीर्तये नमः
 ॐ छिन्नसंशयाय नमः
 ॐ उदीर्णाय नमः
 ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः
 ॐ अनीशाय नमः
 ॐ शाश्वतस्थिराय नमः
 ॐ भूशयाय नमः
 ॐ भूषणाय नमः
 ॐ भूतये नमः
 ॐ विशोकाय नमः
 ॐ शोकनाशनाय नमः
 ॐ अर्चिष्मते नमः
 ॐ अर्चिताय नमः
 ॐ कुम्भाय नमः
 ॐ विशुद्धात्मने नमः
 ॐ विशोधनाय नमः
 ॐ अनिरुद्धाय नमः
 ॐ अप्रतिरथाय नमः
 ॐ प्रद्युम्नाय नमः
 ॐ अमितविक्रमाय नमः
 ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः
 ॐ वीराय नमः
 ॐ शौरये नमः

६२०

६३०

६४०

ॐ शूरजनेश्वराय नमः
 ॐ त्रिलोकात्मने नमः
 ॐ त्रिलोकेशाय नमः
 ॐ केशवाय नमः
 ॐ केशिघ्ने नमः
 ॐ हरये नमः
 ॐ कामदेवाय नमः
 ॐ कामपालाय नमः
 ॐ कामिने नमः
 ॐ कान्ताय नमः
 ॐ कृतागमाय नमः
 ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वीराय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ धनञ्जयाय नमः
 ॐ ब्रह्मण्याय नमः
 ॐ ब्रह्मकृते नमः
 ॐ ब्रह्मणे नमः
 ॐ ब्रह्मणे नमः
 ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः
 ॐ ब्रह्मविदे नमः
 ॐ ब्राह्मणाय नमः
 ॐ ब्रह्मिणे नमः
 ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः
 ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः
 ॐ महाक्रमाय नमः

६५०

६६०

६७०

ॐ महाकर्मणे नमः
 ॐ महातेजसे नमः
 ॐ महोरगाय नमः
 ॐ महाक्रतवे नमः
 ॐ महायज्वने नमः
 ॐ महायज्ञाय नमः
 ॐ महाहविषे नमः
 ॐ स्तव्याय नमः
 ॐ स्तवप्रियाय नमः
 ॐ स्तोत्राय नमः
 ॐ स्तुतये नमः
 ॐ स्तोत्रे नमः
 ॐ रणप्रियाय नमः
 ॐ पूर्णाय नमः
 ॐ पूरयित्रे नमः
 ॐ पुण्याय नमः
 ॐ पुण्यकीर्तये नमः
 ॐ अनामयाय नमः
 ॐ मनोजवाय नमः
 ॐ तीर्थकराय नमः
 ॐ वसुरेतसे नमः
 ॐ वसुप्रदाय नमः
 ॐ वसुप्रदाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ वसुवे नमः
 ॐ वसुमनसे नमः
 ॐ हविषे नमः

६८०

६९०

| | | | |
|---------------------|-----|---------------------|-----|
| ॐ सद्गतये नमः | | ॐ नैकस्मै नमः | |
| ॐ सत्कृतये नमः | ७०० | ॐ सवाय नमः | |
| ॐ सत्तायै नमः | | ॐ काय नमः | |
| ॐ सद्भूतये नमः | | ॐ कस्मै नमः | |
| ॐ सत्परायणाय नमः | | ॐ यस्मै नमः | ७३० |
| ॐ शूरसेनाय नमः | | ॐ तस्मै नमः | |
| ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः | | ॐ पदायानुत्तमाय नमः | |
| ॐ सन्निवासाय नमः | | ॐ लोकबन्धवे नमः | |
| ॐ सुयामुनाय नमः | | ॐ लोकनाथाय नमः | |
| ॐ भूतावासाय नमः | | ॐ माधवाय नमः | |
| ॐ वासुदेवाय नमः | | ॐ भक्तवत्सलाय नमः | |
| ॐ सर्वासुनिलयाय नमः | ७१० | ॐ सुवर्णवर्णाय नमः | |
| ॐ अनलाय नमः | | ॐ हेमाङ्गाय नमः | |
| ॐ दर्पघ्ने नमः | | ॐ वराङ्गाय नमः | |
| ॐ दर्पदाय नमः | | ॐ चन्दनाङ्गदिने नमः | ७४० |
| ॐ दृष्टाय नमः | | ॐ वीरघ्ने नमः | |
| ॐ दुर्धराय नमः | | ॐ विषमाय नमः | |
| ॐ अपराजिताय नमः | | ॐ शून्याय नमः | |
| ॐ विश्वमूर्तये नमः | | ॐ घृताशिषे नमः | |
| ॐ महामूर्तये नमः | | ॐ अचलाय नमः | |
| ॐ दीप्तमूर्तये नमः | | ॐ चलाय नमः | |
| ॐ अमूर्तिमते नमः | ७२० | ॐ अमानिने नमः | |
| ॐ अनेकमूर्तये नमः | | ॐ मानदाय नमः | |
| ॐ अव्यक्ताय नमः | | ॐ मान्याय नमः | |
| ॐ शतमूर्तये नमः | | ॐ लोकस्वामिने नमः | ७५० |
| ॐ शताननाय नमः | | ॐ त्रिलोकधृषे नमः | |
| ॐ एकस्मै नमः | | ॐ सुमेधसे नमः | |

ॐ मेधजाय नमः
 ॐ धन्याय नमः
 ॐ सत्यमेधसे नमः
 ॐ धराधराय नमः
 ॐ तेजोवृषाय नमः
 ॐ द्युतिधराय नमः
 ॐ सर्वशस्त्रभृतां वराय नमः
 ॐ प्रग्रहाय नमः ७६०
 ॐ निग्रहाय नमः
 ॐ व्यग्राय नमः
 ॐ नैकशृङ्गाय नमः
 ॐ गदाग्रजाय नमः
 ॐ चतुर्मूर्तये नमः
 ॐ चतुर्बाहवे नमः
 ॐ चतुर्व्यूहाय नमः
 ॐ चतुर्गतये नमः
 ॐ चतुरात्मने नमः
 ॐ चतुर्भावाय नमः ७७०
 ॐ चतुर्वेदविदे नमः
 ॐ एकपदे नमः
 ॐ समावर्ताय नमः
 ॐ अनिवृत्तात्मने नमः
 ॐ दुर्जयाय नमः
 ॐ दुरतिक्रमाय नमः
 ॐ दुर्लभाय नमः
 ॐ दुर्गमाय नमः
 ॐ दुर्गाय नमः

ॐ दुरावासाय नमः ७८०
 ॐ दुरारिघ्ने नमः
 ॐ शुभाङ्गाय नमः
 ॐ लोकसारङ्गाय नमः
 ॐ सुतन्त्रवे नमः
 ॐ तन्तुवर्धनाय नमः
 ॐ इन्द्रकर्मणे नमः
 ॐ महाकर्मणे नमः
 ॐ कृतकर्मणे नमः
 ॐ कृतागमाय नमः
 ॐ उद्भवाय नमः ७९०
 ॐ सुन्दराय नमः
 ॐ सुन्दाय नमः
 ॐ रत्ननाभाय नमः
 ॐ सुलोचनाय नमः
 ॐ अर्काय नमः
 ॐ वाजसनाय नमः
 ॐ शृङ्गिणे नमः
 ॐ जयन्ताय नमः
 ॐ सर्वविज्जयिने नमः
 ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः ८००
 ॐ अक्षोभ्याय नमः
 ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
 ॐ महाहृदाय नमः
 ॐ महागर्ताय नमः
 ॐ महाभूताय नमः
 ॐ महानिधये नमः

ॐ कुमुदाय नमः
 ॐ कुन्दराय नमः
 ॐ कुन्दाय नमः
 ॐ पर्जन्याय नमः ८१०
 ॐ पावनाय नमः
 ॐ अनिलाय नमः
 ॐ अमृताशाय नमः
 ॐ अमृतवपुषे नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ सर्वतोमुखाय नमः
 ॐ सुलभाय नमः
 ॐ सुव्रताय नमः
 ॐ सिद्धाय नमः
 ॐ शत्रुजिते नमः ८२०
 ॐ शत्रुतापनाय नमः
 ॐ न्यग्रोधाय नमः
 ॐ उदुम्बराय नमः
 ॐ अश्वत्थाय नमः
 ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः
 ॐ सहस्रार्चिषे नमः
 ॐ सप्तजिह्वाय नमः
 ॐ सप्तैधसे नमः
 ॐ सप्तवाहनाय नमः
 ॐ अमूर्तये नमः ८३०
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ अचिन्त्याय नमः
 ॐ भयकृते नमः

ॐ भयनाशनाय नमः
 ॐ अणवे नमः
 ॐ बृहते नमः
 ॐ कृशाय नमः
 ॐ स्थूलाय नमः
 ॐ गुणभृते नमः
 ॐ निर्गुणाय नमः ८४०
 ॐ महते नमः
 ॐ अधृताय नमः
 ॐ स्वधृताय नमः
 ॐ स्वास्याय नमः
 ॐ प्राग्वंशाय नमः
 ॐ वंशवर्धनाय नमः
 ॐ भारभृते नमः
 ॐ कथिताय नमः
 ॐ योगिने नमः
 ॐ योगीशाय नमः ८५०
 ॐ सर्वकामदाय नमः
 ॐ आश्रमाय नमः
 ॐ श्रमणाय नमः
 ॐ क्षामाय नमः
 ॐ सुपर्णाय नमः
 ॐ वायुवाहनाय नमः
 ॐ धनुर्धराय नमः
 ॐ धनुर्वेदाय नमः
 ॐ दण्डाय नमः
 ॐ दमयित्रे नमः ८६०

ॐ दमाय नमः
 ॐ अपराजिताय नमः
 ॐ सर्वसहाय नमः
 ॐ नियन्त्रे नमः
 ॐ अनियमाय नमः
 ॐ अयमाय नमः
 ॐ सत्त्ववते नमः
 ॐ सात्त्विकाय नमः
 ॐ सत्याय नमः
 ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः ८७०
 ॐ अभिप्रायाय नमः
 ॐ प्रियार्हाय नमः
 ॐ अर्हाय नमः
 ॐ प्रियकृते नमः
 ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः
 ॐ विहायसगतये नमः
 ॐ ज्योतिषे नमः
 ॐ सुरुचये नमः
 ॐ हुतभुजे नमः
 ॐ विभवे नमः ८८०
 ॐ रवये नमः
 ॐ विरोचनाय नमः
 ॐ सूर्याय नमः
 ॐ सवित्रे नमः
 ॐ रविलोचनाय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ हुतभुजे नमः

ॐ भोक्त्रे नमः
 ॐ सुखदाय नमः
 ॐ नैकजाय नमः ८९०
 ॐ अग्रजाय नमः
 ॐ अनिर्विण्णाय नमः
 ॐ सदामर्षिणे नमः
 ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः
 ॐ अद्भुताय नमः
 ॐ सनाते नमः
 ॐ सनातनतमाय नमः
 ॐ कपिलाय नमः
 ॐ कपये नमः
 ॐ अव्ययाय नमः ९००
 ॐ स्वस्तिदाय नमः
 ॐ स्वस्तिकृते नमः
 ॐ स्वस्तये नमः
 ॐ स्वस्तिभुजे नमः
 ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः
 ॐ अरौद्राय नमः
 ॐ कुण्डलिने नमः
 ॐ चक्रिणे नमः
 ॐ विक्रमिणे नमः
 ॐ ऊर्जितशासनाय नमः ९१०
 ॐ शब्दातिगाय नमः
 ॐ शब्दसहाय नमः
 ॐ शिशिराय नमः
 ॐ शर्वरीकराय नमः

ॐ अक्रूराय नमः
 ॐ पेशलाय नमः
 ॐ दक्षाय नमः
 ॐ दक्षिणाय नमः
 ॐ क्षमिणां वराय नमः
 ॐ विद्वत्तमाय नमः १२०
 ॐ वीतभयाय नमः
 ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः
 ॐ उत्तारणाय नमः
 ॐ दुष्कृतिघ्ने नमः
 ॐ पुण्याय नमः
 ॐ दुस्स्वप्ननाशनाय नमः
 ॐ वीरघ्ने नमः
 ॐ रक्षणाय नमः
 ॐ सद्भ्यो नमः
 ॐ जीवनाय नमः १३०
 ॐ पर्यवस्थिताय नमः
 ॐ अनन्तरूपाय नमः
 ॐ अनन्तश्रिये नमः
 ॐ जितमन्यवे नमः
 ॐ भयापहाय नमः
 ॐ चतुरश्राय नमः
 ॐ गभीरात्मने नमः
 ॐ विदिशाय नमः
 ॐ व्यादिशाय नमः
 ॐ दिशाय नमः १४०
 ॐ अनादये नमः

ॐ भुवो भुवे नमः
 ॐ लक्ष्म्यै नमः
 ॐ सुवीराय नमः
 ॐ रुचिराङ्गदाय नमः
 ॐ जननाय नमः
 ॐ जनजन्मादये नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ भीमपराक्रमाय नमः
 ॐ आधारनिलयाय नमः १५०
 ॐ अधात्रे नमः
 ॐ पुष्पहासाय नमः
 ॐ प्रजागराय नमः
 ॐ ऊर्ध्वगाय नमः
 ॐ सत्पथाचाराय नमः
 ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ प्रणवाय नमः
 ॐ पणाय नमः
 ॐ प्रमाणाय नमः
 ॐ प्राणनिलयाय नमः १६०
 ॐ प्राणभृते नमः
 ॐ प्राणजीवनाय नमः
 ॐ तत्त्वाय नमः
 ॐ तत्त्वविदे नमः
 ॐ एकात्मने नमः
 ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नमः
 ॐ भूर्भुवस्स्वस्तरवे नमः
 ॐ ताराय नमः

ॐ सवित्रे नमः
 ॐ प्रपितामहाय नमः १७०
 ॐ यज्ञाय नमः
 ॐ यज्ञपतये नमः
 ॐ यज्वने नमः
 ॐ यज्ञाङ्गाय नमः
 ॐ यज्ञवाहनाय नमः
 ॐ यज्ञभृते नमः
 ॐ यज्ञकृते नमः
 ॐ यज्ञिने नमः
 ॐ यज्ञभुजे नमः
 ॐ यज्ञसाधनाय नमः १८०
 ॐ यज्ञान्तकृते नमः
 ॐ यज्ञगुह्याय नमः
 ॐ अन्नाय नमः
 ॐ अन्नादाय नमः

ॐ आत्मयोनये नमः
 ॐ स्वयञ्जाताय नमः
 ॐ वैखानाय नमः
 ॐ सामगायनाय नमः
 ॐ देवकीनन्दनाय नमः
 ॐ स्रष्ट्रे नमः १९०
 ॐ क्षितीशाय नमः
 ॐ पापनाशनाय नमः
 ॐ शङ्खभृते नमः
 ॐ नन्दकिने नमः
 ॐ चक्रिणे नमः
 ॐ शार्ङ्गधन्वने नमः
 ॐ गदाधराय नमः
 ॐ रथाङ्गपाणये नमः
 ॐ अक्षोभ्याय नमः
 ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः १०००

॥ श्री कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ श्रीकृष्णाय नमः
 ॐ कमलानाथाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ सनातनाय नमः
 ॐ वसुदेवात्मजाय नमः
 ॐ पुण्याय नमः
 ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः
 ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः

ॐ यशोदावत्सलाय नमः
 ॐ हरये नमः १०
 ॐ चतुर्भुजात्तचक्रासि-
 गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः
 ॐ देवकीनन्दनाय नमः
 ॐ श्रीशाय नमः
 ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः
 ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः

ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः
 ॐ पूतनाजीवितहराय नमः
 ॐ शकटासुरभञ्जनाय नमः
 ॐ नन्दव्रजजनानन्दिने नमः
 ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः २०
 ॐ नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः
 ॐ नवनीतनटाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ नवनीतनवाहाराय नमः
 ॐ मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः
 ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः
 ॐ त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः
 ॐ शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः
 ॐ गोविन्दाय नमः
 ॐ योगिनां पतये नमः ३०
 ॐ वत्सवाटचराय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ धेनुकासुरमर्दनाय नमः
 ॐ तृणीकृततृणावर्ताय नमः
 ॐ यमलार्जुनभञ्जनाय नमः
 ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः
 ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः
 ॐ गोपगोपीश्वराय नमः
 ॐ योगिने नमः
 ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः ४०
 ॐ इलापतये नमः
 ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः

ॐ यादवेन्द्राय नमः
 ॐ यदूद्वहाय नमः
 ॐ वनमालिने नमः
 ॐ पीतवाससे नमः
 ॐ पारिजातापहारकाय नमः
 ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
 ॐ गोपालाय नमः
 ॐ सर्वपालकाय नमः ५०
 ॐ अजाय नमः
 ॐ निरञ्जनाय नमः
 ॐ कामजनकाय नमः
 ॐ कञ्जलोचनाय नमः
 ॐ मधुघ्ने नमः
 ॐ मथुरानाथाय नमः
 ॐ द्वारकानायकाय नमः
 ॐ बलिने नमः
 ॐ वृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः
 ॐ तुलसीदामभूषणाय नमः ६०
 ॐ स्यमन्तकमर्णहर्त्रे नमः
 ॐ नरनारायणात्मकाय नमः
 ॐ कुब्जाकृष्णाम्बरधराय नमः
 ॐ मायिने नमः
 ॐ परमपुरुषाय नमः
 ॐ
 मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदाय
 नमः
 ॐ संसारवैरिणे नमः

ॐ कंसारये नमः
 ॐ मुरारये नमः
 ॐ नरकान्तकाय नमः ७०
 ॐ अनादिब्रह्मचारिणे नमः
 ॐ कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः
 ॐ शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः
 ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नमः
 ॐ विदुराक्रूरवरदाय नमः
 ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः
 ॐ सत्यवाचे नमः
 ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः
 ॐ सत्यभामारताय नमः
 ॐ जयिने नमः ८०
 ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ जगन्नाथाय नमः
 ॐ वेणुनादविशारदाय नमः
 ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नमः
 ॐ बाणासुरकरान्तकाय नमः
 ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः

ॐ बर्हिबर्हावतंसकाय नमः ९०
 ॐ पार्थसारथये नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ गीतामृतमहोदधये नमः
 ॐ कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्री-
 पदाम्बुजाय नमः
 ॐ दामोदराय नमः
 ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः
 ॐ दानवेन्द्रविनाशकाय नमः
 ॐ नारायणाय नमः
 ॐ परब्रह्मणे नमः
 ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः १००
 ॐ जलक्रीडासमासक्तगोपी-
 वस्त्रापहारकाय नमः
 ॐ पुण्यश्लोकाय नमः
 ॐ तीर्थपादाय नमः
 ॐ वेदवेद्याय नमः
 ॐ दयानिधये नमः
 ॐ सर्वतीर्थात्मकाय नमः
 ॐ सर्वग्रहरूपिणे नमः
 ॐ परात्पराय नमः १०८

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कृतिधा व्यकल्पयन्।
 मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उदीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पशूँश्च मह्यमावह जीवनं च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा।

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्रीभूमिनीलासमेत महाविष्णवे नमः () निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाः अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। अदित्यवर्णं तमसस्तु पुरे।

सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं
कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धा॒ता पु॒रस्ता॒द्यमु॒दाज॒हारं। श॒क्रः प्रवि॒द्वान् प्रदि॒शश्च॑त॒स्रः।
तमे॒वं वि॒द्वान॒मृतं॑ इ॒ह भ॑वति। नान्यः पन्था॒ अर्य॑नाय विद्यते॥

यो॑ऽपां पु॒ष्पं वेद॑। पु॒ष्पवान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति।
च॒न्द्रमा॒ वा अ॒पां पु॒ष्पम्। पु॒ष्पवान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति।
य ए॒वं वेद॑। यो॑ऽपामा॒यत॑नं वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति।

ओं तद्ब्र॒ह्म। ओं तद्वा॒युः। ओं तदा॒त्मा।
ओं तथ्स॒त्यम्। ओं तथ्सर्व॑म्। ओं तत्पु॒रोर्नमः॑॥

अन्तश्चरति॑ भू॒तेषु॒ गुहा॑यां वि॒श्वमूर्ति॑षु।
त्वं यज्ञ॑स्त्वं वष॒ट्कार॑स्त्वमिन्द्र॒स्त्व॑
रुद्र॑स्त्वं विष्णु॒स्त्वं ब्र॒ह्म त्वं प्र॒जाप॑तिः।
त्वं तंदा॒प॒ आपो॒ ज्योती॒ रसो॒ऽमृतं॑ ब्र॒ह्म भूर्भुवः॑ सुव॒रोम्॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्ण॑रजतैर्युक्तं चा॒मीकर॑विनिर्मितम्।
स्वर्ण॑पुष्पं प्रदा॒स्यामि॑ गृह्य॒तां मधु॑सूदन॥
स्वर्ण॑पुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं॑ करोम्यद्य पा॒पानि॑ नुत माधव।
मया॑र्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि॑ कानि च पा॒पानि॑ जन्मान्तरकृतानि च।
तानि॑ तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥
अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॑ धर्मा॒णि प्रथ॑मान्या॒सन्।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानं॑ सचन्ते। यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥
- छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् एकादशीपुण्यकाले
महाविष्णुपूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

एकादश्यामुपोष्यैव पारणात् पूर्वकालतः।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण सुरवन्दित॥
महाविष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

नमोऽस्तु केशवादिभ्यः सर्वलोकैकवन्दिताः।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो भव सर्वदा॥
केशवादिभ्यः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

कर्मरूपाय देवाय मत्स्यरूप नमोऽस्तुते।।
नीलमेघस्वरूपाय अर्घ्यं दत्तं मया प्रभो॥
विष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

क्षीरोद्भवे महालक्ष्मि सुप्रसन्ने सुरेश्वरि।
सर्वप्रदे जगद्वन्द्ये गृहीदार्घ्यमिदं रमे॥॥

महालक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।
 अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
 श्री लक्ष्मीनारायणः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
 अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
 एकादशीपुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
 महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं
 श्रीभूमिनीलासमेत श्री महाविष्णुप्रीतिं कामयमानः
 मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
 अनया पूजया श्रीभूमिनीलासमेतः श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
 न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
 न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्रीभूमिनीलासमेतश्रीमहाविष्णुं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
 (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्)।
 अनया पूजया श्रीभूमिनीलासमेतः श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥
इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।

॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम् ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य व्रतेनानेन केशव।
प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



॥ श्रीरामनवमी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

१८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
 अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 प्रार्थनाः समर्पयामि।
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा - श्रीराम-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
 अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
 शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
 () नाम संवत्सरे उत्तरायणे वसन्त-ऋतौ (मेष/मीन) मासे शुक्लपक्षे
 नवम्यां शुभतिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु /स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम्
 (आर्द्रा/पुनर्वसू/पुष्य) नक्षत्रयुक्तायां ()-योग ()-करण-युक्तायां च एवं गुण-
 विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् नवम्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
 क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-
 चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम
 इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-

पातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं श्रीरामनवमीपुण्यकाले कल्पोक्तप्रकारेण यथाशक्ति श्रीरामचन्द्रपूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः, ॐ यमुनायै नमः, ॐ गोदावर्यै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः,
ॐ नर्मदायै नमः, ॐ सिन्धवे नमः, ॐ कावेर्यै नमः,
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा भू॒तान्यापः प्रा॒णा वा आपः प॒शव॑
आपोऽन्न॒मापोऽमृत॑मापः स॒म्राडापो॑ वि॒राडापः स्व॒राडाप॑श्छन्दा॒स्यापो॑
ज्योती॒ष्यापो॑ यजू॒ष्यापः स॒त्यमापः सर्वा॑ दे॒वता॒ आपो॑ भूर्भुव॒स्सुव॒राप॑
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः॥

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
 गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
 नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ५. ॐ अनन्ताय नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ६. ॐ पृथिव्यै नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
 मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
 अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
 शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादि कोणेषु च।
 सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
 मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं ध्यायामि।

(अथ प्राणप्रतिष्ठा)

आवाहयामि विश्वेशं वैदेहीवल्लभं विभुम्।

कौसल्यातनयं रामं पूर्णचन्द्रनिभाननम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रम्
 आवाहयामि।

रत्नसिंहासनारूढ सर्वभूपालवन्दित।

आसनं ते मया दत्तं प्रीतिं जनयतु प्रभो॥ - आसनं समर्पयामि।

पादाङ्गुष्ठसमुद्भूतगङ्गापावितविष्टप।

पादार्थमुदकं राम ददामि परिगृह्यताम्॥ - पाद्यं समर्पयामि।

वालखिल्यादिभिर्विप्रैस्त्रिसन्ध्यं प्रयतात्मभिः।
अर्घ्यैराराधित विभो ममार्घ्यं राम गृह्यताम्॥ - अर्घ्यं समर्पयामि।

आचान्ताम्भोधिना राम मुनिना परिसेवित।
मया दत्तेन तोयेन कुर्वाचमनमीश्वर॥ - आचमनीयं समर्पयामि।

मधुदध्याज्यसंयुक्तं मधुसुदन राघव।
मधुपर्कं मया दत्तं गृहाण रघुनायक॥ - मधुपर्कं समर्पयामि।

कामधेनु-समुद्भूतक्षीरेणेन्द्रेण राघव।
अभिषिक्ताखिलार्थास्त्यै स्नाहि मदत्तदुग्धतः॥ - क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

हनूमता मधुवनोद्भूतेन मधुना प्रभो।
प्रीत्याऽभिषेचिततनो मधुना स्नाहि मेऽद्य भोः॥ - मध्वभिषेकं समर्पयामि।

त्रैलोक्यतापहरणनामकीर्तन राघव।
मधूत्थतापशान्त्यर्थं स्नाहि क्षीरेण वै पुनः॥ - मध्वभिषेकान्ते पुनः क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

नदीनदसमुद्रादितोयैर्मन्त्राभिसंस्कृतैः।
पट्टाभिषिक्त राजेन्द्र स्नाहि शुद्धजलेन मे॥ - शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

हित्वा पीताम्बरं चीरकृष्णाजिनधराच्युत।
परिधत्स्वाद्य मे वस्त्रं स्वर्णसूत्रविनिर्मितम्॥ - वस्त्रं समर्पयामि।

राजर्षिवंशतिलक रामचन्द्र नमोऽस्तु ते।
यज्ञोपवीतं विधिना निर्मितं धत्स्व मे प्रभो॥ - उपवीतं समर्पयामि।

किरीटादीनि राजेन्द्र हंसकान्तानि राघव।
विभूषणानि धृत्वाऽद्य शोभस्व सह सीतया॥ - आभरणम् समर्पयामि।

सन्ध्यासमानरुचिना नीलाभ्रसमविग्रह।
लिम्पाभि तेऽङ्गकं राम चन्दनेन मुदा हृदि॥ - गन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतान् कुङ्कुमोन्मिश्रानक्षय्यफलदायक।
अर्पये तव पादाब्जे शालितण्डुलसम्भवान्॥ - अक्षतान् समर्पयामि।

चम्पकाशोकपुत्रागैर्जलजैस्तुलस्सीदलैः।
पूजयामि रघूत्तंस पूज्यं त्वां सनकादिभिः॥ - पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ अङ्गगुणपूजा ॥

| | |
|-------------------------------|-----------------------|
| ॐ अहल्योद्धारकाय नमः | श्रीरामपादरजः पूजयामि |
| ॐ शरणागतरक्षकाय नमः | पादकान्तिं पूजयामि |
| ॐ गङ्गानदीप्रवर्तनपराय नमः | पादनखान् पूजयामि |
| ॐ सीतासंवाहितपदाय नमः | पादतलं पूजयामि |
| ॐ विनतकल्पद्रुमाय नमः | गुल्फौ पूजयामि |
| ॐ दुन्दुभिकायविक्षेपकाय नमः | पादाङ्गुष्ठं पूजयामि |
| ॐ दण्डकारण्य-गमन-जङ्घालाय नमः | जङ्घे पूजयामि |
| ॐ जानुन्यस्तकराम्बुजाय नमः | जानुनी पूजयामि |

| | |
|-----------------------------------|-----------------------------|
| ॐ वीरासनाध्यासिने नमः | ऊरू पूजयामि |
| ॐ पीताम्बरालङ्कृताय नमः | कटिं पूजयामि |
| ॐ आकाशमध्यगाय नमः | मध्यं पूजयामि |
| ॐ अरिनिग्रहपराय नमः | कटिलम्बितमासं पूजयामि |
| ॐ अब्धिमेखलापतये नमः | मध्यलम्बितमेखलादामं पूजयामि |
| ॐ उदरस्थितब्रह्माण्डाय नमः | उदरं पूजयामि |
| ॐ जगत्रयगुरवे नमः | वलित्रयं पूजयामि |
| ॐ सीतानुलेपित-काश्मीर-चन्दनाय नमः | वक्षः पूजयामि |
| ॐ अभयप्रदानशौण्डाय नमः | दक्षिणबाहुदण्डं पूजयामि |
| ॐ वितरणजितकल्पद्रुमाय नमः | दक्षिणकरतलं पूजयामि |
| ॐ आशरनिरसनपराय नमः | दक्षिणकरस्थितशरं पूजयामि |
| ॐ ज्ञानविज्ञानभासकाय नमः | चिन्मुद्रां पूजयामि |
| ॐ मुनिसङ्घार्पितदिव्यपदाय नमः | वामभुजदण्डं पूजयामि |
| ॐ दशाननकालरूपिणे नमः | वामहस्तस्थितकोदण्डं पूजयामि |
| ॐ शतमखदत्तशतपुष्करस्रजे नमः | अंसौ पूजयामि |
| ॐ कृत्तदशाननकिरीटकूटाय नमः | अंसलम्बिनिषङ्गद्वयं पूजयामि |
| ॐ सीताबाहुलतालङ्गिताय नमः | कण्ठं पूजयामि |
| ॐ स्मितभाषिणे नमः | स्मितं पूजयामि |
| ॐ नित्यप्रसन्नाय नमः | मुखप्रसादं पूजयामि |
| ॐ सत्यवाचे नमः | वाचं पूजयामि |
| ॐ कपालिपूजिताय नमः | कपोलौ पूजयामि |

| | |
|--|---|
| ॐ चक्षुश्रवः प्रभुपूजिताय नमः | श्रवसी पूजयामि |
| ॐ अनासादितपापगन्धाय नमः | घ्राणं पूजयामि |
| ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः | अक्षिणी पूजयामि |
| ॐ अपाङ्गस्यन्दिकरुणाय नमः | अरुणापाङ्गद्वयं पूजयामि |
| ॐ विनाकृतरुषे नमः | अनाथ-रक्षक-कटाक्षं पूजयामि |
| ॐ कस्तूरीतिलकाङ्किताय नमः | फालं पूजयामि |
| ॐ राजाधिराजवेषाय नमः | किरीटं पूजयामि |
| ॐ मुनिमण्डलपूजिताय नमः | जटामण्डलं पूजयामि |
| ॐ मोहितमुनिजनाय नमः | पुंसां मोहनं रूपं पूजयामि |
| ॐ जानकीव्यजनवीजिताय नमः | विद्युद्विद्योतितकालाभ्रसदृशकान्तिं पूजयामि |
| ॐ हनुमदर्पितचूडामणये नमः | करुणारसोद्वेलितकटाक्षधारां पूजयामि |
| ॐ सुमन्त्रानुग्रहपराय नमः | तेजोमयरूपं पूजयामि |
| ॐ कम्पिताम्भोधये नमः | आहार्यकोपं पूजयामि |
| ॐ तिरस्कृतलङ्केश्वराय नमः | धये पूजयामि |
| ॐ दूराद्वन्दितजनकाय नमः | विनयं पूजयामि |
| ॐ सम्मानितत्रिजटाय नमः | अतिमानुषसौलभ्यं पूजयामि |
| ॐ गन्धर्वराजप्रतिमाय नमः | लोकोत्तरसौन्दर्यं पूजयामि |
| ॐ असहाय-हत-खर-दूषणादि-चतुर्दश-सहस्र-राक्षसाय नमः | पराक्रमं पूजयामि |

| | | |
|-----------------------------|----------------------------------|--------|
| ॐ आलिङ्गिताञ्जनेयाय नमः | भक्तवात्सल्यं पूजयामि | |
| ॐ लब्धराज्यपरित्यक्त्रे नमः | धर्मं पूजयामि | |
| ॐ दर्भशायिने नमः | लोकानुवर्तनं पूजयामि | |
| ॐ सर्वेश्वराय नमः | सर्वाण्यङ्गानि सर्वांश्च पूजयामि | गुणान् |

॥ रामाष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

| | | |
|--------------------------|-----------------------------|----|
| ॐ श्रीरामाय नमः | ॐ सत्यव्रताय नमः | २० |
| ॐ रामभद्राय नमः | ॐ व्रतधराय नमः | |
| ॐ रामचन्द्राय नमः | ॐ सदा हनुमदाश्रिताय नमः | |
| ॐ शाश्वताय नमः | ॐ कौसलेयाय नमः | |
| ॐ राजीवलोचनाय नमः | ॐ खरध्वंसिने नमः | |
| ॐ श्रीमते नमः | ॐ विराधवधपण्डिताय नमः | |
| ॐ राजेन्द्राय नमः | ॐ विभीषणपरित्रात्रे नमः | |
| ॐ रघुपुङ्गवाय नमः | ॐ हरकोदण्डखण्डनाय नमः | |
| ॐ जानकीवल्लभाय नमः | ॐ सप्ततालप्रभेत्रे नमः | |
| ॐ जैत्राय नमः | ॐ दशग्रीवशिरोहराय नमः | १० |
| ॐ जितामित्राय नमः | ॐ जामदग्न्यमहादर्पदलनाय नमः | |
| ॐ जनार्दनाय नमः | ३० | |
| ॐ विश्वामित्रप्रियाय नमः | ॐ ताटकान्तकाय नमः | |
| ॐ दान्ताय नमः | ॐ वेदान्तसाराय नमः | |
| ॐ शरणत्राणतत्पराय नमः | ॐ वेदात्मने नमः | |
| ॐ वालिप्रमथनाय नमः | ॐ भवरोगस्य भेषजाय नमः | |
| ॐ वाग्मिने नमः | ॐ दूषणत्रिशिरोहन्त्रे नमः | |
| ॐ सत्यवाचे नमः | ॐ त्रिमूर्तये नमः | |
| ॐ सत्यविक्रमाय नमः | ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः | |

| | | | |
|----------------------------|----|-----------------------------|----|
| ॐ त्रिविक्रमाय नमः | | ॐ महोदाराय नमः | |
| ॐ त्रिलोकात्मने नमः | | ॐ सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः | |
| ॐ पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः | ४० | ॐ सर्वपुण्याधिकफलाय नमः | |
| ॐ त्रिलोकरक्षकाय नमः | | ॐ स्मृतसर्वाघनाशनाय नमः | |
| ॐ धन्विने नमः | | ॐ अनादये नमः | |
| ॐ दण्डकारण्यकर्तनाय नमः | | ॐ आदिपुरुषाय नमः | ७० |
| ॐ अहल्याशापशमनाय नमः | | ॐ महापूरुषाय नमः | |
| ॐ पितृभक्ताय नमः | | ॐ पुण्योदयाय नमः | |
| ॐ वरप्रदाय नमः | | ॐ दयासाराय नमः | |
| ॐ जितेन्द्रियाय नमः | | ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः | |
| ॐ जितक्रोधाय नमः | | ॐ स्मितवक्त्राय नमः | |
| ॐ जितामित्राय नमः | | ॐ मितभाषिणे नमः | |
| ॐ जगद्गुरवे नमः | ५० | ॐ पूर्वभाषिणे नमः | |
| ॐ ऋक्षवानरसङ्घातिने नमः | | ॐ राघवाय नमः | |
| ॐ चित्रकूटसमाश्रयाय नमः | | ॐ अनन्तगुणगम्भीराय नमः | |
| ॐ जयन्तत्राणवरदाय नमः | | ॐ धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः | ८० |
| ॐ सुमित्रापुत्रसेविताय नमः | | ॐ मायामानुषचारित्राय नमः | |
| ॐ सर्वदेवादिदेवाय नमः | | ॐ महादेवादिपूजिताय नमः | |
| ॐ मृतवानरजीवनाय नमः | | ॐ सेतुकृते नमः | |
| ॐ मायामारीचहन्त्रे नमः | | ॐ जितवारीशाय नमः | |
| ॐ महादेवाय नमः | | ॐ सर्वतीर्थमयाय नमः | |
| ॐ महाभुजाय नमः | | ॐ हरये नमः | |
| ॐ सर्वदेवस्तुताय नमः | ६० | ॐ श्यामाङ्गाय नमः | |
| ॐ सौम्याय नमः | | ॐ सुन्दराय नमः | |
| ॐ ब्रह्मण्याय नमः | | ॐ शूराय नमः | |
| ॐ मुनिसंस्तुताय नमः | | ॐ पीतवाससे नमः | ९० |
| ॐ महायोगाय नमः | | ॐ धनुर्धराय नमः | |

| | |
|-----------------------------|----------------------|
| ॐ सर्वयज्ञाधिपाय नमः | ॐ परस्मै धाम्ने नमः |
| ॐ यज्विने नमः | ॐ पराकाशाय नमः |
| ॐ जरामरणवर्जिताय नमः | ॐ परात्पराय नमः |
| ॐ शिवलिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः | ॐ परेशाय नमः |
| ॐ सर्वापगुणवर्जिताय नमः | ॐ पारगाय नमः |
| ॐ परमात्मने नमः | ॐ पाराय नमः |
| ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः | ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः |
| ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः | ॐ पराय नमः |
| ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः | १०० |

॥ इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्री-रामाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ सीताष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | |
|-----------------------------|----------------------|----|
| ॐ श्रीसीतायै नमः | ॐ पद्माक्षजायै नमः | |
| ॐ जानक्यै नमः | ॐ कञ्जनेत्रायै नमः | |
| ॐ देव्यै नमः | ॐ स्मितास्यायै नमः | |
| ॐ वैदेह्यै नमः | ॐ नूपुरस्वनायै नमः | |
| ॐ राघवप्रियायै नमः | ॐ वैकुण्ठनिलयायै नमः | |
| ॐ रमायै नमः | ॐ मायै नमः | |
| ॐ अवनिसुतायै नमः | ॐ श्रियै नमः | २० |
| ॐ रामायै नमः | ॐ मुक्तिदायै नमः | |
| ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै नमः | ॐ कामपूरण्यै नमः | |
| ॐ रत्नगुप्तायै नमः | ॐ नृपात्मजायै नमः | १० |
| ॐ मातुलुङ्ग्यै नमः | ॐ हेमवर्णायै नमः | |
| ॐ मैथिल्यै नमः | ॐ मृदुलाङ्ग्यै नमः | |
| ॐ भक्ततोषदायै नमः | ॐ सुभाषिण्यै नमः | |

ॐ कुशाम्बिकायै नमः
 ॐ दिव्यदायै नमः
 ॐ लवमात्रे नमः
 ॐ मनोहरायै नमः ३०
 ॐ हनुमद्वन्दितपदायै नमः
 ॐ मुग्धायै नमः
 ॐ केयूरधारिण्यै नमः
 ॐ अशोकवनमध्यस्थायै नमः
 ॐ रावणादिकमोहिन्यै नमः
 ॐ विमानसंस्थितायै नमः
 ॐ सुभ्रुवे नमः
 ॐ सुकेश्यै नमः
 ॐ रशान्वितायै नमः
 ॐ रजोरूपायै नमः ४०
 ॐ सत्त्वरूपायै नमः
 ॐ तामस्यै नमः
 ॐ वह्निवासिन्यै नमः
 ॐ हेममृगासक्तचित्तायै नमः
 ॐ वाल्मीक्याश्रमवासिन्यै नमः
 ॐ पतिव्रतायै नमः
 ॐ महामायायै नमः
 ॐ पीतकौशेयवासिन्यै नमः
 ॐ मृगनेत्रायै नमः
 ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः ५०
 ॐ धनुर्विद्याविशारदायै नमः
 ॐ सौम्यरूपायै नमः
 ॐ दशरथसुपायै नमः

ॐ चामरवीजितायै नमः
 ॐ सुमेधादुहित्रे नमः
 ॐ दिव्यरूपायै नमः
 ॐ त्रैलोक्यपालिन्यै नमः
 ॐ अन्नपूर्णायै नमः
 ॐ महालक्ष्म्यै नमः ६०
 ॐ धियै नमः
 ॐ लज्जायै नमः
 ॐ सरस्वत्यै नमः
 ॐ शान्त्यै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ क्षमायै नमः
 ॐ गौर्यै नमः
 ॐ प्रभायै नमः
 ॐ अयोध्यानिवासिन्यै नमः
 ॐ वसन्तशीतलायै नमः
 ॐ गौर्यै नमः ७०
 ॐ स्नानसन्तुष्टमानसायै नमः
 ॐ रमानामभद्रसंस्थायै नमः
 ॐ हेमकुम्भपयोधरायै नमः
 ॐ सुरार्चितायै नमः
 ॐ धृत्यै नमः
 ॐ कान्त्यै नमः
 ॐ स्मृत्यै नमः
 ॐ मेधायै नमः
 ॐ विभावर्यै नमः
 ॐ लघूदरायै नमः ८०

| | | |
|---------------------------------|------------------------------|-----|
| ॐ वरारोहायै नमः | ॐ रम्भोरुवे नमः | |
| ॐ हेमकङ्कणमण्डितायै नमः | ॐ गजगामिन्यै नमः | |
| ॐ द्विजपत्न्यर्पितनिजभूषायै नमः | ॐ रामार्पितमनायै नमः | |
| ॐ राघवतोषिण्यै नमः | ॐ रामवन्दितायै नमः | १०० |
| ॐ श्रीरामसेवानिरतायै नमः | ॐ रामवल्लभायै नमः | |
| ॐ रत्नताटङ्कधारिण्यै नमः | ॐ श्रीरामपदचिह्नाङ्गायै नमः | |
| ॐ रामवामाङ्गसंस्थायै नमः | ॐ रामरामेतिभाषिण्यै नमः | |
| ॐ रामचन्द्रैकरञ्जन्यै नमः | ॐ रामपर्यङ्कशयनायै नमः | |
| ॐ सरयूजलसङ्कीडाकारिण्यै नमः | ॐ रामाङ्घ्रिक्षालिन्यै नमः | |
| ॐ राममोहिन्यै नमः | ॐ वरायै नमः | १० |
| ॐ सुवर्णतुलितायै नमः | ॐ कामधेन्वन्नसन्तुष्टायै नमः | |
| ॐ पुण्यायै नमः | ॐ मातुलुङ्गकरे धृतायै नमः | |
| ॐ पुण्यकीर्त्यै नमः | ॐ दिव्यचन्दनसंस्थायै नमः | |
| ॐ कलावत्यै नमः | ॐ श्रियै नमः | ११० |
| ॐ कलकण्ठायै नमः | ॐ मूलकासुरमर्दिन्यै नमः | |
| ॐ कम्बुकण्ठायै नमः | | |

॥ इति श्री आनन्दरामायणे श्री सीताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | |
|-------------------------------|--------------------------|----|
| ॐ आञ्जनेयाय नमः | ॐ अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः | |
| ॐ महावीराय नमः | ॐ सर्वमायाविभञ्जनाय नमः | |
| ॐ हनूमते नमः | ॐ सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः | |
| ॐ मारुतात्मजाय नमः | ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः | १० |
| ॐ तत्त्वज्ञानप्रदाय नमः | ॐ परविद्यापरीहर्त्रे नमः | |
| ॐ सीतादेवीमुद्राप्रदायकाय नमः | ॐ परशौर्यविनाशनाय नमः | |

ॐ परमन्ननिराकर्त्रे नमः
 ॐ परयन्नप्रभेदकाय नमः
 ॐ सर्वग्रहविनाशिने नमः
 ॐ भीमसेनसहायकृते नमः
 ॐ सर्वदुःखहराय नमः
 ॐ सर्वलोकचारिणे नमः
 ॐ मनोजवाय नमः
 ॐ पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः २०
 ॐ सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः
 ॐ सर्वतन्त्रस्वरूपिणे नमः
 ॐ सर्वयन्त्रात्मकाय नमः
 ॐ कपीश्वराय नमः
 ॐ महाकायाय नमः
 ॐ सर्वरोगहराय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ बलसिद्धिकराय नमः
 ॐ सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः
 ॐ कपिसेनानायाय नमः ३०
 ॐ भविष्यच्चतुराननाय नमः
 ॐ कुमारब्रह्मचारिणे नमः
 ॐ रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः
 ॐ चञ्चलद्वालसन्नद्ध-
 लम्बमानशिखोज्ज्वलाय नमः
 ॐ गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः
 ॐ महाबलपराक्रमाय नमः
 ॐ कारागृहविमोक्त्रे नमः
 ॐ शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः

ॐ सागरोत्तारकाय नमः
 ॐ प्राज्ञाय नमः ४०
 ॐ रामदूताय नमः
 ॐ प्रतापवते नमः
 ॐ वानराय नमः
 ॐ केसरीसुताय नमः
 ॐ सीताशोकनिवारणाय नमः
 ॐ अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः
 ॐ बालार्कसदृशाननाय नमः
 ॐ विभीषणप्रियकराय नमः
 ॐ दशग्रीवकुलान्तकाय नमः
 ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः ५०
 ॐ वज्रकायाय नमः
 ॐ महाद्युतये नमः
 ॐ चिरञ्जीविने नमः
 ॐ रामभक्ताय नमः
 ॐ दैत्यकार्यविघातकाय नमः
 ॐ अक्षहन्त्रे नमः
 ॐ काञ्चनाभाय नमः
 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॐ महातपसे नमः
 ॐ लङ्किणीभञ्जनाय नमः ६०
 ॐ श्रीमते नमः
 ॐ सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः
 ॐ गन्धमादनशैलस्थाय नमः
 ॐ लङ्कापुरविदाहकाय नमः
 ॐ सुग्रीवसचिवाय नमः

| | | |
|----------------------------|-----------------------------|-----|
| ॐ धीराय नमः | ॐ वाग्मिने नमः | |
| ॐ शूराय नमः | ॐ दृढव्रताय नमः | |
| ॐ दैत्यकुलान्तकाय नमः | ॐ कालनेमिप्रमथनाय नमः | १० |
| ॐ सुरार्चिताय नमः | ॐ हरिमर्कटमर्कटाय नमः | |
| ॐ महातेजसे नमः | ॐ दान्ताय नमः | ७० |
| ॐ रामचूडामणिप्रदाय नमः | ॐ शान्ताय नमः | |
| ॐ कामरूपिणे नमः | ॐ प्रसन्नात्मने नमः | |
| ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः | ॐ शतकण्ठमदापहृते नमः | |
| ॐ वर्धिमैनाकपूजिताय नमः | ॐ योगिने नमः | |
| ॐ | ॐ रामकथालोलाय नमः | |
| कबलीकृतमार्तण्डमण्डलाय नमः | ॐ सीतान्वेषणपण्डिताय नमः | |
| ॐ विजितेन्द्रियाय नमः | ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः | |
| ॐ रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः | ॐ वज्रनखाय नमः | १०० |
| ॐ महिरावणमर्दनाय नमः | ॐ रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः | |
| ॐ स्फटिकाभाय नमः | ॐ इन्द्रजित्प्रहितामोघ- | |
| ॐ वागधीशाय नमः | ब्रह्मास्त्रविनिवारकाय नमः | ८० |
| ॐ नवव्याकृतिपण्डिताय नमः | ॐ पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः | |
| ॐ चतुर्बाहवे नमः | ॐ शरपञ्जरहेलकाय नमः | |
| ॐ दीनबन्धवे नमः | ॐ दशबाहवे नमः | |
| ॐ महात्मने नमः | ॐ लोकपूज्याय नमः | |
| ॐ भक्तवत्सलाय नमः | ॐ जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः | |
| ॐ सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः | ॐ सीतासमेतश्रीराम- | |
| ॐ शुचये नमः | पादसेवाधुरन्धराय नमः | |

॥इति श्री हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

वनस्पतिरसोद्भूतः सुगन्धः सुमनोहरः।
रामचन्द्र कृपाराशे धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
धूपमाग्रापयामि।

सूर्यवंशसुदीपस्त्वं साज्यवर्तिसमन्वितम्।
गृहाण मङ्गलं दीपं दीनबन्धो दयानिधे॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ओं भूर्भुवस्सुवः + ब्रह्मणे स्वाहा।

नैवेद्यं षड्विपेतं घृतसूपसमन्वितम्।
फलभक्ष्यसमायुक्तं गृह्यतां रघुपुङ्गव॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।
नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

ताम्बूलं च सकर्पूरं पूगीफलसमन्वितम्।
नागवल्लीदलैर्युक्तं गृह्यतां रघुनायक॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

विभीषणाय भक्ताय लङ्काराज्यप्रदायक।
नरिजनं गृहाणेदं मया भक्त्या समर्पितम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

कल्पवृक्षसमुद्भूतैः पुरुहूतादिभिः सुमैः।
पुष्पाञ्जलिं ददाम्यद्य पूजितायाशरद्विषे॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९

रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
वेदोक्तमन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

मन्दाकिनीसमुद्भूतकाञ्चनाञ्जस्रजा विभो।
सम्मानिताय शक्रेण स्वर्णपुष्पं ददामि ते॥

स्वर्णपुष्पम् समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि + प्रदक्षिणपदेपदे।
प्रकृष्टपापनाशाय + प्रसीद पुरुषोत्तम॥

चराचरं व्याप्नुवन्तमपि त्वां रघुनन्दन।
प्रदक्षिणं करोग्यद्य मदते मूर्तिसंयुतम्॥

(प्रदक्षिणम्)

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविशिष्टतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल-भवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यद्वादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

साङ्गोपाङ्गाय साराय जगतां सनकादिभिः।
वन्दिताय वरेण्याय राघवाय नमो नमः ॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे
नमस्काराः समर्पयामि।

नमः

॥ हनुमत्कृतं श्रीसीतारामस्तोत्रम् ॥

अयोध्यापुरनेतारं मिथिलापुरनायिकाम्।
इक्ष्वाकूणामलंकारं वैदेहानामलंक्रियाम्॥१॥

रघूणां कुलदीपं च निमीनां कुलदीपिकाम्।
सूर्यवंशसमुद्भूतं सोमवंशसमुद्भवाम्॥२॥

पुत्रं दशरथस्यापि पुत्रीं जनकभूपतेः।
वसिष्ठानुमताचारं शतानन्दमतानुगाम्॥३॥

कौसल्यागर्भसंभूतं वेदिगर्भोदितां स्वयम्।
कालमेघनिभं रामं कार्तस्वरविभूषिताम्॥४॥

चन्द्रकान्ताननाम्भोजं चन्द्रबिम्बोपमाननाम्।
पुण्डरीकविशालाक्षं स्फुरदिन्दीवरेक्षणम्॥५॥

मत्तमातङ्गगमनं मत्तसारसगामिनीम्।
तालीदलश्यामलाङ्गं तप्तचामीकरप्रभाम्॥६॥

चन्दनार्द्रभुजामध्यं कुङ्कुमाक्तभुजान्तराम्।
चापालंकृत हस्ताब्जं पद्मालंकृतपाणिकाम्॥७॥

शरणागतगोप्तारं प्रणिपातप्रसादिकाम्।
सर्वलोकविधातारं सर्वलोकविधायिनीम्॥८॥

लोकाभिरामं श्रीराममभिरामां च मैथिलीम्।
दिव्यसिंहासनारूढं दिव्यव्रग्वस्त्रभूषणाम्॥९॥

अनुक्षणं कटाक्षाभ्यामन्योन्येक्षणकाङ्क्षिणौ।
अन्योन्यसदृशावेतो त्रैलोक्यगृहदम्पती।
इमौ युवां प्रणम्याहं भजाम्यद्य कृतार्थताम्॥१०॥

अनया स्तोति यः स्तुत्या रामं सीतां च भक्तितः।
तस्य तो तनुतां प्रीतो संपदः सकला अपि॥११॥

इतीदं रामचन्द्रस्य जानक्याश्च विशेषतः।
कृतं हनुमता पुण्यं स्तोत्रं सद्योविमुक्तिदम्।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥१२॥

(इति स्तोत्रम्)

एकातपत्रच्छायायां शासिताशेषभूमिक।
मम छत्रमिदं रत्नजालकं राम गृह्यताम्॥

छत्रम् समर्पयामि।

रक्षोराजानुजाभ्यां ते कृतं चामरसेवया।
वीजयेऽहं कराभ्यां ते चामरद्वयमादरात्॥

चामरम् वीजयामि।

रामायणं साधु गीतं सुताभ्यां श्रुतवानसि।
मयाऽपि गीयमानं ते स्तोत्रं चित्ताय रोचताम्॥

गीतम् गायामि।

वीणावेणुमृदङ्गादिवाद्यैस्त्वां प्रीणयाम्यहम्।
मददम्भाहङ्कृतीनां नाशको भव राघव॥

वाद्यम् घोषयामि।

आरुह्य सीतया सार्धं दत्तामान्दोलिकां मया।
विभाहि भूषितो राम मत्कृते पूजनोत्सवे॥

आन्दोलिकां समर्पयामि।

मया कल्पितपल्याणं महान्तं मम घोटकम्।
मदंसे चरणं न्यस्य मुदाऽऽरोह रघूत्तम॥

अश्वान् आरोहयामि।

गजेन महताऽऽयान्तमाकांक्षन्ति स्म नागराः।
द्रष्टुं त्वां मगजे भाहि दृष्ट्वा नन्देयमप्यहम्॥

गजान् आरोहयामि।

समस्तराजोपचारदेवोपचारपूजाः समर्पयामि।

॥ प्रार्थना ॥

त्वमक्षरोऽसि भगवन् व्यक्ताव्यक्तस्वरूपधृत्।
यथा त्वं रावणं हत्वा यज्ञविघ्नकरं खलम्।
लोकान् रक्षितवान् राम तथा मन्मानसाश्रयम्॥१॥

रजस्तमश्च निर्हृत्य त्वत्पूजालस्यकारकम्।
सत्त्वमुद्रेकय विभो त्वत्पूजादरसिद्धये॥२॥

विभूतिं वर्धय गृहे पुत्रपौत्राभिवृद्धिकृत्।
कल्याणं कुरु मे नित्यं कैवल्यं दिश चान्ततः॥३॥

विधितोऽविधितो वाऽपि या पूजा क्रियते मया।
तां त्वं सन्तुष्टहृदयो यथावद्विहितामिव॥४॥

स्वीकृत्य परमेशान मात्रा मे सह सीतया।
लक्ष्मणादिभिरप्यत्र प्रसादं कुरु मे सदा॥५॥

मनसा वचसा कायेनागसां शतमन्वहम्।
धियाऽधिया च रचये क्षमस्व सहजक्षम॥६॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व पुरुषोत्तम॥७॥

॥ अर्घ्य-प्रदानम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त + प्रीत्यर्थम् अद्य पूर्वोक्त + शुभतिथौ श्रीरामचन्द्रपूजान्ते
अर्घ्यप्रदानं करिष्ये (इति सङ्कल्प्य)।

राम रात्रिश्चराराते क्षीरमध्वाज्यकल्पितम्।
पूजान्तेऽर्घ्यं मया दत्तं स्वीकृत्य वरदो भव॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्॥

अनेनार्घ्यप्रदानेन श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-रामनवमी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण श्रीरामपूजायां
यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-
हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय
सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं
यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ कथा ॥

अगस्त्य उवाच

रहस्यं कथयिष्यामि सूतीक्ष्ण मुनिसत्तम।
चैत्रे नवम्यां प्राक्पक्षे दिवापुण्ये पुनर्वसौ॥१॥

उदये गुरुगौरांशे स्वोच्चस्थे ग्रहपञ्चके।
मेष पूषणि सम्प्राप्ते लग्ने कर्कटकाह्वये॥२॥

आविरासीत्स कलया कौसल्यायां परः पुमान्।
तस्मिन्दिने तु कर्तव्यमुपवासव्रतं सदा॥३॥

तत्र जागरणं कुर्याद्रघुनाथपुरो भुवि।
प्रतिमायां यथाशक्ति पूजा कार्या यथाविधि॥४॥

प्रातर्दशम्यांस्नात्वैव कृत्वा सन्ध्यादिकाः क्रियाः।
सम्पूज्य विधिवद् रामं भक्त्या वित्तानुसारतः॥५॥

ब्राह्मणान् भोजयेत् सम्यक् दक्षिणाभिश्च तोषयेत्।
गोभूतिलहिरण्याद्यैर्वस्त्रालङ्कारणैस्तथा ॥६॥

रामभक्तान्प्रयत्नेन प्रीणयेत्परया मुदा।
एवं यः कुरुते भक्त्या श्रीरामनवमीव्रतम्॥७॥

अनेकजन्मासिद्धानि पापानि सुबहूनि च।
भस्मीकृत्य व्रजत्येव तद्विष्णोः परमं पदम्॥८॥

सर्वेषामप्ययं धर्मो भुक्तिमुत्तयेकसाधनः।
अशुचिर्वाऽपि पापिष्ठः कृत्वेदं व्रतमुत्तमम्।
पूज्यः स्यात्सर्वभूतानां यथा रामस्तथैव सः॥९॥

यस्तु रामनवम्यां वै भुक्त्वे स तु नराधमः।
कुम्भीपाकेषु घोरेषु गच्छत्येव न संशयः॥१०॥

अकृत्वा रामनवमीव्रतं सर्वव्रतोत्तमम्।
व्रतान्यन्यानि कुरुते न तेषां फलभागभवेत्॥११॥

रहस्यकृतपापानि प्रख्यातानि बहून्यपि।
महान्ति च प्रणश्यन्ति श्रीरामनवमीव्रतात्॥१२॥

एकामपि नरो भक्त्या श्रीरामनवमीं मुने।
उपोष्य कृतकृत्यः स्यात्सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१३॥

नरो रामनवम्यां तु श्रीरामप्रतिमाप्रदः।
विधानेन मुनिश्रेष्ठ स मुक्तो नात्र संशयः॥१४॥

सुतीक्ष्ण उवाच

श्रीरामप्रतिमादानविधानं वा कथं मुने।
कथय त्वं हि रामेऽपि भक्तम्य मम विस्तरात्॥१५॥

अगस्त्य उवाच

कथायिष्यामि तद्विद्वन् प्रतिमादानमुत्तमम्॥१६॥
विधानं चापि यत्नेन यतस्त्वं वैष्णवोत्तमः।
अष्टम्यां चैत्रमासे तु शुक्लपक्षे जितेन्द्रियः॥१७॥
दन्तधावनपूर्वं तु प्रातः स्नायाद्यथाविधि।
नद्यां तडागे कूपे वा हृदे प्रस्रवणेऽपि वा॥१८॥
ततः सन्ध्यादिका कार्याः संस्मरन् राघवं हृदि।
गृहमासाद्य विप्रेन्द्र कुर्यादौपासनादिकम्॥१९॥
दान्तं कुटुम्बिनं विप्रं वेदशास्त्रपरं सदा।
श्रीरामपूजानिरतं सुशीलं दम्भवर्जितम्॥२०॥
विधिज्ञं राममन्त्राणां राममन्त्रैकसाधनम्।
आहूय भक्त्या सम्पूज्य वृणुयात्प्रार्थयन्निति॥२१॥
श्रीरामप्रतिमादानं करिष्येऽहं द्विजोत्तम।
तत्राचार्यो भव प्रीतः श्रीरामोऽसि त्वमेव च॥२२॥
इत्युक्त्वा पूज्य विप्रं तं स्नापयित्वा ततः परम्।
तैलेनाभ्यज्य पयसा चिन्तयन्नाघवं हृदि॥२३॥
श्वेताम्बरधरः श्वेतगन्धमाल्यानि धारयेत्।
अर्चितो भूषितश्चैव कृतमाध्याह्निकक्रियः॥२४॥
आचार्यभोजयेद् भक्त्या सात्त्विकान्नैः सुविस्तरम्।
भुञ्जीत स्वयमप्येवं हृदि राममनुस्मरन्॥२५॥

एकभक्तव्रती तत्र सहाचार्यो जितन्द्रियः।
शृण्वन्नामकथां दिव्यामहःशेषं नयेन्मुने॥२६॥

सायं सन्ध्यादिकाः कुर्यात्क्रिया राममनुस्मरन्।
आचार्यसहितो रात्रावधःशायी जितेन्द्रियः॥२७॥

वसेत्स्वयं न चैकान्ते श्रीरामार्पितमानसः।
ततः प्रातः समुत्थाय स्नात्वा सन्ध्यां यथाविधि॥२८॥

प्रातः सर्वाणि कर्माणि शीघ्रमेव समापयेत्।
ततः स्वस्थमना भूत्वा विद्वद्भिः सहितोऽनघ॥२९॥

स्वगृहे चोत्तरे देशे दानस्योज्ज्वलमण्डपम्।
चतुरं पताकाढयं सवितानं सतोरणम्॥३०॥

मनोहरं महोत्सेधं पुष्पाद्यैः समलङ्कृतम्।
शङ्खचक्रहनूमाद्विः प्रारद्वारे समलङ्कृतम्॥३१॥

गरुत्मच्छार्ङ्गबाणैश्च दक्षिणे समलङ्कृतम्।
गदाखङ्गाङ्गदैश्चैव पश्चिमे च विभूषितम्॥३२॥

पद्मस्वस्तिकनीलैश्च कौबेर्यां समलङ्कृतम्।
मध्यहस्तचतुष्काढ्यवेदिकायुक्तमायतम् ॥३३॥

प्रविश्य गीतनृत्यैश्च वाद्यैश्चापि समन्वितम्।
पुण्याहं वाचयित्वा च विद्वद्भिः प्रीतमानसः॥३४॥

ततः सङ्कल्पयेद्देवं राममेव स्मरन्मुने।
अस्यां रामनवम्यां तु रामाराधनतत्परः॥३५॥

उपोष्याष्टसु यामेषु पूजयित्वा यथाविधि।
इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां तु प्रयत्नतः॥३६॥

श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते।
प्रीतो रामो हरत्वाशु पापानि सुबहूनि मे॥३७॥

अनेकजन्मसंसिद्धान्यभ्यस्तानि महान्ति च।
विलिखेत्सर्वतोभद्रं वेदिकोपरि सुन्दरम्॥३८॥

मध्ये तीर्थोदकैर्युक्तं पात्र संस्थाप्य चार्चितम्।
सौवर्णे राजते ताम्रे पात्रे षट्कोणमालिखेत्॥३९॥

ततः स्वर्णमयीं रामप्रतिमां पलमात्रतः।
निर्मितां द्विभुजां रम्यां वामाङ्गस्थितजानकीम्॥४०॥

बिभ्रतीं दक्षिणे हस्ते ज्ञानमुद्रां महामुने।
वामेनाधःकरेणाराद्वीमालिङ्ग्य संस्थिताम्॥४१॥

सिंहासने राजते च पलद्वयविनिर्मिते।
पञ्चामृतस्नानपूर्वं सम्पूज्य विधिवत्ततः॥४२॥

मूलमन्त्रेण नियतो न्यासपूर्वमतन्द्रितः।
दिवैवं विधिवत् कृत्वा रात्रौ जागरणं ततः॥४३॥

दिव्यां रामकथां श्रुत्वा रामभक्तिसमन्वितः।
गीतनृत्यादिभिश्चैव रामस्तोत्रैरनेकधा॥४४॥

रामाष्टकैश्च संस्तुत्य गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।
कर्पूरागुरुकस्तूरीकह्वाराद्यैरनेकधा ॥४५॥

सम्पूज्य विधिवद् भक्त्या दिवारात्रं नयेद्बुधः।
ततः प्रातः समुत्थाय स्नानसन्ध्यादिकाः क्रियाः॥४६॥

समाप्य विधिवद्रामं पूजयेद्विधिवन्मुने।
ततो होम प्रकुर्वीत मूलमन्त्रेण मन्त्रवित्॥४७॥

पूर्वोक्त पद्मकुण्डे वा स्थण्डिले वा समाहितः।
लौकिकाग्नौ विधानेन शतमष्टोत्तरं मुने॥४८॥

साज्येन पायसेनैव स्मरन्नाममनन्यधीः।
ततो भक्त्या सुसन्तोष्य आचार्यं पूजयेन्मुने॥४९॥

कुण्डलाभ्यां सरनाभ्यामगुलीयैरनेकधा।
गन्धपुष्पाक्षतैर्वस्त्रैर्विचित्रैस्तु मनोहरैः॥५०॥

ततो रामं स्मरन्दद्यादिमं मन्त्रमुदीरयेत्।
इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलङ्कृताम्॥५१॥

चित्रवस्त्रयुगच्छन्नरामोऽहं राघवाय ते।
श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु राघवः॥५२॥

इति दत्त्वा विधानेन दद्याद्वै दक्षिणां ध्रुवम्।
अन्नेभ्यश्च यथाशक्त्या गोहिरण्यादि भक्तितः॥५३॥

दद्याद्वासोयुगं धान्यं तथाऽलङ्करणानि च।
एवं यः कुरुते रामप्रतिमादानमुत्तमम्॥५४॥

ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।
तुलापुरुषदानादिफलमाप्नोति सुव्रत॥५५॥

अनेकजन्मसंसिद्धपापेभ्यो मुच्यते ध्रुवम्।
बहुनाऽत्र किमुक्तेन मुक्तिस्तस्य करे स्थिता॥५६॥

कुरुक्षेत्रे महापुण्ये सूर्यपर्वण्यशेषतः।
तुलापुरुषदानाद्यैः कृतैर्यल्लभते फलम्।
तत्फलं लभते मर्त्यो दानेनानेन सुव्रत॥५७॥

सुतीक्ष्ण उवाच

प्रायेण हि नराः सर्वे दरिद्राः कृपणा मुने।
कैः कर्तव्यं कथमिदं व्रतं ब्रूहि महामुने॥५८॥

अगस्त्य उवाच

दरिद्रश्च महाभाग स्वस्य वित्तानुसारतः॥५९॥

पलार्धेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः।
वित्तशाठ्यमकृत्वैव कुर्यादिवं व्रतं मुने॥६०॥

यदि घोरतरं दुष्टं पातकं नेहते क्वचित्।
अकिञ्चनोऽपि यत्नेन उपोष्य नवमीदिने॥६१॥

एकचित्तोऽपि विधिवत्सर्वपापैः प्रमुच्यते।
प्रातःस्नानं च विधिवत्कृत्वा सन्ध्यादिकाः क्रियाः॥६२॥

गोभूतिलहिरण्यादि दद्याद्वित्तानुसारतः।
श्रीरामचन्द्रभक्तेभ्यो विद्वद्भ्यः श्रद्धयान्वितः॥६३॥

पारणं त्वथ कुर्वीत ब्राह्मणैश्च स्वबन्धुभिः।
एवं यः कुरुते भक्त्या सर्वपापैः प्रमुच्यते॥६४॥

प्राप्ते श्रीरामनवमीदिने मर्त्यो विमूढधीः।
उपोषणं न कुरुते कुम्भीपाकेषु पच्यते॥६५॥

यत्किञ्चिद्राममुदिक्ष्य क्रियते न स्वशक्तितः।
रौरवे स तु मूढात्मा पच्यते नात्र संशयः॥६६॥

सुतीक्ष्ण उवाच

यामाष्टके तु पूजा वै तत्र चोक्ता महामुने।
मूलमन्त्रेण संयुक्ता तां कथां वद सुव्रत॥६७॥

अगस्त्य उवाच

सर्वेषां राममन्त्राणां मन्त्रराज षडक्षरम्।
मुमूर्मणिकान्ते अर्धोदकनिवासिनः॥६८॥

अहं दिशामि ते मन्त्रं तारकस्योपदेशतः।
श्रीराम राम रामेति एतत्तारकमुच्यते॥६९॥

अतस्त्वं जानकीनाथपरं ब्रह्माभिधीयसे।
तारकं ब्रह्म चेत्युक्तं तेन पूजा प्रशस्यते॥७०॥

पीठाङ्गदेवतानां तु आवृत्तीनां तथैव च।
आदावेव प्रकुर्वीत देवस्य प्रीतमानस॥७१॥

उपचारैः षोडशभिः पूजाकार्या यथाविधि।
आवाहनं स्थापनं च सम्मुखीकरणं तथा॥७२॥

एवं मुद्रां प्रार्थनां च पूजामुद्रां प्रयत्नतः।
शङ्खपूजां प्रकुर्वीत पूर्वोक्तविधिना ततः॥७३॥

कलशं वामभागे च पूजाद्रव्याणि चादरात्।
पीठे सम्पूज्य यत्नेन आत्मानं मन्त्रमुच्चरेत्॥७४॥

पात्रासादनमप्येवं कुर्याद्यामेष्वतन्द्रितः।
पीताम्बराणि देवाय प्रार्पयन्नर्चयेत्सुधीः॥७५॥

स्वर्णयज्ञोपवीतानि दद्याद्देवाय भक्तितः।
नानारत्नविचित्राणि दद्यादाभरणानि च॥७६॥

हिमाम्बुघृष्टं रुचिरं घनसारमनोहरम्।
क्रमात्तु मूलमन्त्रेण उपचारान्प्रकल्पयेत्॥७७॥

कह्लारैः केतकैर्जात्यैः पुन्नागाद्यैः प्रपूजयेत्।
चम्पकैः शतपत्रैश्च सुगन्धैः सुमनोहरैः॥७८॥

पाद्यचन्दनधूपैश्च तत्तन्मन्त्रैः प्रपूजयेत्।
भक्ष्यभोज्यादिकं भक्त्या देवाय विधिनार्ऽपयेत्॥७९॥

येन सोपस्करं देवं दत्वा पापैः प्रमुच्यते।
जन्मकोटिकृतैर्घोरैर्नानारूपैश्च दारुणः॥८०॥

विमुक्तः स्यात्क्षणादेव राम एव भवेन्मुने।
श्रद्धधानस्य दातव्यं श्रीरामनवमीव्रतम्॥८१॥

सर्वलोकहितायेदं पवित्रं पापनाशनम्।
लोहेन निर्मितं वाऽपि शिलया दारुणाऽपि वा॥८२॥

एकेनैव प्रकारेण यस्मै कस्मै च वा मुने।
कृतं सर्वं प्रयत्नेन यत्किञ्चिदपि भक्तितः॥८३॥

जपेदेकान्तमासीनो यावत्स दशमीदिनम्।
अनेन स्यात्पुनः पूजा दशम्यां भोजयेद् द्विजान्॥८४॥

भक्त्या भोज्यैर्बहुविधैर्दद्याद् भक्त्या च दक्षिणाम्।
कृतकृत्यो भवेत्तेन सद्यो रामः प्रसीदति॥८५॥

तूष्णीं तिष्ठन्नरो वाऽपि पुनरावृत्तिवर्जितः।
द्वादशाब्दे कृतेनापि यत्पापं चापि मुच्यते॥८६॥

विलयं याति तत्सर्वं श्रीरामनवमीव्रतम्।
जपं च रामनन्त्राणां यो न जानाति तस्य वै॥८७॥

उपोष्य संस्मरेद्रामं न्यासपूर्वमतन्द्रितः।
गुरोर्लब्धमिमं मन्त्रं न्यसेन्न्यासपुरःसरम्॥८८॥

यामे यामे च विधिना कुर्यात्पूजां समाहितः।
मुमुक्षुश्च सदा कुर्याच्छ्रीरामनवमीव्रतम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो याति ब्रह्म सनातनम्॥८९॥

॥इति श्रीस्कन्दपुराणे अगस्त्य संहितायामगस्तिसुतीक्ष्णसंवादे रामनवमी-
व्रतविधिः सम्पूर्णः॥

॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः
निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥
अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा - श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
()^७ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने वसन्तऋतौ मेषमासे

शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् (स्वाती/?)^८ नक्षत्र ()^९ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां चतुर्दश्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः श्री-नृसिंह-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

^८पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^९पृष्ठं २९३ पश्यताम्

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायामि देवदेवं तं शङ्खचक्रगदाधरम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहम् आवाहयामि।

पुरुष ए॒वेद॑ः सर्व॑म्। यद्भू॒तं यच्च॑ भव्य॑म्।
उ॒तामृ॑त॒त्वस्ये॑शानः। यद॒न्नैना॑तिरोह॑ति॥

आसनं समर्पयामि।

ए॒तावा॑नस्य महि॒मा। अतो॒ ज्याया॑ः॒श्च पू॑रुषः।
पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑। त्रि॒पाद॑स्यामृ॒तं दि॒वि॥

पाद्यं समर्पयामि।

त्रि॒पादूर्ध्व उ॒दैत्पु॑रुषः। पादो॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑।
ततो॒ विश्व॑ङ्म॒क्राम॑त्। सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि॥
अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्मा॑द्विराड॑जायत। वि॒राजो॒ अधि॑ पूरुषः।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॥

आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पु॑रुषेण ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत।
व॒स॒न्तो अ॑स्याऽऽसी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॑विः॥
मधुपर्कं समर्पयामि।

स॒प्तास्य॑ऽऽसन् परि॒धयः॑। त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः।
दे॒वा यद्य॑ज्ञं त॑न्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पु॒रुषं प॒शुम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पु॒रुषं जा॑तम॒ग्रतः॑।
तेन॑ दे॒वा अ॑य॒जन्त। सा॒ध्या ऋ॒षेय॑श्च॒ ये॥
वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
 पशूँस्ताँश्चक्रे वायुव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥
 यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
 छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।
 अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः।
 गार्वा ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
 पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ अनघाय नमः — पादौ पूजयामि
२. वामनाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. शौरये नमः — जङ्घे पूजयामि
४. वैकुण्ठवासिने नमः — ऊरू पूजयामि
५. पुरुषोत्तमाय नमः — मेढ्रं पूजयामि
६. वासुदेवाय नमः — कटिं पूजयामि
७. हृषीकेशाय नमः — नाभिं पूजयामि
८. माधवाय नमः — हृदयं पूजयामि
९. मधुसूदनाय नमः — कण्ठं पूजयामि
१०. वराहाय नमः — बाहून् पूजयामि
११. नृसिंहाय नमः — हस्तान् पूजयामि
१३. दैत्यसूदनाय नमः — मुखं पूजयामि

१६. दामोदराय नमः — नासिकां पूजयामि
 १४. पुण्डरीकाक्षाय नमः— नेत्रे पूजयामि
 १५. गरुडध्वजाय नमः — श्रोत्रे पूजयामि
 १६. गोविन्दाय नमः — ललाटं पूजयामि
 १७. अच्युताय नमः — शिरः पूजयामि
 १८. श्री-नृसिंहाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

- ॐ श्रीनृसिंहाय नमः
 ॐ महासिंहाय नमः
 ॐ दिव्यसिंहाय नमः

- ॐ महाबलाय नमः
 ॐ उग्रसिंहाय नमः
 ॐ महादेवाय नमः

| | | | |
|-------------------------|----|---------------------|----|
| ॐ उपेन्द्राय नमः | | ॐ सुरारिघ्नाय नमः | |
| ॐ अग्निलोचनाय नमः | | ॐ सदार्तिघ्नाय नमः | |
| ॐ रौद्राय नमः | | ॐ सदाशिवाय नमः | |
| ॐ शौरये नमः | १० | ॐ गुणभद्राय नमः | |
| ॐ महावीराय नमः | | ॐ महाभद्राय नमः | |
| ॐ सुविक्रमपराक्रमाय नमः | | ॐ बलभद्राय नमः | |
| ॐ हरिकोलाहलाय नमः | | ॐ सुभद्रकाय नमः | ४० |
| ॐ चक्रिणे नमः | | ॐ करालाय नमः | |
| ॐ विजयाय नमः | | ॐ विकरालाय नमः | |
| ॐ अजयाय नमः | | ॐ गतायुषे नमः | |
| ॐ अव्ययाय नमः | | ॐ सर्वकर्तृकाय नमः | |
| ॐ दैत्यान्तकाय नमः | | ॐ भैरवाडम्बराय नमः | |
| ॐ परब्रह्मणे नमः | | ॐ दिव्याय नमः | |
| ॐ अघोराय नमः | २० | ॐ अगम्याय नमः | |
| ॐ घोरविक्रमाय नमः | | ॐ सर्वशत्रुजिते नमः | |
| ॐ ज्वालामुखाय नमः | | ॐ अमोघास्त्राय नमः | |
| ॐ ज्वालामालिने नमः | | ॐ शस्त्रधराय नमः | ५० |
| ॐ महाज्वालाय नमः | | ॐ सव्यजूटाय नमः | |
| ॐ महाप्रभवे नमः | | ॐ सुरेश्वराय नमः | |
| ॐ निटिलाक्षाय नमः | | ॐ सहस्रबाहवे नमः | |
| ॐ सहस्राक्षाय नमः | | ॐ वज्रनखाय नमः | |
| ॐ दुर्निरीक्षाय नमः | | ॐ सर्वसिद्धये नमः | |
| ॐ प्रतापनाय नमः | | ॐ जनार्दनाय नमः | |
| ॐ महादंष्ट्राय नमः | ३० | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ प्राज्ञाय नमः | | ॐ भगवते नमः | |
| ॐ हिरण्यक-निषूदनाय नमः | | ॐ स्थूलाय नमः | |
| ॐ चण्डकोपिने नमः | | ॐ अगम्याय नमः | ६० |

ॐ परावराय नमः
 ॐ सर्वमन्त्रैकरूपाय नमः
 ॐ सर्वयन्त्रविदारणाय नमः
 ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ परमानन्दाय नमः
 ॐ कालजिते नमः
 ॐ खगवाहनाय नमः
 ॐ भक्तातिवत्सलाय नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ सुव्यक्ताय नमः ७०
 ॐ सुलभाय नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ लोकैकनायकाय नमः
 ॐ सर्वाय नमः
 ॐ शरणागतवत्सलाय नमः
 ॐ धीराय नमः
 ॐ धराय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ भीमपराक्रमाय नमः ८०
 ॐ देवप्रियाय नमः
 ॐ नुताय नमः
 ॐ पूज्याय नमः
 ॐ भवहृते नमः

ॐ परमेश्वराय नमः
 ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
 ॐ श्रीवासाय नमः
 ॐ विभवे नमः
 ॐ सङ्कर्षणाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः ९०
 ॐ त्रिविक्रमाय नमः
 ॐ त्रिलोकात्मने नमः
 ॐ कालाय नमः
 ॐ सर्वेश्वराय नमः
 ॐ विश्वम्भराय नमः
 ॐ स्थिराभाय नमः
 ॐ अच्युताय नमः
 ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
 ॐ अधोक्षजाय नमः
 ॐ अक्षयाय नमः १००
 ॐ सेव्याय नमः
 ॐ वनमालिने नमः
 ॐ प्रकम्पनाय नमः
 ॐ गुरवे नमः
 ॐ लोकगुरवे नमः
 ॐ स्रष्ट्रे नमः
 ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
 ॐ परायणाय नमः १०८

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्धीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पशूँश्च मह्यमावह जीवन् च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः () पानकं च निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोका अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारो।
 सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
 दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजुहारं। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।
 तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥
 योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 य एव वेदं। योऽपामायतनं वेदं। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
 ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
 त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९
 रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।
 त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।
 स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥
 स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥
 यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
 तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।
 नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।
 साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
 ते ह नाकं महिमानं सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥
 - छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्
 नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

हिरण्याक्षवधार्थाय भूभारोत्तरणाय च।
 परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेसरी।
 गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सलक्ष्मी-नृहरि स्वयम्॥
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
 अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं
श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-प्रीतिं कामयमानः

मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

मद्वंशे ये नरा जाता ये जनिष्यन्ति चापरे।
तांस्त्वमुद्धर देवेश दुःसहाद्भवसागरात्॥

पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुवारिभिः।
तीव्रैश्च परिभूतस्य मोहदुःखगतस्य मे॥

करावलम्बनं देहि शेषशायिन् जगतपते।
श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन॥

क्षीराब्धिनिवासिन् त्वं चक्रपाणे जनार्दन।
व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्)।

अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥
इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।



॥ श्री-धन्वन्तरिपूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
 पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
 आचमनीयं समर्पयामि।
 ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
 स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।
 यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
 दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
 गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
 पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे
अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^{१०} नाम
संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शुभतिथौ
(इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{११} नक्षत्र
()^{१२} नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम्
त्रयोदश्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय
आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि

^{१०}पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^{११}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{१२}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रीधन्वन्तरि-देवता-प्रीत्यर्थं श्री धन्वन्तरि-देवता-प्रीति-पूर्वकम् आयुष्य-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्ध्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार धन्वन्तरि-पूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशवः
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाः स्यापो
ज्योतीः स्यापो यजूः स्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवरापः

ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

चतुर्भुजं पीतवस्त्रं सर्वालङ्कारशोभितम्।
ध्याये धन्वन्तरिं देवं सुरासुरनमस्कृतम्॥

युवानं पुण्डरीकाक्षं सर्वाभरणभूषितम्।
दधानममृतस्यैव कमण्डलुं श्रिया युतम्॥

यज्ञ-भोग-भुजं देवं सुरासुरनमस्कृतम्।
ध्याये धन्वन्तरिं देवं श्वेताम्बरधरं शुभम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री धन्वन्तरिं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री धन्वन्तरिम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदः सर्वम्। यद्धृतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नैनातिरोहति॥

आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः।
ततो विश्वङ्मिक्रामत्। साशनानशने अभि॥
अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
मधुपर्कं समर्पयामि।

सप्तास्याऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्नतः।
तेन देवा अयजन्त। साध्या ऋषेयश्च ये॥
वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
 पशूँस्ताँश्चक्रे वायुव्यान्। आरुण्यान्त्राम्याश्च ये॥
 यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
 छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।
 अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः।
 गार्वा ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
 पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ वराहाय नमः — पादौ पूजयामि
२. सङ्कर्षणाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. कालात्मने नमः — जानुनी पूजयामि
४. विश्वरूपाय नमः — जङ्घे पूजयामि
५. क्रोढाय नमः — ऊरू पूजयामि
६. भोक्त्रे नमः — कटिं पूजयामि
७. विष्णवे नमः — मेढ्रं पूजयामि
८. हिरण्यगर्भाय नमः — नाभिं पूजयामि
९. श्रीवत्सधारिणे नमः — कुक्षिं पूजयामि
१०. परमात्मने नमः — हृदयं पूजयामि
११. सर्वास्त्रधारिणे नमः — वक्षः पूजयामि

१२. वनमालिने नमः — कण्ठं पूजयामि
 १३. सर्वात्मने नमः — मुखं पूजयामि
 १४. सहस्राक्षाय नमः — नेत्राणि पूजयामि
 १५. सुप्रभाय नमः — ललाटं पूजयामि
 १६. चम्पकनासिकाय नमः — नासिकां पूजयामि
 १७. सर्वेशाय नमः — कर्णौ पूजयामि
 १८. सहस्रशिरसे नमः — शिरः पूजयामि
 १९. नीलमेघनिभाय नमः — केशान् पूजयामि
 २०. महापुरुषाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ धन्वन्तरये नमः
 ॐ सुधापूर्णकलशाढ्यकराय नमः
 ॐ हरये नमः
 ॐ
 जरामृतित्रस्तदेवप्रार्थनासाधकाय
 नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ निर्विकल्पाय नमः
 ॐ निस्समानाय नमः
 ॐ मन्दस्मितमुखाम्बुजाय नमः
 ॐ आज्ञनेयप्रापिताद्रये नमः
 ॐ पार्श्वस्थविनतासुताय नमः १०
 ॐ निमग्नमन्दरधराय नमः
 ॐ कूर्मरूपिणे नमः
 ॐ बृहत्तनवे नमः
 ॐ नीलकुञ्चितकेशान्ताय नमः
 ॐ परमाद्भुतरूपधृते नमः
 ॐ कटाक्षवीक्षणाश्वस्तवासुकिने
 नमः
 ॐ सिंहविक्रमाय नमः
 ॐ स्मर्तृहृद्रोगहरणाय नमः
 ॐ महाविष्णवंशसम्भवाय नमः
 ॐ प्रेक्षणीयोत्पलश्यामाय नमः २०
 ॐ आयुर्वेदाधिदैवताय नमः
 ॐ भेषजग्रहणानेहस्मरणीय-
 पदाम्बुजाय नमः
 ॐ नवयौवनसम्पन्नाय नमः

ॐ किरीटान्वितमस्तकाय नमः
 ॐ नक्रकुण्डलसंशोभि-
 श्रवणद्वयशष्कुलये नमः
 ॐ दीर्घपीवरदोर्दण्डाय नमः
 ॐ कम्बुग्रीवाय नमः
 ॐ अम्बुजेक्षणाय नमः
 ॐ चतुर्भुजाय नमः
 ॐ शङ्खधराय नमः ३०
 ॐ चक्रहस्ताय नमः
 ॐ वरप्रदाय नमः
 ॐ
 सुधापात्रोपरिलसदाम्रपत्रलसत्कराय
 नमः
 ॐ शतपद्याढ्यहस्ताय नमः
 ॐ कस्तूरीतिलकाञ्चिताय नमः
 ॐ सुकपोलाय नमः
 ॐ सुनासाय नमः
 ॐ सुन्दरभ्रूलताञ्चिताय नमः
 ॐ स्वङ्गुलीतलशोभाढ्याय नमः
 ॐ गूढजत्रवे नमः ४०
 ॐ महाहनवे नमः
 ॐ दिव्याङ्गदलसद्वाहवे नमः
 ॐ केयूरपरिशोभिताय नमः
 ॐ
 विचित्ररत्नखचितवलयद्वयशोभिताय
 नमः
 ॐ समोल्लसत्सुजातांसाय नमः

ॐ अङ्गुलीयविभूषिताय नमः
 ॐ सुधागन्धरसास्वादमिलद्भृङ्ग-
 मनोहराय नमः
 ॐ लक्ष्मीसमर्पितोत्फुल्ल-
 कञ्जमालालसद्गलाय नमः
 ॐ लक्ष्मीशोभितवक्षस्काय नमः
 ॐ वनमालाविराजिताय नमः ५०
 ॐ
 नवरत्नमणीकृतहारशोभितकन्धराय
 नमः
 ॐ हीरनक्षत्रमालादिशोभारञ्जित-
 दिङ्मुखाय नमः
 ॐ विरजाय नमः
 ॐ अम्बरसंवीताय नमः
 ॐ विशालोरवे नमः
 ॐ पृथुश्रवसे नमः
 ॐ निम्ननाभये नमः
 ॐ सूक्ष्ममध्याय नमः
 ॐ स्थूलजङ्घाय नमः
 ॐ निरञ्जनाय नमः ६०
 ॐ सुलक्षणपदाङ्गुष्ठाय नमः
 ॐ सर्वसामुद्रिकान्विताय नमः
 ॐ अलक्तकारक्तपादाय नमः
 ॐ मूर्तिमते नमः
 ॐ वार्धिपूजिताय नमः
 ॐ सुधार्थान्योन्यसंयुध्यद्देवदैतेय-
 सान्त्वनाय नमः

ॐ कोटिमन्मथसङ्काशाय नमः
 ॐ सर्वावयवसुन्दराय नमः
 ॐ
 अमृतास्वादनोद्युक्तदेवसङ्घपरिष्टुताय
 नमः
 ॐ
 पुष्पवर्षणसंयुक्तगन्धर्वकुलसेविताय
 नमः ७०
 ॐ
 शङ्खतूर्यमृदङ्गादिसुवादित्राप्सरोवृताय
 नमः
 ॐ विष्वक्सेनादियुक्पार्श्वाय नमः
 ॐ सनकादिमुनिस्तुताय नमः
 ॐ साश्चर्यसस्मितचतुर्मुखनेत्र-
 समीक्षिताय नमः
 ॐ साशङ्कसम्भ्रमदितिदनुवंश्य-
 समीडिताय नमः
 ॐ नमनोन्मुखदेवादिमौलीरत्न-
 लसत्पदाय नमः
 ॐ दिव्यतेजसे नमः
 ॐ पुञ्जरूपाय नमः
 ॐ सर्वदेवहितोत्सुकाय नमः
 ॐ स्वनिर्गमक्षुब्धदुग्धवाराशये नमः
 ८०
 ॐ दुन्दुभिस्वनाय नमः
 ॐ
 गन्धर्वगीतापदानश्रवणोत्कमहामनसे

नमः

ॐ निष्किञ्चनजनप्रीताय नमः

ॐ भवसम्प्राप्तारोगहृते नमः

ॐ अन्तर्हितसुधापात्राय नमः

ॐ महात्मने नमः

ॐ मायिकाग्रण्ये नमः

ॐ क्षणार्धमोहिनीरूपाय नमः

ॐ सर्वस्त्रीशुभलक्षणाय नमः

ॐ मदमत्तेभगमनाय नमः १०

ॐ सर्वलोकविमोहनाय नमः

ॐ स्रंसन्नीवीग्रन्थिबन्धासक्त-

दिव्यकराङ्गुलिने नमः

ॐ रत्नदर्वीलसद्गस्ताय नमः

ॐ देवदैत्यविभागकृते नमः

ॐ सङ्ख्यातदेवतान्यासाय नमः

ॐ दैत्यदानववञ्चकाय नमः

ॐ देवामृतप्रदात्रे नमः

ॐ परिवेषणहृष्टधिये नमः

ॐ उन्मुखोन्मुखदैत्येन्द्रदन्त-

पङ्क्तिविभाजकाय नमः

ॐ

पुष्पवत्सुविनिर्दिष्टराहुरक्षःशिरोहराय

नमः १००

ॐ राहुकेतुग्रहस्थानपश्चाद्गति-

विधायकाय नमः

ॐ अमृतालाभनिर्विण्णयुध्यद्देवारि-

सूदनाय नमः

ॐ गरुत्मद्वाहनारूढाय नमः

ॐ सर्वेशस्तोत्रसंयुताय नमः

ॐ स्वस्वाधिकारसन्तुष्ट-

शक्रवह्यादिपूजिताय नमः

ॐ मोहिनीदर्शनायात-

स्थाणुचित्तविमोहकाय नमः

ॐ शचीस्वाहादिदिक्पालपत्नी-

मण्डलसन्नुताय नमः

ॐ वेदान्तवेद्यमहिम्ने नमः

ॐ सर्वलोकैकरक्षकाय नमः

ॐ राजराजप्रपूज्याङ्घ्रये नमः ११०

ॐ चिन्तितार्थप्रदायकाय नमः

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं सुगन्धं सुमनोहरम्।
धूपं गृहाण देवेश सर्वभूत मनोहर॥

श्री धन्वन्तरये नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राज्ञ्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पुञ्चां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पशूँश्च मह्यमावह जीर्वनं च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री धन्वन्तरये नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

- श्री धन्वन्तरये नमः () निवेदयामि,

अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पुञ्चां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोका अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री धन्वन्तरये नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।

सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री धन्वन्तरये नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।

तमेवं विद्वानमृत इह भवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।
 ओ॑ तद्ब्रह्म। ओ॑ तद्वायुः। ओ॑ तदात्मा। ओ॑ तत्सत्यम्।
 ओ॑ तत्सर्वम्। ओ॑ तत्पुरोर्नमः॥
 अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व५ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

श्री धन्वन्तरये नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।

स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥ - स्वर्णपुष्पं समर्पयामि

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

- अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानं सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥

- छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

धन्वन्तरिजयन्ती-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण धन्वन्तरिपूजायां
यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्री धन्वन्त्रिप्रीतिम् कामयमानः
मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री
धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥
अस्मात् बिम्बात् श्री धन्वन्तरिं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)
अनया पूजया श्री धन्वन्तरिः प्रीयताम्।
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥

॥ श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सौद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

१८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।
 नैवेद्यम्।
 ताम्बूलं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
 अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 प्रार्थनाः समर्पयामि।
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
 अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
 शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
 ()^{१३} नाम संवत्सरे दक्षिनायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे
 अमावास्यायां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /

^{१३}पृष्ठं २९१ पश्यताम्

भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{१४} नक्षत्र ()^{१५} नाम योग (चतुष्पात्/नागव)
 करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् अमावास्यायां
 शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
 वृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
 सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
 प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं
 श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं श्रीमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं मातृगणपूजां
 नवग्रहपूजां लोकपाल-पूजां च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।
 श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय
 च।
 (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
 ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
 नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

^{१४}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{१५}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ मातृगणपूजा ॥

- | | |
|---------------------|-----------------------------|
| १. ॐ गौर्यै नमः | ९. ॐ स्वधायै नमः |
| २. ॐ पद्मायै नमः | १०. ॐ स्वाहायै नमः |
| ३. ॐ शक्त्यै नमः | ११. ॐ मातृभ्यो नमः |
| ४. ॐ मेधायै नमः | १२. ॐ लोकमातृभ्यो नमः |
| ५. ॐ सावित्र्यै नमः | १३. ॐ धृत्यै नमः |
| ६. ॐ विजयायै नमः | १४. ॐ पुष्ट्यै नमः |
| ७. ॐ जयायै नमः | १५. ॐ तुष्ट्यै नमः |
| ८. ॐ देवसेनायै नमः | १६. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः |

षोडश-मातृभ्यो नमः ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि। आभरणार्थम् अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। धूपदीपार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

नैवेद्यम्। (कदलीफलानि)
कर्पूरताम्बूलं कर्पूरनीराजनार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
प्रार्थनाः समर्पयामि।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वरदाभयपाणयः॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ नवग्रहपूजा ॥

(चित्रे दर्शितया रीत्या मण्डलानि प्रतिष्ठाप्य आरभेत।)

| | | |
|---|--|---|
| ५. बुधः हरितवस्त्रम् मुद्र-मण्डलम् | ३. शुक्रः श्वेतवस्त्रम् राजमाष-मण्डलम् | ४. सोमः श्वेतवस्त्रम् तण्डुल-मण्डलम् |
| ६. बृहस्पतिः पीतवस्त्रम् चणक-मण्डलम् | १. आदित्यः रक्तवस्त्रम् गोधूम-मण्डलम् | २. अङ्गारकः रक्तवस्त्रम् आढकी-मण्डलम् |
| ९. केतुः कृष्णवस्त्रम् कुलत्थ-मण्डलम् | ७. शनैश्चरः कृष्णवस्त्रम् तिल-मण्डलम् | ८. राहुः कृष्णवस्त्रम् माष-मण्डलम् |

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥१॥

आ स॒त्येन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो निवेशय॑न्नमृतं॒ मर्त्यं॑ च। हिर॒ण्यये॑न सवि॒ता
रथे॒नाऽदे॒वो या॑ति॒ भुव॑ना विपश्यन्। अ॒ग्निं द॒तुं वृ॑णीमहे होता॑रं वि॒श्ववे॑दसम्।
अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म्॥ येषा॒मीशे॑ पशु॒पतिः॑ पशू॒नां चतु॑ष्पदामु॒त च॑ द्विपदा॑म्।
निष्क्री॑तोऽयं य॒ज्ञियं॑ भा॒गमे॑तु रा॒यस्पोषा॑ यज॑मानस्य सन्तु॥ अधिदे॒वता
प्रत्यधिदे॒वता स॑हिताय आदित्याय॒ नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं आदित्य-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥२॥

अ॒ग्निर्मूर्द्धा॑ दि॒वः क॒कुत्प॑तिः पृथि॒व्या अ॒यम्। अ॒पा॒ रेता॑सि जिन्वति।
स्यो॒ना पृ॑थिवि॒ भवा॑ऽनृक्षरा निवेश॑नी। यच्छा॑नः शर्म स॒प्रथाः॑। क्षेत्र॑स्य पति॑ना

वयं हिते नैव जयामसि। गामश्च पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे॥ अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं अङ्गारक-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥३॥

प्रवः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्रये सुपूतम्॥ यो दैव्यानि
मानुषा जनूष्यन्तर्विश्वानि विद्म न जिगाति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु
सुपत्नीमहमश्रवम्। न ह्यस्या अपरश्चन जरसा मरते पतिः॥ इन्द्र
वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शुक्र-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदारणवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥४॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णियम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥
अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशम्भुवमापश्च
विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा
चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्। अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं सोम-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥५॥

उद्धृ॒ध्यस्वा॒ग्ने प्र॒तिजा॒गृह्ये॒नमि॒ष्टापूर्ते॑ स॒ःसृ॒जेथाम॒यं च॑। पुनः॑ कृ॒ण्व॑स्त्वा
पि॒तरं॑ यु॒वानम॒न्वाता॑सी॒त्वयि॑ तन्तु॒मेतम्॥ इ॒दं वि॒ष्णुर्विच॑क्रमे त्रे॒धा नि॒दधे॑
प॒दम्। समू॑ढम॒स्यपा॑ सुरे॥ वि॒ष्णो र॒राट॑मसि॒ विष्णोः॑ पृ॒ष्ठम॑सि॒ विष्णोः॑
श्र॒ग्रे॒स्थो वि॒ष्णोः॑ स्यूर॑सि॒ विष्णो॑र्ध्रु॒वम॑सि॒ वैष्ण॒वम॑सि॒ विष्ण॑वे त्वा। अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता स॒हिताय॑ बु॒धाय॑ नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं बुध-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

दे॒वानां॑ च ऋ॒षीणां॑ च गुरुं काश्चनसन्निभम्।
बु॒द्धिभू॑तं त्रि॒लोके॑शं तं नमामि बृहस्पतिम्॥६॥

बृ॒हस्प॑ते अ॒ति॒यद॒र्यो अ॒र्हो॑द्वि॒मद्वि॒भाति॑ ऋतु॒म॒ञ्जने॑षु। यद्दी॒दय॑च्छ॒वस॑र्त॒प्रजा॑त॒
तद॑स्मा॒सु द्रवि॑णं धेहि चि॒त्रम्॥ इन्द्र॑म॒रुत्व॑ इ॒ह पा॑हि सोमं॒ यथा॑ शा॒र्या॑ते
अ॒पि॒बः सु॒तस्य॑। तव॒ प्र॒णी॑ती॒ तव॑ शूर॒शर्म॑न्नावि॒वास॑न्ति क॒वयः॑ सु॒य॒ज्ञाः॥
ब्र॒ह्मज॑ज्ञानं प्र॒थ॒मं पु॒रस्ता॒द्वि॒सी॒मतः॑ सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः। स॒बु॒धिया॑ उप॒मा
अ॒स्य वि॒ष्टाः स॒तश्च॑ योनि॒मस॑तश्च॒ वि॒वः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता स॒हिताय॑
बृहस्पतये॒ नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं बृहस्पति-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

नी॒लाञ्जन॑समाभासं रविपु॒त्रं यमा॑ग्रजम्।
छा॒यामा॑र्तण्डसम्भू॒तं तं नमामि॑ शनैश्चरम्॥७॥

शं नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शंयो॒र॒भि॒स्र॑वन्तु नः॥ प्र॒जाप॑ते न
त्वदे॒तान्य॒न्यो वि॒श्वा जा॒तानि॑ परि॒ता ब॑भूव। यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्त॑न्नो अस्तु
व॒य॑ः स्या॒म प॑त॒यो र॒यीणा॑म्। इ॒मं य॑मप्र॒स्तर॑माहि सी॒दाऽङ्गि॑रोभिः पि॒तृभिः॑
सं॒वि॒दा॒नः। आ॒त्वा म॒न्त्राः क॒वि॒श॒स्ता व॑हन्त्वे॒ना रा॑जन् ह॒विषा॑ मा॒दय॑स्व॥
अधिदेवता प्रत्यधिदेवता स॒हिताय॑ शनैश्चराय॒ नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शनैश्चर-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥

कया॑ नश्चि॒त्र आ॒भुव॑दूती॒ स॒दावृ॑धः सखी॑। कया॑ शचि॑ष्ठया वृता। आ॒ऽयङ्गौः
पृ॒श्निर॑क्री॒दस॑नन्मा॒तरं पुनः॑। पि॒तरं॑ च प्र॒यन्त्सु॑वः। यत्त॑ दे॒वी नि॒र्ऋति॑राब॒बन्ध॑
दामं॑ ग्री॒वास्व॑विच॒त्यम्। इ॒दं ते॒ तद्वि॑ष्या॒म्यायु॑षो न म॒ध्याद॑थाजी॒वः पि॒तुम॑द्धि
प्रमु॑क्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं राहु-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥९॥

के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या॑ अपे॒शसै॑। समु॑षद्वि॒रजा॑यथाः॥ ब्र॒ह्मा
दे॒वानां॑ पद॒वीः क॑वी॒नामृ॑षि॒र्विप्रा॑णां म॒हिषो॑ मृ॒गाणा॑म्। श्ये॒नो गृ॑ध्राणा॒ऽः
स्व॒धि॒ति॒र्वना॑ना॒ः सोमः॑ प॒वित्र॑म॒त्यैति॑ रेभन्। (ऋक्) सचि॑त्र चि॒त्रं
चि॒तयन्॑ तम॒स्मे चि॒त्रक्ष॑त्र चि॒त्रत॑मं वयो॒धाम्। च॒न्द्रं र॒यिं पु॑रु॒वीरं॑ बृ॒हन्तं॑
च॒न्द्रं च॒न्द्राभि॑र्गृण॒ते यु॑वस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥
अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं केतु-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि।
अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम्
अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

१. ॐ आदित्याय नमः

२. ॐ अङ्गारकाय नमः

३. ॐ शुक्राय नमः

४. ॐ सोमाय नमः

५. ॐ बुधाय नमः

६. ॐ बृहस्पतये नमः

७. ॐ शनैश्चराय नमः

८. ॐ राहवे नमः

९. ॐ केतवे नमः

नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

॥ लोकपालपूजा ॥

प्राणान् आयम्य। ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अद्य-पूर्वोक्त एवं गुण-विशेषेण विशिष्टायाम् अस्यां अमावास्यायां शुभतिथौ श्रीमहालक्ष्मी-पूजाङ्गभूतां ब्रह्म-विष्णु-त्र्यम्बक-क्षेत्रपाल-पूजां करिष्ये।

अस्मिन् कूर्चे ब्रह्मादीन् ध्यायामि। ब्रह्मन् सरस्वत्या सह इह आगच्छ
आगच्छ। सरस्वती-सहित-ब्रह्माणम् आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

लक्ष्मी-विष्णुभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

दुर्गा-त्र्यम्बकाभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

क्षेत्रपाल-भूमिभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं
समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं
समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान्
समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं
क्षेमाय पुनरागमनाय च।

॥ प्रार्थना ॥

विघ्नराजं नमस्कृत्य नमस्कृत्य विधिं परम्।
विष्णुं रुद्रं श्रियं दुर्गा वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥

क्षेत्राधिपं नमस्कृत्य दिवानाथं निशाकरम्।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥

दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
राहुकेतू नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥

शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्च प्रणमाम्यहम्।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥

वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं भृगोः सुतम्।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य आचार्याश्च तपोधनान्॥

सर्वान् तान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग-पद्मपाणिर्जनार्दनः ॥

सर्वासु दिक्षु रक्षेन्मां यावत् पूजावसानकम्।

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमकुटविचित्रालङ्कृता कल्पजातैः

भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥

हिरण्यवर्णां हिरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म् आवह॥१॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीमहालक्ष्मीं ध्यायामि।

आवाहये महालक्ष्मि चैतन्यस्तन्यदायिनि।
विष्णुपत्नि जगन्मातः पूजां गृह्णीष्व ते नमः॥

श्रीमहालक्ष्मीम् आवाहयामि।

तां म् आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानुहम्॥२॥

तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यम् आसनं प्रतिगृह्यताम्॥

आसनं समर्पयामि।

अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमादेवीर्जुषताम्॥३॥

गङ्गातीर्थ-समुद्भूतं गन्ध-पुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥

पाद्यं समर्पयामि।

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां
पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥४॥

एलागन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रे प्रपूरितम्।
अर्घ्यं गृहाण मदत्तं प्रसीद त्वं महेश्वरि॥

अर्घ्यं समर्पयामि।

चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं
शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

सर्वलोकस्य या शक्तिः ब्रह्मरुद्रादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्॥

आचमनीयं समर्पयामि।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि
तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

घृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

पयसा स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

दध्ना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

मधुना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

पञ्चामृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

(कलशजलेन श्री-सूक्तं जप्य) शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

उपैतु मां देवसुखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्
कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कञ्चुकं च मनोहरम्।
महालक्ष्मि महादेवि गृहाणदं मयाऽर्पितम्॥
वस्त्रं समर्पयामि।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वा
निर्णुद मे गृहात्॥८॥

माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ताविद्रुमसंयुतम्।
दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥
कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नकङ्कणवैडूर्य-मुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि त्वं गृहाण मे॥
आभरणानि समर्पयामि।

गन्धद्वारां दुराधरूपां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये
श्रियम्॥९॥

सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया।
अतो दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

तिलकं समर्पयामि।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः
श्रेयतां यशः॥१०॥

मन्दार-पारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा।
माकन्दं कुरवं चैव गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥
पुष्पमालां धारयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ चपलायै नमः — पादौ पूजयामि
२. चञ्चलायै नमः — जानुनी पूजयामि
३. कमलायै नमः — कटिं पूजयामि
४. कात्यायन्यै नमः — नाभिं पूजयामि
५. जगन्मात्रे नमः — जठरं पूजयामि
६. विश्ववल्लभायै नमः — वक्षःस्थलं पूजयामि
७. कमलवासिन्यै नमः — हस्तौ पूजयामि
८. पद्माननायै नमः — मुखं पूजयामि
९. कमलपत्राक्ष्यै नमः — नेत्रत्रयं पूजयामि
१०. श्रियै नमः — शिरः पूजयामि
११. महालक्ष्म्यै नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना ॥

(प्राच्याम् आरभ्य अष्टदिक्षु प्रदक्षिणेन)

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| १. ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः | ५. ॐ कामलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ योगलक्ष्म्यै नमः |

आद्यादिलक्ष्मीनां षोडशोपचारपूजार्थं पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

- | | | |
|-------------------------|------------------------|----|
| ॐ प्रकृत्यै नमः | ॐ विभावर्यै नमः | २० |
| ॐ विकृत्यै नमः | ॐ अदित्यै नमः | |
| ॐ विद्यायै नमः | ॐ दित्यै नमः | |
| ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः | ॐ दीप्तायै नमः | |
| ॐ श्रद्धायै नमः | ॐ वसुधायै नमः | |
| ॐ विभूत्यै नमः | ॐ वसुधारिण्यै नमः | |
| ॐ सुरभ्यै नमः | ॐ कमलायै नमः | |
| ॐ परमात्मिकायै नमः | ॐ कान्तायै नमः | |
| ॐ वाचे नमः | ॐ क्षमायै नमः | |
| ॐ पद्मालयायै नमः | ॐ क्षीरोदसम्भवायै नमः | |
| ॐ पद्मायै नमः | ॐ अनुग्रहपदायै नमः | ३० |
| ॐ शुचये नमः | ॐ बुद्धये नमः | |
| ॐ स्वाहायै नमः | ॐ अनघायै नमः | |
| ॐ स्वधायै नमः | ॐ हरिवल्लभायै नमः | |
| ॐ सुधायै नमः | ॐ अशोकाममृतायै नमः | |
| ॐ धन्यायै नमः | ॐ दीप्तायै नमः | |
| ॐ हिरण्मय्यै नमः | ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः | |
| ॐ लक्ष्म्यै नमः | ॐ धर्मनिलयायै नमः | |
| ॐ नित्यपुष्टायै नमः | ॐ करुणायै नमः | |

| | | | |
|-----------------------|----|--------------------------|----|
| ॐ लोकमात्रे नमः | | ॐ शिवकर्यै नमः | |
| ॐ पद्मप्रियायै नमः | ४० | ॐ सत्यै नमः | |
| ॐ पद्महस्तायै नमः | | ॐ विमलायै नमः | |
| ॐ पद्माक्ष्यै नमः | | ॐ विश्वजनन्यै नमः | |
| ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः | | ॐ तुष्ट्यै नमः | ७० |
| ॐ पद्मोद्भवायै नमः | | ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः | |
| ॐ पद्ममुख्यै नमः | | ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः | |
| ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः | | ॐ शान्तायै नमः | |
| ॐ रमायै नमः | | ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः | |
| ॐ पद्ममालाधरायै नमः | | ॐ श्रियै नमः | |
| ॐ देव्यै नमः | | ॐ भास्कर्यै नमः | |
| ॐ पद्मिन्यै नमः | ५० | ॐ बिल्वनिलयायै नमः | |
| ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः | | ॐ वरारोहायै नमः | |
| ॐ पुण्यगन्धायै नमः | | ॐ यशस्विन्यै नमः | |
| ॐ सुप्रसन्नायै नमः | | ॐ वसुन्धरायै नमः | ८० |
| ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः | | ॐ उदाराङ्गायै नमः | |
| ॐ प्रभायै नमः | | ॐ हरिण्यै नमः | |
| ॐ चन्द्रवदनायै नमः | | ॐ हेममालिन्यै नमः | |
| ॐ चन्द्रायै नमः | | ॐ धनधान्यकर्यै नमः | |
| ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः | | ॐ सिद्ध्यै नमः | |
| ॐ चतुर्भुजायै नमः | | ॐ स्नेहसौम्यायै नमः | |
| ॐ चन्द्ररूपायै नमः | ६० | ॐ शुभप्रदायै नमः | |
| ॐ इन्दिरायै नमः | | ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः | |
| ॐ इन्दुशीतलायै नमः | | ॐ वरलक्ष्म्यै नमः | |
| ॐ आह्लादजनन्यै नमः | | ॐ वसुप्रदायै नमः | ९० |
| ॐ पुष्ट्यै नमः | | ॐ शुभायै नमः | |
| ॐ शिवायै नमः | | ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः | |

| | |
|-------------------------------|--------------------------------|
| ॐ समुद्रतनयायै नमः | ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः |
| ॐ जयायै नमः | ॐ देव्यै नमः |
| ॐ मङ्गलायै नमः | ॐ सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः |
| ॐ देव्यै नमः | ॐ नवदुर्गायै नमः |
| ॐ विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः | ॐ महाकाल्यै नमः |
| ॐ विष्णुपत्न्यै नमः | ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः |
| ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः | ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः |
| ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः १०० | ॐ भुवनेश्वर्यै नमः |

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

क॒र्दमे॑न प्र॒जाभू॑ता म॒यि स॒म्भ॑व क॒र्दम॑ । श्रियं॑ वा॒सय॑ मे कु॒ले मा॒तरं॑
पद्म॑मा॒लिनी॑म्॥११॥

वनस्पति-रसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि ।

आपः॑ सृ॒जन्तु॑ स्निग्धा॒नि चि॑क्ली॒त व॑स मे॒ गृहे॑ । नि च॑ दे॒वीं मा॒तरं॑ श्रियं॑
वा॒सय॑ मे कु॒ले॥१२॥

कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि ।

ॐ भूर्भुवः सुवः । + ब्रह्मणे स्वाहा ।

आ॒र्द्रा पु॒ष्करि॑णीं पु॒ष्टिं सुव॑र्णां हे॒ममा॒लिनी॑म् । सू॒र्यां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं॑
जात॑वेदो म॒ आव॑ह॥१३॥

नैवेद्यं गृह्यतां लक्ष्मि भक्ष्य-भोज्य-समन्वितम्।
षड्रसैरर्चितं दिव्यं लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते॥

नैवेद्यम्

- श्री महालक्ष्म्यै नमः () निवेदयामि,

अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

श्री महालक्ष्म्यै नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

यौऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

य एव वेद। यौऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।

ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः वैदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

आश्वयुज-अमावास्या-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण

श्रीमहालक्ष्मी-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं श्री
महालक्ष्मीप्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
अनया पूजया श्री महालक्ष्मीः प्रीयताम्।

॥ ईशानादि पूजा ॥

ॐ ईशानाय नमः
ॐ शचिने नमः
ॐ मरुद्भ्यो नमः
ॐ प्रजापतये नमः
ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
ॐ अमरराजाय नमः
ॐ सूर्याय नमः
ॐ विश्वकर्मणे नमः
ॐ गुरवे नमः
ॐ अथर्वाङ्गिरोभ्यां नमः
ॐ अश्विभ्यां नमः
ॐ मित्रावरुणाभ्यां नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ ईशानादिभ्यो नमः

षोडशोपचार-पूजार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ कुबेर पूजा ॥

धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माय ते नमः। भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यानि
सम्पदः॥

कुबेरं पुष्पकगतं निधिभिर्नवभिर्युतम्। सुवर्णवर्णं पिङ्गाक्षं मनसा

भावयाम्यहम्॥

नरवाहन यक्षेश सर्वपुण्यजनेश्वर।

च षोडशोपचारपूजां करिष्ये।

कुबेराय नमः, आसनं समर्पयामि। कुबेराय नमः, पाद्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। कुबेराय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। कुबेराय नमः, पुष्पैः पूजयामि। कुबेराय नमः, धूपमाघ्रापयामि। कुबेराय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। कुबेराय नमः, कदलीफलानि निवेदयामि,

कुबेराय नमः, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

मनुजबाह्यविमानवरस्तुतम्
गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितम्
वररुचिं तमहमुपास्महे सदा॥

अगस्त्य देवदेवेश मर्त्यलोकहितेच्छया।
पूजयामि विधानेन प्रसन्नसुमुखो भव॥

ॐ कुबेराय नमः

ॐ धनदाय नमः

ॐ श्रीमते नमः

ॐ यक्षेशाय नमः

ॐ गुह्यकेश्वराय नमः

ॐ निधीशाय नमः

| | | |
|------------------------------|---------------------------|----|
| ॐ शङ्करसखाय नमः | ॐ एकपिनाकाय नमः | |
| ॐ महालक्ष्मीनिवासभुवे नमः | ॐ अलकाधीशाय नमः | |
| ॐ महापद्मनिधीशाय नमः | ॐ पौलस्त्याय नमः | |
| ॐ पूर्णाय नमः | ॐ नरवाहनाय नमः | १० |
| ॐ पद्मनिधीश्वराय नमः | ॐ कैलासशैलनिलयाय नमः | |
| ॐ शङ्खाख्यनिधिनाथाय नमः | ॐ राज्यदाय नमः | |
| ॐ मकराख्यनिधिप्रियाय नमः | ॐ रावणाग्रजाय नमः | ४० |
| ॐ सुकच्छपाख्यनिधीशाय नमः | ॐ चित्रचैत्ररथाय नमः | |
| ॐ मुकुन्दनिधिनायकाय नमः | ॐ उद्यानविहाराय नमः | |
| ॐ कुन्दाख्यनिधिनाथाय नमः | ॐ विहारसुकुतूहलाय नमः | |
| ॐ नीलनित्याधिपाय नमः | ॐ महोत्सहाय नमः | |
| ॐ महते नमः | ॐ महाप्राज्ञाय नमः | |
| ॐ वरनिधिदीपाय नमः | ॐ सदापुष्पकवाहनाय नमः | |
| ॐ पूज्याय नमः | ॐ सार्वभौमाय नमः | २० |
| ॐ लक्ष्मीसाम्राज्यदायकाय नमः | ॐ अङ्गनाथाय नमः | |
| ॐ इलपिलापत्याय नमः | ॐ सोमाय नमः | |
| ॐ कोशाधीशाय नमः | ॐ सौम्यादिकेश्वराय नमः | ५० |
| ॐ कुलोचिताय नमः | ॐ पुण्यात्मने नमः | |
| ॐ अश्वारूढाय नमः | ॐ पुरुहुतश्रियै नमः | |
| ॐ विश्ववन्द्याय नमः | ॐ सर्वपुण्यजनेश्वराय नमः | |
| ॐ विशेषज्ञाय नमः | ॐ नित्यकीर्तये नमः | |
| ॐ विशारदाय नमः | ॐ निधिवेत्रे नमः | |
| ॐ नलकूबरनाथाय नमः | ॐ लङ्काप्राक्तननायकाय नमः | |
| ॐ मणिग्रीवपित्रे नमः | ॐ यक्षिणीवृताय नमः | ३० |
| ॐ गूढमन्त्राय नमः | ॐ यक्षाय नमः | |
| ॐ वैश्रवणाय नमः | ॐ परमशान्तात्मने नमः | |
| ॐ चित्रलेखामनःप्रियाय नमः | ॐ यक्षराजे नमः | ६० |

ॐ यक्षिणीहृदयाय नमः
 ॐ किन्नरेश्वराय नमः
 ॐ किम्पुरुषनाथाय नमः
 ॐ खड्गायुधाय नमः
 ॐ वशिने नमः
 ॐ ईशानदक्षपार्श्वस्थाय नमः
 ॐ वायुवामसमाश्रयाय नमः
 ॐ धर्ममार्गनिरताय नमः
 ॐ धर्मसम्मुखसंस्थिताय नमः
 ॐ नित्येश्वराय नमः ७०
 ॐ धनाध्यक्षाय नमः
 ॐ अष्टलक्ष्म्याश्रितालयाय नमः
 ॐ मनुष्यधर्मिणे नमः
 ॐ सुकृतिने नमः
 ॐ कोषलक्ष्मीसमाश्रिताय नमः
 ॐ धनलक्ष्मीनित्यवासाय नमः
 ॐ धान्यलक्ष्मीनिवासभुवे नमः
 ॐ अष्टलक्ष्मीसदावासाय नमः
 ॐ गजलक्ष्मीस्थिरालयाय नमः
 ॐ राज्यलक्ष्मीजन्मगेहाय नमः ८०
 ॐ धैर्यलक्ष्मीकृपाश्रयाय नमः
 ॐ अखण्डैश्वर्यसंयुक्ताय नमः
 ॐ नित्यानन्दाय नमः
 ॐ सुखाश्रयाय नमः
 ॐ नित्यतृप्ताय नमः

ॐ निराशाय नमः
 ॐ निरुपद्रवाय नमः
 ॐ नित्यकामाय नमः
 ॐ निराकाङ्क्षाय नमः
 ॐ निरूपाधिकवासभुवे नमः ९०
 ॐ शान्ताय नमः
 ॐ सर्वगुणोपेताय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ सर्वसम्मताय नमः
 ॐ सर्वाणिकरुणापात्राय नमः
 ॐ सदानन्दकृपालयाय नमः
 ॐ गन्धर्वकुलसंसेव्याय नमः
 ॐ सौगन्धिककुसुमप्रियाय नमः
 ॐ स्वर्णनगरीवासाय नमः
 ॐ निधिपीठसमाश्रयाय नमः १००
 ॐ महामेरूत्तरस्थाय नमः
 ॐ महर्षिगणसंस्तुताय नमः
 ॐ तुष्टाय नमः
 ॐ शूर्पणखाज्येष्ठाय नमः
 ॐ शिवपूजारताय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ राजयोगसमायुक्ताय नमः
 ॐ राजशेखरपूज्याय नमः
 ॐ राजराजाय नमः

॥ नमस्कारः ॥

नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
नमस्तेऽस्तु जगन्मातः नमस्ते केशवप्रिये॥

महालक्ष्म्यै नमः, नमस्करोमि॥

॥ प्रार्थना ॥

दामोदरि नमस्तेऽस्तु नमस्त्रैलोक्यमातृके।
नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि॥

सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये।
धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥

यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु।
न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्।
सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया।
स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^{१६}
नाम संवत्सरे दक्षिनायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां शुभतिथौ
(इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{१७}
नक्षत्र ()^{१८} नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण
विशिष्टायाम् अस्यां षष्ठ्यां शुभतिथौ

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं प्रसाद-सिद्ध्यर्थम् अस्माकं
सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणाम् अभिवृद्ध्यर्थं
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्ट-
काम्यार्थसिद्ध्यर्थं मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां
ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां
सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं गो-भू-धन-धान्य-
पुत्र-पौत्रादि अनविच्छिन्न-सन्तति स्थिर-लक्ष्मी-कीर्ति-लाभ शत्रु-पराजयादि
सदभीष्ट-सिद्ध्यर्थं दिव्यज्ञान-सिद्ध्यर्थं

यावच्छक्ति-ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः कल्पोक्त-प्रकारेण श्री-वल्ली-
देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-पूजाराधनं करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

^{१६}पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^{१७}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{१८}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः, यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
कुरु घण्टारवं तत्र देवताऽऽह्वानलाञ्छनम्॥

॥ कलशपूजा ॥

(कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अभ्यर्च्य)

गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्यै नमः। सरस्वत्यै नमः। नर्मदायै नमः।
सिन्धवे नमः। कावेर्यै नमः।
सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्।)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

॥ मण्टप-पूजा ॥

- ॐ ह्रीं श्रीं मण्डूकादि-परतत्त्वात्म-पर्यन्त-पीठ-शक्ति-देवताभ्यो नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं शं शकुन्यै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं रं रेवत्यै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं पूं पूताय नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं मं महापूतायै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं निं निशीथिन्यै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं मां मालिन्यै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं शीं शीतलायै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं शुं शुद्धायै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं विं विश्वतोमुख्यै नमः।

षोडशोपचारपूजा

सिन्धूरारुणमिन्दुकान्तिवदनं केयूरहारादिभिः
 दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गादिसौख्यप्रदम्।
 अम्भोजाभयशक्तिकुक्कुटधरं रक्ताङ्गराकोञ्ज्वलं
 सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं
 श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् ध्यायामि।
 षड्वक्त्रं शिखिवाहनं त्रिनयनं चित्राम्बरालङ्कृतम्
 वज्रं शक्तिमसिं त्रिशूलमभयं खेटं धनुश्चक्रकम्।
 पाशं कुक्कुटमङ्कुशं च वरदं दोर्भिर्दधानं सदा
 ध्यायेदीप्सितसिद्धिदं शिवसुतं स्कन्दं सुराराधितम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं
 श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् आवाहयामि।

आवाहिता भव। संस्थापिता भव।
 सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव।
 अवकुण्ठिता भव। सुप्रीता भव।
 सुप्रसन्ना भव। वरदा भव।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्।
 तावत् त्वं प्रीतिभावेन दीपेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

देवदेवे महाराज प्रियेश्वर प्रजापते।
 आसनं दिव्यमीशान दास्येयं परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः आसनं समर्पयामि।

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दविग्रह।
 तस्मै ते शरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः पाद्यं समर्पयामि।

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
 तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

वेदानामपि वेद्याय देवानां देवतात्मने।
 आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः आचमनीयं समर्पयामि।

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
 तेजःपुष्टिकरं दिव्यं प्रतिगृह्णीष्व देवेश॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-स्सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
 पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः पञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि।

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः क्षीरस्नानं समर्पयामि।

भागीरथी यमुना चैव गौतमी च सरस्वती।
तासां सुसलिलमादाय करोमि त्वामभिषेचनम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः स्नानं समर्पयामि।
स्नानान्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः वस्त्रं समर्पयामि।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतात्मकम्।
उपवीतं प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

मुक्ता-माणिक्य-वैडूर्य-रत्न-हेमादि-निर्मितम्।
नानाभरणं दास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः नवमणि-मकुटादि
नानाभरणम् समर्पयामि।

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः गन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ता सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृह्यतां परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दार-पारिजाताञ्ज-केतक्युत्पल-पाटलैः ।

मल्लिका-जाति-वकुलैः पुष्पैस्त्वां पूजयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मल्लिकादि-सर्वर्तु-पुष्पमालाः
समर्पयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

| | |
|------------------------------|---------------------------|
| शरवणोद्भूताय नमः | - पादौ पूजयामि। |
| रौद्रेयाय नमः | - जङ्घे पूजयामि। |
| सहस्रपदे नमः | - जानुनी पूजयामि। |
| भयनाशनाय नमः | - ऊरू पूजयामि। |
| बालग्रहाच्छाटनाय नमः | - मेढ्रं पूजयामि। |
| भक्तपालनाय नमः | - गुह्यं पूजयामि। |
| गुणनिधये नमः | - कटिं पूजयामि। |
| महनीयाय नमः | - नाभिं पूजयामि। |
| सर्वाभीष्टप्रदाय नमः | - हृदयं पूजयामि। |
| विशालवक्षसे नमः | - वक्षस्थलं पूजयामि। |
| शक्तिधराय नमः | - हस्तान् पूजयामि। |
| अभयप्रदानाय नमः | - बाहून् पूजयामि। |
| नीलकण्ठ-तनयाय नमः | - कण्ठान् पूजयामि। |
| पतित-पावनाय नमः | - चुबुकानि पूजयामि। |
| पुरुष-श्रेष्ठाय नमः | - नासिकानि पूजयामि। |
| कमललोचनाय नमः | - लोचनानि पूजयामि। |
| पुण्यमूर्तये नमः | - श्रोत्राणि पूजयामि। |
| कस्तूरी-तिलकाञ्चित-फालाय नमः | - ललाटानि पूजयामि। |
| षडाननाय नमः | - मुखानि पूजयामि। |
| त्रिलोकगुरवे नमः | - ओष्ठानि पूजयामि। |
| सहस्रशीर्ष्णे नमः | - शिरांसि पूजयामि। |
| भस्मोद्धूलित-विग्रहाय नमः | - सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि। |

॥ षोडश-नामपूजा ॥

१. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः
२. ॐ स्कन्दाय नमः
३. ॐ अग्निभुवे नमः
४. ॐ बाहुलेयाय नमः
५. ॐ गाङ्गेयाय नमः
६. ॐ शरवणोद्भवाय नमः
७. ॐ कार्तिकेयाय नमः
८. ॐ कुमाराय नमः

९. ॐ षण्मुखाय नमः
१०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः
११. ॐ शक्तिधराय नमः
१२. ॐ गुहाय नमः
१३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः
१४. ॐ षण्मातुराय नमः
१५. ॐ क्रौञ्चभिन्ने नमः
१६. ॐ शिखिवाहनाय नमः

॥ सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

- ॐ स्कन्दाय नमः
- ॐ गुहाय नमः
- ॐ षण्मुखाय नमः
- ॐ फालनेत्रसुताय नमः
- ॐ प्रभवे नमः
- ॐ पिङ्गलाय नमः
- ॐ कृत्तिकासूनवे नमः
- ॐ शिखिवाहाय नमः
- ॐ द्विषड्भुजाय नमः
- ॐ द्विषण्णेत्राय नमः
- ॐ शक्तिधराय नमः
- ॐ पिशिताशप्रभञ्जनाय नमः
- ॐ तारकासुरसंहारिणे नमः
- ॐ रक्षोबलविमर्दनाय नमः
- ॐ मत्ताय नमः
- ॐ प्रमत्ताय नमः

१०

- ॐ उन्मत्ताय नमः
- ॐ सुरसैन्यसुरक्षकाय नमः
- ॐ देवसेनापतये नमः
- ॐ प्राज्ञाय नमः
- ॐ कृपालवे नमः
- ॐ भक्तवत्सलाय नमः
- ॐ उमासुताय नमः
- ॐ शक्तिधराय नमः
- ॐ कुमाराय नमः
- ॐ क्रौञ्चदारणाय नमः
- ॐ सेनानिने नमः
- ॐ अग्निजन्मने नमः
- ॐ विशाखाय नमः
- ॐ शङ्करात्मजाय नमः
- ॐ शिवस्वामिने नमः
- ॐ गणस्वामिने नमः

२०

३०

| | | |
|---------------------------|---------------------------|----|
| ॐ सर्वस्वामिने नमः | ॐ वटवे नमः | ६० |
| ॐ सनातनाय नमः | ॐ पटुवेषभृते नमः | |
| ॐ अनन्तमूर्तये नमः | ॐ पूष्णे नमः | |
| ॐ अक्षोभ्याय नमः | ॐ गभस्तये नमः | |
| ॐ पार्वतीप्रियनन्दनाय नमः | ॐ गहनाय नमः | |
| ॐ गङ्गासुताय नमः | ॐ चन्द्रवर्णाय नमः | |
| ॐ शरोद्भूताय नमः | ॐ कलाधराय नमः | |
| ॐ आहूताय नमः | ॐ मायाधराय नमः | |
| ॐ पावकात्मजाय नमः | ॐ महामायिने नमः | |
| ॐ जृम्भाय नमः | ॐ कैवल्याय नमः | |
| ॐ प्रजृम्भाय नमः | ॐ शङ्करात्मजाय नमः | ७० |
| ॐ उज्जृम्भाय नमः | ॐ विश्वयोनये नमः | |
| ॐ कमलासनसंस्तुताय नमः | ॐ अमेयात्मने नमः | |
| ॐ एकवर्णाय नमः | ॐ तेजोयोनये नमः | |
| ॐ द्विवर्णाय नमः | ॐ अनामयाय नमः | |
| ॐ त्रिवर्णाय नमः | ॐ परमेष्ठिने नमः | |
| ॐ सुमनोहराय नमः | ॐ परब्रह्मणे नमः | |
| ॐ चतुर्वर्णाय नमः | ॐ वेदगर्भाय नमः | |
| ॐ पञ्चवर्णाय नमः | ॐ विराड्भुताय नमः | |
| ॐ प्रजापतये नमः | ॐ पुलिन्दकन्याभर्त्रे नमः | |
| ॐ अहस्पतये नमः | ॐ महासारस्वतावृताय नमः | ८० |
| ॐ अग्निगर्भाय नमः | ॐ आश्रिताखिलदात्रे नमः | |
| ॐ शमीगर्भाय नमः | ॐ चोरघ्नाय नमः | |
| ॐ विश्वरेतसे नमः | ॐ रोगनाशनाय नमः | |
| ॐ सुरारिघ्ने नमः | ॐ अनन्तमूर्तये नमः | |
| ॐ हरिद्वर्णाय नमः | ॐ आनन्दाय नमः | |
| ॐ शुभकराय नमः | ॐ शिखण्डिने नमः | |

| | | |
|--------------------------|-----------------------|-----|
| ॐ कृतकेतनाय नमः | ॐ विरुद्धहत्रे नमः | |
| ॐ डम्भाय नमः | ॐ वीरघ्नाय नमः | |
| ॐ परमडम्भाय नमः | ॐ रक्तश्यामगलाय नमः | १०० |
| ॐ महाडम्भाय नमः | ॐ सुब्रह्मण्याय नमः | |
| ॐ वृषाकपये नमः | ॐ गुहाय नमः | |
| ॐ कारणोत्पत्ति-देहाय नमः | ॐ प्रीताय नमः | |
| ॐ कारणातीत-विग्रहाय नमः | ॐ ब्रह्मण्याय नमः | |
| ॐ अनीश्वराय नमः | ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः | |
| ॐ अमृताय नमः | ॐ वंशवृद्धिकराय नमः | |
| ॐ प्राणाय नमः | ॐ वेदवेद्याय नमः | |
| ॐ प्राणायामपरायणाय नमः | ॐ अक्षयफलप्रदाय नमः | |

॥ इति श्री सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ वल्ली अष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | |
|-------------------------|---------------------------|----|
| ॐ महावल्लभे नमः | ॐ दिव्यरूपायै नमः | |
| ॐ वन्द्यायै नमः | ॐ दारिद्र्यभयनाशिन्यै नमः | |
| ॐ वनवासायै नमः | ॐ देवस्तुतायै नमः | |
| ॐ वरलक्ष्म्यै नमः | ॐ दैत्यहर्त्र्यै नमः | |
| ॐ वरप्रदायै नमः | ॐ दोषहीनायै नमः | |
| ॐ वाणीस्तुतायै नमः | ॐ दयाम्बुधये नमः | |
| ॐ वीतमोहायै नमः | ॐ दुःखहर्त्र्यै नमः | |
| ॐ वामदेवसुतप्रियायै नमः | ॐ दुष्टदूरायै नमः | २० |
| ॐ वैकुण्ठतनयायै नमः | ॐ दुरितघ्न्यै नमः | |
| ॐ वर्यायै नमः | ॐ दुरासदायै नमः | |
| ॐ वनेचरसमादृतायै नमः | ॐ नाशहीनायै नमः | |
| ॐ दयापूर्णायै नमः | ॐ नागनुतायै नमः | |

ॐ नारदस्तुतवैभवायै नमः
 ॐ लवलीकुञ्जसम्भूतायै नमः
 ॐ ललितायै नमः
 ॐ ललनोत्तमायै नमः
 ॐ शान्तदोषायै नमः
 ॐ शर्मदात्र्यै नमः
 ॐ शरजन्मकुटुम्बिन्यै नमः
 ॐ पद्मिन्यै नमः
 ॐ पद्मवदनायै नमः
 ॐ पद्मनाभसुतायै नमः
 ॐ परायै नमः
 ॐ पूर्णरूपायै नमः
 ॐ पुण्यशीलायै नमः
 ॐ प्रियङ्गुवनपालिन्यै नमः
 ॐ सुन्दर्यै नमः
 ॐ सुरसंस्तुतायै नमः
 ॐ सुब्रह्मण्यकुटुम्बिन्यै नमः
 ॐ मान्यायै नमः
 ॐ मनोहरायै नमः
 ॐ मायायै नमः
 ॐ महेश्वरसुतप्रियायै नमः
 ॐ कुमार्यै नमः
 ॐ करुणापूर्णायै नमः
 ॐ कार्तिकेयमनोहरायै नमः
 ॐ पद्मनेत्रायै नमः
 ॐ परानन्दायै नमः
 ॐ पार्वतीसुतवल्लभायै नमः

३०

४०

५०

ॐ महादेव्यै नमः
 ॐ महामायायै नमः
 ॐ मल्लिकाकुसुमप्रियायै नमः
 ॐ चन्द्रवक्त्रायै नमः
 ॐ चारुरूपायै नमः
 ॐ चाम्पेयकुसुमप्रियायै नमः
 ॐ गिरिवासायै नमः
 ॐ गुणनिधये नमः
 ॐ गतावन्यायै नमः
 ॐ गुहप्रियायै नमः
 ॐ कलिहीनायै नमः
 ॐ कलारूपायै नमः
 ॐ कृत्तिकासुतकामिन्यै नमः
 ॐ गतदोषायै नमः
 ॐ गीतगुणायै नमः
 ॐ गङ्गाधरसुतप्रियायै नमः
 ॐ भद्ररूपायै नमः
 ॐ भगवत्यै नमः
 ॐ भाग्यदायै नमः
 ॐ भवहारिण्यै नमः
 ॐ भवहीनायै नमः
 ॐ भव्यदेहायै नमः
 ॐ भवात्मजमनोहरायै नमः
 ॐ सौम्यायै नमः
 ॐ सर्वेश्वर्यै नमः
 ॐ सत्यायै नमः
 ॐ साध्यै नमः

६०

७०

| | | | |
|-------------------------|----|--------------------------|-----|
| ॐ सिद्धसमर्चितायै नमः | | ॐ राज्ञ्यै नमः | |
| ॐ हानिहीनायै नमः | ८० | ॐ राजवरादृतायै नमः | |
| ॐ हरिसुतायै नमः | | ॐ नीतिज्ञायै नमः | |
| ॐ हरसूनुमनःप्रियायै नमः | | ॐ निर्मलायै नमः | |
| ॐ कल्याण्यै नमः | | ॐ नित्यायै नमः | |
| ॐ कमलायै नमः | | ॐ नीलकण्ठसुतप्रियायै नमः | |
| ॐ कल्यायै नमः | | ॐ शिवरूपायै नमः | १०० |
| ॐ कुमारसुमनोहरायै नमः | | ॐ सुधाकारायै नमः | |
| ॐ जन्महीनायै नमः | | ॐ शिखिवाहनवल्लभायै नमः | |
| ॐ जन्महृत्र्यै नमः | | ॐ व्याधात्मजायै नमः | |
| ॐ जनार्दनसुतायै नमः | | ॐ व्याधिहृत्र्यै नमः | |
| ॐ जयायै नमः | ९० | ॐ विविधागमसंस्तुतायै नमः | |
| ॐ रमायै नमः | | ॐ हर्षदात्र्यै नमः | |
| ॐ रामायै नमः | | ॐ हरिभवायै नमः | |
| ॐ रम्यरूपायै नमः | | ॐ हरसूनुप्रियङ्गनायै नमः | |

॥ इति श्री वल्लभष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | | |
|-------------------------|--|--------------------------|----|
| ॐ देवसेनायै नमः | | ॐ दिव्यपङ्कजधारिण्यै नमः | |
| ॐ देवलोकजनन्यै नमः | | ॐ दुःस्वप्ननाशिन्यै नमः | १० |
| ॐ दिव्यसुन्दर्यै नमः | | ॐ दुष्टशमन्यै नमः | |
| ॐ देवपूज्यायै नमः | | ॐ दोषवर्जितायै नमः | |
| ॐ दयारूपायै नमः | | ॐ पीताम्बरायै नमः | |
| ॐ दिव्याभरणभूषितायै नमः | | ॐ पद्मवासायै नमः | |
| ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः | | ॐ परानन्दायै नमः | |
| ॐ देव्यै नमः | | ॐ परात्परायै नमः | |

| | | | |
|---------------------------|----|----------------------|----|
| ॐ पूर्णायै नमः | | ॐ वज्रिजातायै नमः | |
| ॐ परमकल्याण्यै नमः | | ॐ वरप्रदायै नमः | |
| ॐ प्रकटायै नमः | | ॐ विशाखकान्तायै नमः | |
| ॐ पापनाशिन्यै नमः | २० | ॐ विमलायै नमः | |
| ॐ प्राणेश्वर्यै नमः | | ॐ विशालाक्ष्यै नमः | |
| ॐ परायै शक्त्यै नमः | | ॐ सत्यसन्धायै नमः | |
| ॐ परमायै नमः | | ॐ सत्प्रभावायै नमः | ५० |
| ॐ परमेश्वर्यै नमः | | ॐ सिद्धिदायै नमः | |
| ॐ महावीर्यायै नमः | | ॐ स्कन्दवल्लभायै नमः | |
| ॐ महाभोगायै नमः | | ॐ सुरेश्वर्यै नमः | |
| ॐ महापूज्यायै नमः | | ॐ सर्ववन्द्यायै नमः | |
| ॐ महाबलायै नमः | | ॐ सुन्दर्यै नमः | |
| ॐ माहेन्द्र्यै नमः | | ॐ साम्यवर्जितायै नमः | |
| ॐ महत्यै नमः | ३० | ॐ हतदैत्यायै नमः | |
| ॐ मायायै नमः | | ॐ हानिहीनायै नमः | |
| ॐ मुक्ताहारविभूषितायै नमः | | ॐ हर्षदात्र्यै नमः | |
| ॐ ब्रह्मानन्दायै नमः | | ॐ हतासुरायै नमः | ६० |
| ॐ ब्रह्मरूपायै नमः | | ॐ हितकर्त्र्यै नमः | |
| ॐ ब्रह्माण्यै नमः | | ॐ हीनदोषायै नमः | |
| ॐ ब्रह्मपूजितायै नमः | | ॐ हेमाभायै नमः | |
| ॐ कार्तिकेयप्रियायै नमः | | ॐ हेमभूषणायै नमः | |
| ॐ कान्तायै नमः | | ॐ लयहीनायै नमः | |
| ॐ कामरूपायै नमः | | ॐ लोकवन्द्यायै नमः | |
| ॐ कलाधरायै नमः | ४० | ॐ ललितायै नमः | |
| ॐ विष्णुपूज्यायै नमः | | ॐ ललनोत्तमायै नमः | |
| ॐ विश्ववेद्यायै नमः | | ॐ लम्बवामकरायै नमः | |
| ॐ वेदवेद्यायै नमः | | ॐ लभ्यायै नमः | ७० |

| | | |
|--------------------------|----------------------------|-----|
| ॐ लज्जाढ्यायै नमः | ॐ महामहिमशालिन्यै नमः | १० |
| ॐ लाभदायिन्यै नमः | ॐ मदहीनायै नमः | |
| ॐ अचिन्त्यशक्त्यै नमः | ॐ मातृपूज्यायै नमः | |
| ॐ अचलायै नमः | ॐ मन्मथारिसुतप्रियायै नमः | |
| ॐ अचिन्त्यरूपायै नमः | ॐ गुणपूर्णायै नमः | |
| ॐ अक्षरायै नमः | ॐ गणाराध्यायै नमः | |
| ॐ अभयायै नमः | ॐ गौरीसुतमनःप्रियायै नमः | |
| ॐ अम्बुजाक्ष्यै नमः | ॐ गतदोषायै नमः | |
| ॐ अमराराध्यायै नमः | ॐ गतावद्यायै नमः | |
| ॐ अभयदायै नमः | ॐ गङ्गाजातकुटुम्बिन्यै नमः | ८० |
| ॐ असुरभीतिदायै नमः | ॐ चतुरायै नमः | १०० |
| ॐ शर्मदायै नमः | ॐ चन्द्रवदनायै नमः | |
| ॐ शक्रतनयायै नमः | ॐ चन्द्रचूडभवप्रियायै नमः | |
| ॐ शङ्करात्मजवल्लभायै नमः | ॐ रम्यरूपायै नमः | |
| ॐ शुभायै नमः | ॐ रमावन्द्यायै नमः | |
| ॐ शुभप्रदायै नमः | ॐ रुद्रसूनुमनःप्रियायै नमः | |
| ॐ शुद्धायै नमः | ॐ मङ्गलायै नमः | |
| ॐ शरणागतवत्सलायै नमः | ॐ मधुरालाप्यायै नमः | |
| ॐ मयूरवाहनदयितायै नमः | ॐ महेशतनयप्रियायै नमः | |

॥ इति श्री देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः
नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

दशाङ्गं च पटीरं च एला-कुङ्कुम-संयुतम्।

धूपं गृहाण देवेश सुब्रह्मण्य नमोऽस्तु ते॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः धूपम् आघ्रापयामि।

इन्द्रर्कवहिनेत्राय देवसेनापतये नमः।
घृतवर्तिसुसंयुक्तं दीपोऽयम् अवलोक्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः दीपं दर्शयामि।
धूप-दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेक-भक्षणम्।
निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्॥१॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः () महानैवेद्यं निवेदयामि।
मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं
समर्पयामि। पुनः हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। पाद-प्रक्षालनं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं देवदेव सूर्यकोटि-समप्रभ।
अहं भक्त्या प्रदास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि।
पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि।

सर्व-पापौघ-विध्वंस साक्षाद्धर्मस्वरूपक।
पुष्पाञ्जलिं प्रदास्यामि गृहाण भुवनेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

षण्मुखं पार्वतीपुत्रं क्रौञ्चशैलविमर्दनम्।
देवसेनापतिं देवं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

तारकासुर-हन्तारं मयूरोपरि संस्थितम्।
शक्तिपाणिं च देवेशं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः प्रदक्षिण-नमस्कारान्
समर्पयामि।

नमः केकिने शक्तये चापि तुभ्यम्
नमश्छाग तुभ्यं नमः कुक्कुटाय।
नमः सिन्धवे सिन्धुदेशाय तुभ्यम्
पुनः स्कन्दमूर्ते नमस्ते नमोऽस्तु॥

जयाऽऽनन्दभूमन् जयापारधामन्
जयामोघकीर्ते जयाऽऽनन्दमूर्ते।
जयाऽऽनन्दसिन्धो जयाशेषबन्धो
जय त्वं सदा मुक्तिदानेशसूनो॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः छत्रं समर्पयामि।
चामरयुगलं वीजयामि।

दर्पणं दर्शयामि। गीतं श्रावयामि।

नृत्तं दर्शयामि। आन्दोलिकाम् आरोहयामि।

गजम् आरोहयामि। अश्वम् आरोहयामि।

रथम् आरोहयामि। समस्त-राजोपचार-देवोपचार-पूजाः समर्पयामि।

अनेन पूजनेन श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा

बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै

नारायणायेति

समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ श्री तुलसी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सौद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^{१९} नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद-ऋतौ वृश्चिकमासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां
शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु)
वासरयुक्तायाम् ()^{२०} नक्षत्र ()^{२१} नाम योग () करण युक्तायां च एवं
गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ
अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं श्रीमहाविष्णु-तुलसी-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि
षोडशोपचार श्रीमहाविष्णु-तुलसी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च
करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

^{१९}पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^{२०}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{२१}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽष्यापो यजूऽष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।
(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेच्च तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्।
प्रसन्नां पद्मकल्हारां वरदाभ्यां चतुर्भुजाम्॥

किरीटहारकेयूरकुण्डलाद्यैर्विभूषिताम् ।
धवलां शुकसंवीतां पद्मासननिषेविताम्।
देवीं त्रैलोक्यजननीं सर्वलोकैकपावनीम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री महाविष्णुं तुलसीं च ध्यायामि।
सर्वदेवमयि देवि सर्वदे विष्णुवल्लभे।
आगच्छ मम गेहेऽस्मिन् नित्यं सन्निहिता भव॥
अस्मिन् बिम्बे श्री महाविष्णुं तुलसीं च आवाहयामि।

रत्नसिंहासनं चारु भुक्तिमुक्तिफलप्रदे।
मया दत्तं महादेवि सङ्गृहाण सुरार्चिते॥

आसनं समर्पयामि।

नानागन्धसुपुष्पैश्च वासितं सुरवन्दिते।
पाद्यं गृहाण देवि त्वं सर्वकामफलप्रदे॥

पाद्यं समर्पयामि।

गङ्गोदकं समानीतं सुवर्णकलशस्थितम्।
तुलसि त्वं गृहाणेदं अर्घ्यमैश्वर्यदायकम्॥

अर्घ्यं समर्पयामि।

सर्वमङ्गलदेवेशि नवरत्नैर्विभूषिते।
मया दत्तमिदं तोयं गृहाणाऽऽचमनीयकम्॥

आचमनीयं समर्पयामि।

पूर्णेन्दुबिम्बसदृशं दधिखण्डघृतं मधु।
मधुपर्कं मयाऽऽनीतं गृहाण परमेश्वरि॥
मधुपर्कं समर्पयामि।

दधिक्षीरघृतं चैव शर्कराफलसंयुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं लोकानुग्रहकारिणि॥
पञ्चामृतं समर्पयामि।

गङ्गायमुनयोस्तोयैरानीतं निर्मलं शुभम्।
शुद्धोदकिमिदं देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

क्षौमं काञ्चनसङ्काशमिदं शुभ्रं मनोहरम्।
वस्त्रयुग्मं शुभे देवि स्वीकुरुष्वाम्बुजेक्षणे॥
वस्त्रं समर्पयामि।

राजतं ब्रह्मसूत्रं च काञ्चनं चोत्तरीयकम्।
गृहाण सर्ववरदे पद्मपत्रनिभेक्षणे॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

किरीटहारकटकान् केयूरान् कुण्डलान् शुभान्।
नूपुरोदरबद्धं च भूषणानि समर्पये॥
आभारणानि समर्पयामि।

चन्दनागरुकस्तूरी कर्पूरेण च संयुतम्।
विलेपनं ददामि त्वं गृहाण तुलसि शुभे॥
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतान् धवलान् दिव्यान् शालीयान्स्तण्डुलान् शुभान्।
अक्षतान् चार्पये देवि बृन्दास्थानोद्भवैश्वरि॥

अक्षतान् समर्पयामि।

मल्लिका-कुन्द-मन्दार-जाजी-वकुल-चम्पकैः।
शतपत्रैश्च कल्हारैः पूजयामि महेश्वरि॥
पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ तुलसीदेव्यै नमः — पादौ पूजयामि
२. बृन्दावनस्थायै नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. पद्मपत्रनिभेक्षणायै नमः — जङ्घे पूजयामि
४. पद्मकोटिसमप्रभायै नमः — ऊरू पूजयामि
५. हरिप्रियायै नमः — जानुनी पूजयामि
६. कुङ्कुमाङ्कितगात्रायै नमः — कटिं पूजयामि
७. सुरवन्दितायै नमः — नाभिं पूजयामि
८. लोकानुग्रहकारिण्यै नमः — उदरं पूजयामि
९. त्रैलोक्यजनन्यै नमः — हृदयं पूजयामि
१०. पद्मप्रियायै नमः — हस्तान् पूजयामि
११. इन्दिराख्यायै नमः — भुजान् पूजयामि
१२. कम्बुकण्ठायै नमः — कण्ठं पूजयामि
१३. कल्मषघ्न्यै नमः — कर्णौ पूजयामि
१४. वरप्रदायै नमः — मुखं पूजयामि
१५. आश्रितरक्षकायै नमः — शिरः पूजयामि
१६. अभीष्टदायै नमः — सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ श्री कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| ॐ श्रीकृष्णाय नमः | ॐ देवकीनन्दनाय नमः |
| ॐ कमलानाथाय नमः | ॐ श्रीशाय नमः |
| ॐ वासुदेवाय नमः | ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः |
| ॐ सनातनाय नमः | ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः |
| ॐ वसुदेवात्मजाय नमः | ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः |
| ॐ पुण्याय नमः | ॐ पूतनाजीवितहराय नमः |
| ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः | ॐ शकटासुरभञ्जनाय नमः |
| ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः | ॐ नन्दव्रजजनानन्दिने नमः |
| ॐ यशोदावत्सलाय नमः | ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः |
| ॐ हरये नमः | ॐ नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः |
| ॐ चतुर्भुजात्तचक्रासि- | ॐ नवनीतनटाय नमः |
| गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः | ॐ अनघाय नमः |

| | | | |
|----------------------------|----|-----------------------------------|----|
| ॐ नवनीतनवाहाराय नमः | | ॐ अजाय नमः | |
| ॐ मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः | | ॐ निरञ्जनाय नमः | |
| ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः | | ॐ कामजनकाय नमः | |
| ॐ त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः | | ॐ कञ्जलोचनाय नमः | |
| ॐ शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः | | ॐ मधुघ्ने नमः | |
| ॐ गोविन्दाय नमः | | ॐ मथुरानाथाय नमः | |
| ॐ योगिनां पतये नमः | ३० | ॐ द्वारकानायकाय नमः | |
| ॐ वत्सवाटचराय नमः | | ॐ बलिने नमः | |
| ॐ अनन्ताय नमः | | ॐ बृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः | |
| ॐ धेनुकासुरमर्दनाय नमः | | ॐ तुलसीदामभूषणाय नमः | ६० |
| ॐ तृणीकृततृणावर्ताय नमः | | ॐ स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः | |
| ॐ यमलार्जुनभञ्जनाय नमः | | ॐ नरनारायणात्मकाय नमः | |
| ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः | | ॐ कुञ्जाकृष्णाम्बरधराय नमः | |
| ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः | | ॐ मायिने नमः | |
| ॐ गोपगोपीश्वराय नमः | | ॐ परमपूरुषाय नमः | |
| ॐ योगिने नमः | | ॐ | |
| ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः | ४० | मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदाय | |
| ॐ इलापतये नमः | | नमः | |
| ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः | | ॐ संसारवैरिणे नमः | |
| ॐ यादवेन्द्राय नमः | | ॐ कंसारये नमः | |
| ॐ यदूद्वहाय नमः | | ॐ मुरारये नमः | |
| ॐ वनमालिने नमः | | ॐ नरकान्तकाय नमः | ७० |
| ॐ पीतवाससे नमः | | ॐ अनादिब्रह्मचारिणे नमः | |
| ॐ पारिजातापहारकाय नमः | | ॐ कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः | |
| ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः | | ॐ शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः | |
| ॐ गोपालाय नमः | | ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नमः | |
| ॐ सर्वपालकाय नमः | ५० | ॐ विदुराक्रूरवरदाय नमः | |

| | | | |
|------------------------------|----|------------------------------|-----|
| ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः | | ॐ कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्री- | |
| ॐ सत्यवाचे नमः | | पदाम्बुजाय नमः | |
| ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः | | ॐ दामोदराय नमः | |
| ॐ सत्यभामारताय नमः | | ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः | |
| ॐ जयिने नमः | ८० | ॐ दानवेन्द्रविनाशकाय नमः | |
| ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः | | ॐ नारायणाय नमः | |
| ॐ विष्णवे नमः | | ॐ परब्रह्मणे नमः | |
| ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः | | ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः | १०० |
| ॐ जगद्गुरवे नमः | | ॐ जलक्रीडासमासक्तगोपी- | |
| ॐ जगन्नाथाय नमः | | वस्त्रापहारकाय नमः | |
| ॐ वेणुनादविशारदाय नमः | | ॐ पुण्यश्लोकाय नमः | |
| ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नमः | | ॐ तीर्थपादाय नमः | |
| ॐ बाणासुरकरान्तकाय नमः | | ॐ वेदवेद्याय नमः | |
| ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः | | ॐ दयानिधये नमः | |
| ॐ बर्हिर्बर्हावतंसकाय नमः | ९० | ॐ सर्वतीर्थात्मकाय नमः | |
| ॐ पार्थसारथये नमः | | ॐ सर्वग्रहरूपिणे नमः | |
| ॐ अव्यक्ताय नमः | | ॐ परात्पराय नमः | १०८ |
| ॐ गीतामृतमहोदधये नमः | | | |

॥ तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | |
|--------------------------|-----------------------------|----|
| ॐ तुलस्यै नमः | ॐ निर्मलायै नमः | |
| ॐ पावन्यै नमः | ॐ सर्वपूजितायै नमः | |
| ॐ पूज्यायै नमः | ॐ सत्यै नमः | |
| ॐ वृन्दावननिवासिन्यै नमः | ॐ पतिव्रतायै नमः | १० |
| ॐ ज्ञानदात्र्यै नमः | ॐ वृन्दायै नमः | |
| ॐ ज्ञानमय्यै नमः | ॐ क्षीराब्धिमतनोद्भवायै नमः | |

ॐ कृष्णवर्णायै नमः
 ॐ रोगहृत्र्यै नमः
 ॐ त्रिवर्णायै नमः
 ॐ सर्वकामदायै नमः
 ॐ लक्ष्मीसख्यै नमः
 ॐ नित्यशुद्धायै नमः
 ॐ सुदत्यै नमः
 ॐ भूमिपावन्यै नमः २०
 ॐ हरिद्रात्रैकनिरतायै नमः
 ॐ हरिपादकृतालयायै नमः
 ॐ पवित्ररूपिण्यै नमः
 ॐ धन्यायै नमः
 ॐ सुगन्धिन्यै नमः
 ॐ अमृतोद्भवायै नमः
 ॐ सुरूपायै आरोग्यदायै नमः
 ॐ तुष्टायै नमः
 ॐ शक्तित्रितयरूपिण्यै नमः
 ॐ देव्यै नमः ३०
 ॐ देवर्षिसंस्तुत्यायै नमः
 ॐ कान्तायै नमः
 ॐ विष्णुमनःप्रियायै नमः
 ॐ भूतवेतालभीतिघ्न्यै नमः
 ॐ महापातकनाशिन्यै नमः
 ॐ मनोरथप्रदायै नमः
 ॐ मेधायै नमः
 ॐ कान्त्यै नमः
 ॐ विजयदायिन्यै नमः

ॐ शङ्खचक्रगदापद्मधारिण्यै नमः
 ४०
 ॐ कामरूपिण्यै नमः
 ॐ अपवर्गप्रदायै नमः
 ॐ श्यामायै नमः
 ॐ कृशमध्यायै नमः
 ॐ सुकेशिन्यै नमः
 ॐ वैकुण्ठवासिन्यै नमः
 ॐ नन्दायै नमः
 ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः
 ॐ कोकिलस्वरायै नमः
 ॐ कपिलायै नमः ५०
 ॐ निम्नगाजन्मभूम्यै नमः
 ॐ आयुष्यदायिन्यै नमः
 ॐ वनरूपायै नमः
 ॐ दुःखनाशिन्यै नमः
 ॐ अविकारायै नमः
 ॐ चतुर्भुजायै नमः
 ॐ गरुत्मद्वाहनायै नमः
 ॐ शान्तायै नमः
 ॐ दान्तायै नमः
 ॐ विघ्ननिवारिण्यै नमः ६०
 ॐ श्रीविष्णुमूलिकायै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः
 ॐ महाशक्त्यै नमः
 ॐ महामायायै नमः

| | | |
|----------------------------------|-----------------------------|-----|
| ॐ लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः | ॐ नन्दनसंस्थितायै नमः | |
| ॐ सुमङ्गल्यर्चनप्रीतायै नमः | ॐ सर्वतीर्थमय्यै नमः | |
| ॐ सौमङ्गल्यविवर्धिन्यै नमः | ॐ मुक्तायै नमः | १० |
| ॐ चातुर्मास्योत्सवाराध्यायै नमः | ॐ लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः | |
| ॐ विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः ७० | ॐ प्रातर्दृश्यायै नमः | |
| ॐ उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः | ॐ ग्लानिहृत्र्यै नमः | |
| ॐ सर्वदेवप्रपूजितायै नमः | ॐ वैष्णव्यै नमः | |
| ॐ गोपीरतिप्रदायै नमः | ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः | |
| ॐ नित्यायै नमः | ॐ नारायण्यै नमः | |
| ॐ निर्गुणायै नमः | ॐ सन्ततिदायै नमः | |
| ॐ पार्वतीप्रियायै नमः | ॐ मूलमृद्धारिपावन्यै नमः | |
| ॐ अपमृत्युहरायै नमः | ॐ अशोकवनिकासंस्थायै नमः | |
| ॐ राधाप्रियायै नमः | ॐ सीताध्यातायै नमः | १०० |
| ॐ मृगविलोचनायै नमः | ॐ निराश्रयायै नमः | |
| ॐ अम्लानायै नमः ८० | ॐ गोमतीसरयूतीररोपितायै नमः | |
| ॐ हंसगमनायै नमः | ॐ कुटिलालकायै नमः | |
| ॐ कमलासनवन्दितायै नमः | ॐ अपात्रभक्ष्यपापघ्न्यै नमः | |
| ॐ भूलोकवासिन्यै नमः | ॐ दानतोयविशुद्धिदायै नमः | |
| ॐ शुद्धायै नमः | ॐ श्रुतिधारणसुप्रीतायै नमः | |
| ॐ रामकृष्णादिपूजितायै नमः | ॐ शुभायै नमः | |
| ॐ सीतापूज्यायै नमः | ॐ सर्वेष्टदायिन्यै नमः | १०८ |
| ॐ राममनःप्रियायै नमः | | |

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः नानाविध परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

गुग्गुलुर्गोधृतं चैव दशाङ्गं सुमनोहरम्।
धूपं गृहाण वरदे सर्वाभीष्टफलप्रदे॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम् षड्रसोपेतं फलसूपसमन्वितम्।
सघृतं समधुक्षीरं गृहाण तुलसीश्वरि॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः () निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं सुमाङ्गल्यं दिव्यज्योतिसमन्वितम्।
अज्ञानघ्ने गृहाण त्वं ज्ञानमार्गप्रदायिनि॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।
ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।
ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।

स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि

प्रकृष्टपापनाशाय प्रकृष्टफलसिद्धये।

प्रदक्षिणं करोमि त्वां सर्वाभीष्टफलप्रदे॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं विद्या ज्ञानं यशः सुखम्।

देहि देहि ममाभीष्टं प्रदक्षिणकृतात्तमे॥

नमस्ते तुलसि देवि सर्वाभीष्टफलप्रदे।

नमस्ते त्रिजगद्वन्द्ये नमस्ते लोकरक्षिके॥

बृन्दावनस्थिते देवि दिव्यभोगप्रदे शुभे।

पुष्पाञ्जलिं प्रदास्यामि स्वीकुरुष्वाम्बुजेक्षणे॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान्
समर्पयामि।

छत्रं समर्पयामि। चामरं समर्पयामि। गीतं श्रावयामि। व्यजनं वीजयामि।

नृत्यं दर्शयामि। वाद्यं घोषयामि। आन्दोलिकां समर्पयामि।

अश्वान् आरोपयामि। गजान् आरोपयामि।

समस्त राजोपचारान् समर्पयामि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अद्य पूर्वोक्त एवङ्गुण
विशेषेण विशिष्टायाम् अस्यां द्वादश्यां शुभतिथौ अद्य कृत
महाविष्णु-तुलसी-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं पायसपात्रदानं च करिष्ये॥

तुलस्यै तु नमस्तुभ्यं नमस्ते फलदायिनि।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥

तुलस्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

लक्ष्मीपतिप्रिये देवि तुलसि दिव्यरूपिणि।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥

तुलस्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

सर्वपापहरे देवि आश्रिताभीष्टदायिनि।
मया दत्तं गृहाणेदं सुप्रीता वरदा भव॥

तुलस्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

अनेन अर्घ्यप्रदानेन श्री महाविष्णु-तुलसी प्रीयेताम्॥

॥ प्रार्थना ॥

देहि मे विजयं देहि विद्यां देहि महेश्वरि।
त्वामिति प्रार्थये नित्यं शीघ्रमेव फलं कुरु॥

॥ पायसपात्रदानम् ॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम्। गन्धादि
सकलाराधनैः स्वर्चितम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

बृन्दावन-द्वादशी-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण महाविष्णु-तुलसी-पूजायां
यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं इदम् सपायसं पात्रम् सदक्षिणाकं

सताम्बूलं श्री महाविष्णु-तुलसी-प्रीतिम् कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय
सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री महाविष्णु-तुलसी प्रीयेताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥
अस्मात् बिम्बात् श्री महाविष्णु-तुलसीं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)
अनया पूजया श्री महाविष्णु-तुलसी प्रीयेताम्।
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ बृन्दावनपूजा (तुलसी-विष्णु-पूजा) ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।
(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)
ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा
श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः
निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
 अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 प्रार्थनाः समर्पयामि।
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

शुक्लाम्बरधरं + शान्तये + श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे + तिथौ तुलसी
 महाविष्णु प्रसादसिद्धयर्थं तुलसी महाविष्णुपूजां करिष्ये। इति संकल्प्य
 विघ्नेशमुद्वास्य कलशपूजां कृत्वा, तुलसी विष्णुं च ध्यायेत्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य
 ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
 अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
 शार्वरि-नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ वृश्चिक-मासे कृष्ण-पक्षे
 द्वादश्यां शुभतिथौ गुरु-वासरयुक्तायां स्वाती-नक्षत्रयुक्तायाम्
 सिद्धि(►०७:३०)/ व्यतीपात-योगयुक्तायां बव-करणयुक्तायाम्
 एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां द्वादश्यां शुभतिथौ
 अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य

ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
 पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
 जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
 रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
 सकल-पापक्षयार्थं श्रीमहाविष्णु-तुलसी-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि
 षोडशोपचार-श्रीमहाविष्णु-तुलसी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च
 करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
 (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
 ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
 नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
 मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
 नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।
 (इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
 गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायामि तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्।
 प्रसन्नवदनाम्भोजां वरदामभयप्रदाम्॥

तुलसीं ध्यायामि

ध्यायामि विष्णुं वरदं तुलसीप्रियवल्लभम्।
 पीताम्बरं पद्मनेत्रं वासुदेवं वरप्रदम्॥

महाविष्णुं ध्यायामि।

वासुदेव प्रिये देवि सर्वदेव स्वरूपिणि।
 आगच्छ पूजाभवने सदा सन्निहिता भव॥

आगच्छागच्छ देवेश तेजोराशे जगत्पते।
 क्रियमाणां मया पूजां वासुदेव गृहाण भोः॥

-तुलसीविष्णू आवाहयामि

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।
 आसनं कृपया विष्णो तुलसि प्रतिगृह्यताम्॥
 तुलसी विष्णुभ्यां नमः - आसनं समर्पयामि।

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो वासुदेव मया हतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्श पाद्वार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नानानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्।
पाद्यं गृहाण तुलसि पापं मे विनिवारय॥

(पाद्यं)

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते कमलापते।
नमस्ते सर्वविनुत गृहाणायै नमोऽस्तु ते॥

अयं गृहाण देवि त्वं अच्युतप्रियवल्लभे।
अक्षतादिसमायुक्तं अक्षय्यफलदायिनि॥

(अर्घ्यं)

कर्पूरवासितं तोयं गङ्गादिभ्यः समाहृतम्।
आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं च भक्तितः॥

गृहाणाचमनार्थाय विष्णुवक्षः स्थलालये।
स्वच्छं तोयमिदं देवि सर्वपापविनाशिनि ॥

(आचमनीयम्)

दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्।
गृहाण विष्णो वरद लक्ष्मीकान्त नमोऽस्तु ते॥

मधुपर्कं गृहाणेमं मधूसूदनवल्लभे।
मधुदध्याज्यं संयुक्तं महापापविनाशिनि ॥

(मधुपर्कं)

मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितम्।
पञ्चामृतं गृहाणेदं भक्तानामिष्टदायक॥

पञ्चामृतं गृहाणेदं पञ्चपातकनाशिनि ।
दधिक्षीरसमायुक्तं दामोदरकुटुम्बिनि॥

(पश्चामृतम्)

गङ्गा कृष्णा च यमुना नर्मदा च सरस्वती।
तुङ्गा गोदावरी वेणी क्षिप्रा सिन्धुर्घटप्रभा॥

तापी पयोष्णी सरयूस्ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्श स्नानीयं गृह्यतां हरे ॥

गङ्गागोदावरीकृष्णातुङ्गादिभ्यः समाहृतम्।
सलिलं देवि तुलसि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

(स्नानं)

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलङ्घानिवारणे।
वाससी प्रतिगृह्णातु लक्ष्मीजानिरधोक्षजः॥

पीताम्बरमिदं दिव्यं पातकव्रजनाशिनि।
पीताम्बरप्रिये देवि परिधत्स्व परात्परे॥

(वस्त्रम्)

भूषणानि वराहाणि गृहीतं तुलसीश्वर।
किरीटहारकेयूरकटकानि हरेऽमृते॥

(आभरणानि)

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम्।
गन्ध स्वीकुरुतं देवौ रमेशहरिवल्लभे॥

(गन्धान्)

मल्लिकाकुन्दमन्दारजाजीवकुल चम्पकैः।
शतपत्रैश्च कल्हारैः अर्चये तुलसीहरी॥

(पुष्पाणि)

॥ अङ्गपूजा ॥

| | | |
|------------------|--------------------|---------------------------|
| बृन्दायै | अच्युताय नमः | - पादौ पूजयामि। |
| तुलस्यै | अनन्ताय नमः | - गुल्फौ पूजयामि। |
| जनार्दनप्रियायै | तुलसीकान्ताय नमः | - जङ्घे पूजयामि। |
| जन्मनाशिन्यै | गङ्गाधरपदाय नमः | - जानुनी पूजयामि। |
| उत्तमायै | उत्तमाय नमः | - ऊरू पूजयामि। |
| कमलाक्ष्यै | कमलाक्षाय नमः | - कटिं पूजयामि। |
| नारायण्यै | नारायणाय नमः | - नाभिं पूजयामि। |
| उन्नतायै | उन्नताय नमः | - उदरं पूजयामि। |
| वरदायै | वरदाय नमः | - वक्षः पूजयामि। |
| स्तव्यायै | स्तव्याय नमः | - स्तनौ कौस्तुभं पूजयामि। |
| चतुर्भुजायै | चतुर्भुजाय नमः | - भुजान् पूजयामि। |
| कम्बुकण्ठ्यै | वनमालिने नमः | - कण्ठं पूजयामि। |
| कल्मषघ्न्यै | कल्मषघ्नाय नमः | - कर्णौ पूजयामि। |
| मुनिप्रियायै | मुनिप्रियाय नमः | - नेत्रे पूजयामि। |
| शुभप्रदायै | शुभप्रदाय नमः | - शिरः पूजयामि। |
| सर्वार्थदायिन्यै | सर्वार्थदायिने नमः | - सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि। |

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|----------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | ८. ॐ वामनाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | ९. ॐ श्रीधराय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १०. ॐ हृषीकेशाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | ११. ॐ पद्मनाभाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १२. ॐ दामोदराय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |

| | |
|------------------------|-----------------------|
| १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| १८. ॐ अधोक्षजाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १९. ॐ नृसिंहाय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | |
|-----------------------------|---------------------------|----|
| ॐ तुलस्यै नमः | ॐ भूमिपावन्यै नमः | २० |
| ॐ पावन्यै नमः | ॐ हरिद्रात्रैकनिरतायै नमः | |
| ॐ पूज्यायै नमः | ॐ हरिपादकृतालयायै नमः | |
| ॐ वृन्दावननिवासिन्यै नमः | ॐ पवित्ररूपिण्यै नमः | |
| ॐ ज्ञानदात्र्यै नमः | ॐ धन्यायै नमः | |
| ॐ ज्ञानमय्यै नमः | ॐ सुगन्धिन्यै नमः | |
| ॐ निर्मलायै नमः | ॐ अमृतोद्भवायै नमः | |
| ॐ सर्वपूजितायै नमः | ॐ सुरूपायै आरोग्यदायै नमः | |
| ॐ सत्यै नमः | ॐ तुष्टायै नमः | |
| ॐ पतिव्रतायै नमः | ॐ शक्तित्रितयरूपिण्यै नमः | १० |
| ॐ वृन्दायै नमः | ॐ देव्यै नमः | ३० |
| ॐ क्षीराब्धिमथनोद्भवायै नमः | ॐ देवर्षिसंस्तुत्यायै नमः | |
| ॐ कृष्णवर्णायै नमः | ॐ कान्तायै नमः | |
| ॐ रोगहन्त्र्यै नमः | ॐ विष्णुमनःप्रियायै नमः | |
| ॐ त्रिवर्णायै नमः | ॐ भूतवेतालभीतिघ्न्यै नमः | |
| ॐ सर्वकामदायै नमः | ॐ महापातकनाशिन्यै नमः | |
| ॐ लक्ष्मीसख्यै नमः | ॐ मनोरथप्रदायै नमः | |
| ॐ नित्यशुद्धायै नमः | ॐ मेधायै नमः | |
| ॐ सुदत्यै नमः | ॐ कान्त्यै नमः | |

ॐ विजयदायिन्यै नमः
 ॐ शङ्खचक्रगदापद्मधारिण्यै नमः
 ४०
 ॐ कामरूपिण्यै नमः
 ॐ अपवर्गप्रदायै नमः
 ॐ श्यामायै नमः
 ॐ कृशमध्यायै नमः
 ॐ सुकेशिन्यै नमः
 ॐ वैकुण्ठवासिन्यै नमः
 ॐ नन्दायै नमः
 ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः
 ॐ कोकिलस्वरायै नमः
 ॐ कपिलायै नमः
 ॐ निम्नगाजन्मभूम्यै नमः
 ॐ आयुष्यदायिन्यै नमः
 ॐ वनरूपायै नमः
 ॐ दुःखनाशिन्यै नमः
 ॐ अविकारायै नमः
 ॐ चतुर्भुजायै नमः
 ॐ गरुत्मद्वाहनायै नमः
 ॐ शान्तायै नमः
 ॐ दान्तायै नमः
 ॐ विघ्ननिवारिण्यै नमः
 ॐ श्रीविष्णुमूलिकायै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः
 ॐ महाशक्त्यै नमः

५०

६०

ॐ महामायायै नमः
 ॐ लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः
 ॐ सुमङ्गल्यर्चनप्रीतायै नमः
 ॐ सौमङ्गल्यविवर्धिन्यै नमः
 ॐ चातुर्मास्योत्सवाराध्यायै नमः
 ॐ विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः ७०
 ॐ उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः
 ॐ सर्वदेवप्रपूजितायै नमः
 ॐ गोपीरतिप्रदायै नमः
 ॐ नित्यायै नमः
 ॐ निर्गुणायै नमः
 ॐ पार्वतीप्रियायै नमः
 ॐ अपमृत्युहरायै नमः
 ॐ राधाप्रियायै नमः
 ॐ मृगविलोचनायै नमः
 ॐ अम्लानायै नमः ८०
 ॐ हंसगमनायै नमः
 ॐ कमलासनवन्दितायै नमः
 ॐ भूलोकवासिन्यै नमः
 ॐ शुद्धायै नमः
 ॐ रामकृष्णादिपूजितायै नमः
 ॐ सीतापूज्यायै नमः
 ॐ राममनःप्रियायै नमः
 ॐ नन्दनसंस्थितायै नमः
 ॐ सर्वतीर्थमय्यै नमः
 ॐ मुक्तायै नमः ९०
 ॐ लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः

| | | |
|--------------------------|-----------------------------|-----|
| ॐ प्रातर्दृश्यायै नमः | ॐ निराश्रयायै नमः | |
| ॐ ग्लानिहन्त्र्यै नमः | ॐ गोमतीसरयूतीररोपितायै नमः | |
| ॐ वैष्णव्यै नमः | ॐ कुटिलालकायै नमः | |
| ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः | ॐ अपात्रभक्ष्यपापघ्न्यै नमः | |
| ॐ नारायण्यै नमः | ॐ दानतोयविशुद्धिदायै नमः | |
| ॐ सन्ततिदायै नमः | ॐ श्रुतिधारणसुप्रीतायै नमः | |
| ॐ मूलमृद्धारिपावन्यै नमः | ॐ शुभायै नमः | |
| ॐ अशोकवनिकासंस्थायै नमः | ॐ सर्वेष्टदायिन्यै नमः | १०८ |
| ॐ सीताध्यातायै नमः | १०० | |

श्री तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

धूपं गृहाण वरदे दशाङ्गेन सुवासितम्।
तुलस्यमृतसम्भूते धूतपापे नमोऽस्तु ते॥

दशाङ्गे गुग्गुलूपेतः सुगन्धः सुमनोहरः।
श्रीवत्साङ्ग हृषीकेश धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः धूपम् आघ्रापयामि।

वर्तित्रययुतं दीपं गोघृतेन समन्वितम्।
दीपं देवि गृहाणेमं दैत्यारिहृदयस्थिते॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं दीपं देव जनार्दन।
गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरं हर॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।

नानाभक्ष्यैश्च भोज्यैश्च फलैः क्षीरघृतादिभिः।
नैवेद्यं गृह्यतां युक्तं नारायणमनःप्रिये॥

भोज्यं चतुर्विधं चोष्यभक्ष्यसूपफलैर्युतम्।
दधिमध्वाज्यसंयुक्तं गृह्यतामम्बुजेक्षण॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः महानैवेद्यं निवेदयामि।

कर्पूरचूर्णताम्बूलवल्लीपूगफलैर्युतम् ।
जगतः पितरावेतत्ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं गृहाणेदं कर्पूरैः कलितं मया।
तुलस्यमृतसम्भूते गृहाण हरिवल्लभे॥

चन्द्रादित्यौ च नक्षत्रं विद्युदग्निस्त्वमेव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि कुर्यां नीराजनं हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि।

प्रकृष्टपापनाशाय प्रकृष्टफलसिद्धये।
युवां प्रदक्षिणी कुर्वे तुलसीशौ प्रसीदतम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु पीयूषसमुद्भवायै
नमोऽस्तु पद्माक्षमनः प्रियायै।
नमोऽस्तु जन्माप्यय-भीतिहृत्र्यै
नमस्तुलस्यै जगतां जनन्यै॥

शङ्खचक्रगदापाणे द्वारकानिलयाच्युत।
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागत(ता)म्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेदं पङ्कजाक्षस्य वल्लभे।
नमस्ते देवि तुलसि नताभीष्टफलप्रदे॥

मन्दारनीलोत्पलकुन्दजाती पुन्नागमल्लीकरवीरपद्मैः।
पुष्पाञ्जलिं ते जगदेकबन्धो हरे त्वदङ्घ्रौ विनिवेशयामि॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

आयुरारेग्यमतुलमैश्वर्यं पुत्रसम्पदः।
देहि मे सकलान्कामान् तुलस्यमृतसम्भवे॥

नमो नमः सुखवरपूजिताङ्घ्रये
नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये
नमो नमः परमदयानिधे हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

नमस्ते देवि तुलसि नमस्ते मोक्षदायिनि।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥

लक्ष्मीपते नमस्तुभ्यं तुलसीदामभूषण।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गरुडध्वज॥

श्री तुलस्यै महाविष्णवे च नमः - इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

नमस्ते देवि तुलसि माधवेन समन्विता।
प्रयच्छ सकलान्कामान् द्वादश्यां पूजिता मया॥
अनेन पूजनेन श्री-तुलसी-विष्णू प्रीयेताम्।

तुलसीविवाहविधिः

(इक्षुदण्डनिर्मिते पुष्पाद्यलङ्कृते मण्टपे विवाहः।

तुलसी हरिद्राचन्दनकुङ्कुमपुष्पाद्यालङ्कृता स्वीयवेद्यां प्रथमं पूज्यते।

शुक्लाम्बरधरं + परमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते + शुभतिथौ तुलस्याः
विष्णुना सह विवाहोत्सवमाचरिष्ये।

(अप उपस्पृश्य)

विष्णुं विवाहार्थं वरार्ह-वस्त्रालङ्करण-पुष्पमालादिभिः अलङ्कृत्य
वाद्यघोषगीतपुरस्सरं विवाहमण्टपमानीय कर्ता

नारिकेल-कदलीफलताम्बूलादिभिः उपसृत्य मण्टपे आसने प्रतिष्ठाप्य
प्रार्थयेत्।

आगच्छ भगवन् देव अर्हयिष्यामि केशव।
तुभ्यं ददामि तुलसीं प्रतीच्छन् कामदो भव॥

आसनमिदं, अलङ्कियताम्। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि।
हरिद्रालेप-मङ्गलविधिं समर्पयामि। तैलाभ्यङ्गपूर्वकं मङ्गलस्नानं समर्पयामि।
वस्त्रालङ्करणपुष्पमालाः समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धोपरि
हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

(वधूवरौ परस्परमभिमुखौ स्थापयित्वा)

... गोत्रोद्धवां ... शर्मणः प्रपौत्रीं, ... शर्मणः पौत्रीं, ... शर्मणः पुत्रीं
तुलसीनाम्नीम् इमां कन्यकां अजाय परब्रह्मणे श्री विष्णवे वराय
प्रतिपादयामि। (त्रिः उक्त्वा)

अनादिमध्यनिधन त्रैलोक्यप्रतिपालक।

इमां गृहाण तुलसीं विवाहविधिनेश्वर॥

पार्वती-बीजसम्भूतां वृन्दाभस्मनि संस्थिताम्।

अनादिमध्यनिधनां वल्लभां ते ददाम्यहम्॥

पयोधृतैश्च सेवाभिः कन्यावद्वर्धितां मया।

त्वत्प्रियां तुलसीं तुभ्यं ददामि त्वं गृहाण भोः॥

वाद्यघोष-वेदस्वस्तिवाचन-मङ्गलाशीर्भिः उभौ मेलयित्वा गीतादिभिः
सन्तोषयेत्।

सायमपि पुनः पूजां कृत्वा स्त्रीधनं यथाशक्तिं दद्यात्।

विवाहोत्सवपूर्तौ—

वैकुण्ठं गच्छ भगवन् तुलस्या सहितः प्रभो।
मत्कृतं पूजनं गृह्य सन्तुष्टो भव सर्वदा॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ जनार्दन॥

इति उभौ अभ्यनुज्ञापयेत् मङ्गलारार्तिकेन सह। तुलसीं यथापूर्वं रक्षेत्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥ शिवरत्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा ॥

आचम्य।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ व्रत-सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()^{२२} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे

त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२३} नक्षत्र ()^{२४} नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शिवरात्रि-व्रतं करिष्ये।

शिवरात्रिव्रतं ह्येतत्करिष्येऽहं महाफलम्।
निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत्प्रसादाञ्जगत्पते॥

चतुर्दश्यां निराहारो भूत्वा शम्भो परेऽहनि।
भोक्ष्येऽहं भुक्तिमुक्त्यर्थं शरणं मे भवेश्वर॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

^{२३}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{२४}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

ॐ गुणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सौद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।
 ताम्बूलं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
 अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 प्रार्थनाः समर्पयामि।
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
 अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
 शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
 ()^{२५} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
 त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
 भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२६} नक्षत्र ()^{२७} नाम योग () करण युक्तायां
 च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ
 अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थम्

^{२५}पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^{२६}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{२७}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रथम-यामपूजां करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा भू॒तान्यापः प्रा॒णा वा आपः प॒शव
आपोऽन्न॒मापोऽमृत॑मापः स॒म्राडापो वि॒राडापः स्व॒राडाप॑श्छन्दा॒ऽस्यापो
ज्योती॑ऽप्यापो यजू॑ऽप्यापः स॒त्यमापः सर्वा दे॒वता॑ आपो भूर्भुवः सुव॒राप॑
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ५. ॐ अनन्ताय नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ६. ॐ पृथिव्यै नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्ति वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो
रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
समर्पयामि॥ २॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥ ३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं
समर्पयामि॥ ४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः
सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं
समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमा रुद्रा अभितो दिक्षु
श्रिताः सहस्रशोऽवैषा हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।
स्नानं समर्पयामि॥

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय
नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि

समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरात्रियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो
वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्वः सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः
सुमना भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः
पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | |
|-------------------|---------------------|
| ॐ शिवाय नमः | ॐ नीललोहिताय नमः |
| ॐ महेश्वराय नमः | ॐ शङ्कराय नमः |
| ॐ शम्भवे नमः | ॐ शूलपाणिने नमः |
| ॐ पिनाकिने नमः | ॐ खट्वाङ्गिने नमः |
| ॐ शशिशेखराय नमः | ॐ विष्णुवल्लभाय नमः |
| ॐ वामदेवाय नमः | ॐ शिपिविष्टाय नमः |
| ॐ विरूपाक्षाय नमः | ॐ अम्बिकानाथाय नमः |
| ॐ कपर्दिने नमः | ॐ श्रीकण्ठाय नमः |

| | | | |
|----------------------------|----|---------------------------|----|
| ॐ भक्तवत्सलाय नमः | | ॐ त्रयीमूर्तये नमः | |
| ॐ भवाय नमः | | ॐ अनीश्वराय नमः | |
| ॐ शर्वाय नमः | | ॐ सर्वज्ञाय नमः | |
| ॐ त्रिलोकेशाय नमः | २० | ॐ परमात्मने नमः | |
| ॐ शितिकण्ठाय नमः | | ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| ॐ शिवाप्रियाय नमः | | ॐ हविषे नमः | |
| ॐ उग्राय नमः | | ॐ यज्ञमयाय नमः | ५० |
| ॐ कपालिने नमः | | ॐ सोमाय नमः | |
| ॐ कामारये नमः | | ॐ पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः | | ॐ सदाशिवाय नमः | |
| ॐ गङ्गाधराय नमः | | ॐ विश्वेश्वराय नमः | |
| ॐ ललाटाक्षाय नमः | | ॐ वीरभद्राय नमः | |
| ॐ कालकालाय नमः | | ॐ गणनाथाय नमः | |
| ॐ कृपानिधये नमः | ३० | ॐ प्रजापतये नमः | |
| ॐ भीमाय नमः | | ॐ हिरण्यरेतसे नमः | |
| ॐ परशुहस्ताय नमः | | ॐ दुर्धर्षाय नमः | |
| ॐ मृगपाणये नमः | | ॐ गिरीशाय नमः | ६० |
| ॐ जटाधराय नमः | | ॐ गिरिशाय नमः | |
| ॐ कैलासवासिने नमः | | ॐ अनघाय नमः | |
| ॐ कवचिने नमः | | ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः | |
| ॐ कठोराय नमः | | ॐ भर्गाय नमः | |
| ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | | ॐ गिरिधन्वने नमः | |
| ॐ वृषाङ्गाय नमः | | ॐ गिरिप्रियाय नमः | |
| ॐ वृषभारूढाय नमः | ४० | ॐ कृत्तिवाससे नमः | |
| ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | | ॐ पुरारातये नमः | |
| ॐ सामप्रियाय नमः | | ॐ भगवते नमः | |
| ॐ स्वरमयाय नमः | | ॐ प्रमथाधिपाय नमः | ७० |

| | | |
|---------------------|---------------------|-----|
| ॐ मृत्युञ्जयाय नमः | ॐ पाशविमोचकाय नमः | १० |
| ॐ सूक्ष्मतनवे नमः | ॐ मृडाय नमः | |
| ॐ जगद्ध्यापिने नमः | ॐ पशुपतये नमः | |
| ॐ जगद्गुरवे नमः | ॐ देवाय नमः | |
| ॐ व्योमकेशाय नमः | ॐ महादेवाय नमः | |
| ॐ महासेनजनकाय नमः | ॐ अव्ययाय नमः | |
| ॐ चारुविक्रमाय नमः | ॐ हरये नमः | |
| ॐ रुद्राय नमः | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ भूतपतये नमः | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ स्थाणवे नमः | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ अहये बुध्याय नमः | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ दिगम्बराय नमः | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ अष्टमूर्तये नमः | ॐ अव्यक्ताय नमः | |
| ॐ अनेकात्मने नमः | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ सात्त्विकाय नमः | ॐ सहस्रपदे नमः | |
| ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः | |
| ॐ शाश्वताय नमः | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ खण्डपरशवे नमः | ॐ तारकाय नमः | |
| ॐ अजाय नमः | ॐ परमेश्वराय नमः | |

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशाल्यो बाणवा५ उ॒त। अने॑शन्नस्येष॑व आ॒भुर॑स्य
निष॒ङ्ग॒र्थिः॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। बला॑य॒ नमः॑। धूप॑माग्रापयामि॥१२॥

या ते॑ हे॒ति॒र्मी॒ढुष्ट॑म् ह॒स्ते॑ ब॒भूव॑ ते॒ धनुः॑। तया॒ऽस्मान् वि॒श्वत॑स्त्वम॒य॒क्ष्मया॑

परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मुनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय
नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय
नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
प्रथम-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

नमः शिवाय शान्ताय सर्वपापहराय च।
शिवरात्रौ मया दत्तं गृहाणार्घ्यं मम प्रभो॥१॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

नमो यज्ञजगन्नाथ नमस्त्रिभुवनेश्वर।
पूजां गृहाण मे दत्तां महेश प्रथमे पदे॥१॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
प्राणान् आयम्या ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
 अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
 शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
 ()^{२८} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
 त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
 भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२९} नक्षत्र ()^{३०} नाम योग () करण युक्तायां
 च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ
 अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
 पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
 जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
 रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
 पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं द्वितीय-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
 रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
 पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
 विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
 नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

^{२८}पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^{२९}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{३०}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो
रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥ अर्घ्यं
समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं
सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं
समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्यसर्वाश्च
यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु
श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।
स्नानं समर्पयामि॥

॥ महान्यासः ॥

॥ पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् ॥

ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव
तया नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय
नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्।
महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥

अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं
वनस्पतेरिवाभिनः शीयतां रयिः स च तान्नः शचीपतिः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय।
दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्।
शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥

ॐ। निधनपतये नमः। निधनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः।
ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः।
सुवर्णलिङ्गाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यलिङ्गाय नमः। भवाय नमः।
भवलिङ्गाय नमः। शर्वाय नमः। शर्वलिङ्गाय नमः। शिवाय नमः।
शिवलिङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। ज्वललिङ्गाय नमः। आत्माय नमः।
आत्मलिङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमलिङ्गाय नमः। एतत्सोमस्य सूर्यस्य
सर्वलिङ्गं स्थापयति पाणिमन्त्रं पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय
नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै
रुद्राय नमो अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय
नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्।
यलिङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनाप्यायस्व॥ नमो रुद्राय
विष्णवे मृत्युर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय
नमः।



॥ पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

संवर्ताग्नि-तटित्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम्
गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्।
अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम्
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर॒घोरे॑तरेभ्यः।
सर्वे॑भ्यः सर्व॒शर्वे॑भ्यो नमस्ते अस्तु रु॒द्ररूपे॑भ्यः॥

कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम्
कर्णोद्भासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्भिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्।
सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम्
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चार्थवर्नादौदयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

स॒द्योजा॒तं प्र॑पद्यामि स॒द्योजा॒ताय॒ वै नमो॑ नमः।
भ॒वे भ॑वे॒ नाति॑ भवे भवस्व॒ माम्। भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः॥

प्रालेयाचलमिन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम्
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् ।
विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादौदयम्
वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वा॒म॒दे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॑ का॒लाय॒
नमः॑ कल॒विक॑रणाय॒ नमो॑ बल॒विक॑रणाय॒ नमो॑ ब॒लाय॒ नमो॑ बल॒प्रम॑थनाय॒
नमः॑ सर्व॒भूत॑दमनाय॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॥

गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम्
भ्रूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्।
स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम्
वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्रं हरस्योत्तरम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥

व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षट्त्रिंशतत्त्वाधिकम्
तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरमिति ध्येयं सदा योगिभिः।
ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम्
वन्दे पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः ॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥
शिखायै नमः॥ (TUFT)

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भुवा अधि।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

ह्रस्वः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥
भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्नुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च
सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय च।

कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधीरहविष्मन्तो नमसा विधेम ते॥

नासिकायै^{३१} नमः॥ (NOSE)

अवतत्य धनुस्त्वः सहस्राक्ष शतैषुधे॥

निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।

मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः।

तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः।

तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै।

उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥

बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या तै हेतिर्मीदुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः।

तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिबुज॥

उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परि णो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः।

अवं स्थि॒रा म॒घवं॑द्ध्यस्तनुष्व॒ मी॒ढ्वंस्तो॒काय॒ तन॑याय मृडय॥

मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒कावं॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑।

तेषां॑ सहस्रयोजनेऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि॥

हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

स॒द्योजा॒तं प्र॑पद्यामि स॒द्योजा॒ताय॒ वै नमो॒ नमः॑।

भ॒वे भ॑वे नाति॑ भवे भवस्व॒ माम्। भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः॑॥

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वाम॒दे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॑ का॒लाय॒ नमः॑
कल॑विकर॒णाय॒ नमो॑ बल॑विकर॒णाय॒ नमो॑ ब॒लाय॒ नमो॑ बल॑प्रमथनाय॒ नमः॑

सर्व॑भूतदमनाय॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑॥

तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर॑घोर॒तरे॑भ्यः।

सर्वे॑भ्यः सर्व॑शर्वे॑भ्यो॒ नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः॥

मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पु॒रुषाय॒ वि॒द्महे॑ महा॒दे॒वाय॒ धीम॑हि।

तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चोदयात्॥

अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्या॒नामी॒श्वरः॑ सर्व॑भूता॒नां ब्र॒ह्माधि॑पतिर्ब्रह्म॒णोऽधि॑पतिर्ब्रह्मा॑ शि॒वो
मे॑ अस्तु सदाशि॒वोम्॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो॑ हिर॒ण्यबा॑हवे हिर॒ण्यव॑र्णाय॒ हिर॒ण्यरू॑पाय॒ हिर॒ण्यप॑तयेऽम्बिकापतय॒
उ॒माप॑तये॒ पशु॑पतये॒ नमो॒ नमः॑॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ (RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT AND BACK)

नमो॑ वः कि॒रि॒के॒भ्यो॑ दे॒वाना॑ꣳ हृद॑येभ्यः॥
हृद॑याय नमः॥ (HEART)

नमो॑ गु॒णे॒भ्यो॑ गु॒णप॑तिभ्यश्च वो॒ नमः॑॥
पृ॒ष्ठाय॑ नमः॥ (BACK)

नम॑स्तक्ष॑भ्यो रथक॑रेभ्यश्च वो॒ नमः॑॥
कक्ष॑भ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो॑ हि॒र॒ण्यबा॑हवे से॒नान्यै॑ दि॒शां च॒ पत॑ये नमः॥
पा॒र्श्वाभ्यां॑ नमः॥ (TRUNK)

विज्यं॑ धनुः॑ कप॑र्दिनो॒ विश॑ल्यो॒ बाण॑वाꣳ उ॒त।
अनै॑शन्न॒स्येष॑व आ॒भुर॑स्य निष॒ङ्गथिः॑॥
जठ॑राय नमः॥ (STOMACH)

हि॒र॒ण्यग॑र्भः सम॑वर्तताग्रे भू॒तस्य॑ जा॒तः पति॑रेकं आसीत्।
सदा॑धार पृथि॒वीं द्या॑मु॒तेमां॑ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥
नाभ्यै॑ नमः॥ (NAVEL)

मी॒ढुंष्ट॑म् शिव॑तम शि॒वो नः॑ सु॒मना॑ भव।
प्र॒मे वृ॒क्ष आयु॑धं नि॒धाय॑ कृ॒त्तिं वसा॑न् आ च॒र पिना॑कं बिभ्र॒दा ग॑हि॥
कट्यै॑ नमः॥ (WAIST)

ये भू॒ताना॑मधि॒पत॑यो विशि॒खासः॑ कप॑र्दिनः।
तेषां॑ सह॒स्रयो॑ज॒नेऽव॑ध॒न्वानि॑ तन्मसि॥
गुह्या॑य नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अ॒न्नैषु॑ वि॒विध्य॑न्ति॒ पात्रै॑षु पि॒बन्तो॑ जना॑न्।
तेषां॑ सह॒स्रयो॑ज॒नेऽव॑ध॒न्वानि॑ तन्मसि॥
अ॒ण्डाभ्यां॑ नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शि॒रा जा॒तवे॑दा अ॒क्षरं॑ पर॒मं प॒दम्।

वेदा॑ना॒ꣳ शिर॑सि मा॒ता आ॒युष्मन्तं॑ करोतु माम्॥

अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उ॒क्षन्त॑मु॒त मा न॑ उ॒क्षित॑म्॥

मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॒रिषः॥

ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

ए॒ष तै रु॒द्रभा॒गस्तं जु॑षस्व तेना॑व॒सेन॑ प॒रो मू॒जव॑तोऽती॒ह्यव॑ततधन्वा॒

पि॒नाक॑हस्तः कृ॒त्तिवा॑साः॥

जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

स॒ꣳसृ॒ष्टिजि॒त्सोम॑पा बा॑हुश॒ध्यूर्ध्वध॑न्वा प्र॒तिहि॑ताभि॒रस्ता॑॥

बृ॒हस्प॑ते परि॑दीया रथे॑न र॒क्षोहा॑मि॒त्राꣳ अ॒प॒बाध॑मानः॥

जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

वि॒श्वं भू॑तं भु॒वनं चि॒त्रं बहु॑धा जा॒तं जा॒यमा॑नं च॒ यत्॥

स॒र्वो ह्ये॑ष रु॒द्रस्त॑स्मै रु॒द्राय॑ नमो॑ अस्तु॥

गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये प॒थां प॑थि॒रक्ष॑य ऐ॒लवृ॑दा य॒व्युधः॑॥

तेषा॑ꣳ स॒हस्र॑यो॒जने॑ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि॥

पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अ॒ध्यवो॑चदधि॒वक्ता॑ प्र॒थमो॑ दै॒व्यो भि॒षक्॥

अ॒हीꣳश्च॒ सर्वा॑ञ्ज॒म्भय॑न्त्स॒र्वाश्च॑ यातु॒धान्यः॑॥

कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS TOUCHING SHOULDERS)

नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च क॒वचि॑ने च॒ नमः॑ श्रु॒ताय॑ च श्रु॒तसे॑नाय॑ च॥

उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमो॑ अस्तु नील॑ग्री॒वाय॑ स॒हस्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषै॑॥

अथो॒ ये अ॑स्य॒ सत्वा॑नोऽहं॒ तेभ्यो॑ऽकरं॒ नमः॑॥
 नेत्रत्रयाय॒ वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERS ACROSS THE THREE EYES)

प्र मु॑ञ्च॒ धन्वं॑न॒स्त्वमु॑भयो॒रार्त्तियो॑र्ज्याम्।
 याश्च॑ ते॒ हस्त॒ इष॑वः॒ परा॒ ता भ॑गवो वप॥
 अस्त्राय॒ फट्॥ (SLAP INDEX AND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON LEFT PALM)

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ः॒ सश्च॒ दिशो॑ रु॒द्रा वि॑तस्थिरे।
 तेषा॑ः॒ सह॑स्रयो॒जने॑ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि॥
 इति॒ दिग्बन्धः॑॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)



॥ मूर्धादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः ॥

ॐ मूर्ध्ने॑ नमः। नं॑ नासिकाय^{३२} नमः। मों॑ ललाटाय नमः। भं॑ मुखाय नमः।
 गं॑ कण्ठाय नमः। वं॑ हृदयाय नमः। ते॑ दक्षिणहस्ताय नमः। रुं॑ वामहस्ताय
 नमः। द्रां॑ नाभ्यै नमः। यं॑ पादाभ्यां नमः।

॥ पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः ॥

स॒द्योजा॑तं प्र॒पद्या॑मि॒ स॒द्योजा॑ताय॒ वै नमो॑ नमः।
 भ॒वे भ॑वे॒ नाति॑ भवे॒ भव॑स्व॒ माम्। भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः॑॥
 पादाभ्यां॑ नमः॥

वाम॑दे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॑ का॒लाय॒ नमः॑
 कर्ल॑विक॒रणा॒य॒ नमो॑ बल॑विक॒रणा॒य॒ नमो॑ ब॒लाय॒ नमो॑ बल॑प्रमथनाय॒ नमः॑
 सर्व॑भूतदमनाय॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑॥
 ऊ॒रुभ्यां॑ नमः॥

^{३२}नासिकाभ्यां

अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर॒घोर॑तरेभ्यः।
 सर्वे॑भ्यः सर्व॒शर्वे॑भ्यो नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः॥
 हृदयाय नमः॥

तत्पुरु॑षाय वि॒द्महे॑ महादे॒वाय॑ धीमहि।
 तन्नो॑ रुद्रः प्रचोदया॑त्॥
 मुखाय नमः॥

ई॒शानः॑ सर्व॒विद्या॒नामी॒श्वरः॑ सर्व॒भूता॒नां॒ ब्रह्मा॑धि॒पति॒र्ब्रह्म॒णोऽधि॑पति॒र्ब्रह्मा॑ शि॒वो
 मे॑ अस्तु सदाशि॒वोम्॥
 हंस॑ हंस॑ मूर्ध्ने॑ नमः॥



॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री
 छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥
 परमहंस-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसै
 अनामिकाभ्यां नमः। हंसौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां
 नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखायै वषट्। हंसै
 कवचाय हुम्। हंसौ नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोम्
 इति दिग्बन्धः॥

॥ ध्यानम् ॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्।
 पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥
 हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥

हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि।

तन्नो हंसः प्रचोदयात्॥

(एवं त्रिः)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः।

एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥



॥ दिक् सम्पुटन्यासः ॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ॐ]लं। त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवैहवे सुहवः शूरमिन्द्रम्।

हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

[ॐ]लं भूर्भुवः सुवः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय

साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय

उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥

[इन्द्रः संरक्षतु॥]

॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[नं]रं। त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं यासिसीष्ठाः।

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥

[नं]रं भूर्भुवः सुवः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय साङ्गाय

सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥

[अग्निः संरक्षतु॥]

॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[मो]हं। सुगं नः पन्थामभयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षत्रे यम एति राजा।

यस्मिन्नेनमभ्यर्षिश्चन्त देवाः। तदस्य चित्रं हविषा यजाम॥

[मों]हं भूर्भुवः सुवः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय
साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[यमः संरक्षतु॥] ॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवुरोम्।

[भं]षं। असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां तस्करस्यान्वेषि।

अन्यमस्मदिच्छ सा तं इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

[भं]षं भूर्भुवः सुवः। निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय
सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो
भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥] ॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवुरोम्।

[गं]वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शस्ते यजमानो हविर्भिः।

अहैडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः॥

[गं]वं भूर्भुवः सुवः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय
साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[वरुणः संरक्षतु॥] ॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवुरोम्।

[वं]यं। आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वरम्। सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।

वायो अस्मिन् हविषि मादयस्व। यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

[वं]यं भूर्भुवः सुवः। वायवे साङ्कुशध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय
साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय

उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने^{३३} यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो
भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥] ॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ते]सं। वयं सोम व्रते तव। मनस्तनूषु बिभ्रतः।

प्रजावन्तो अशीमहि॥

[ते]सं भूर्भुवः सुवः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये
अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[सोमः संरक्षतु॥] ॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं]शं। (ऋक्) तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिम्। धियं जिन्वमवसे हूमहे
वयम्।

पूषा नो यथा वेदसामसंद्धौ रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्यै॥

[रुं]शं भूर्भुवः सुवः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय
साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[ईशानः संरक्षतु॥] ॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां]खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः।

यः शंसते स्तुवते धारि पञ्च इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥

[द्रां]खं भूर्भुवः सुवः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय

^{३३}नासिकयोः स्थाने

सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
 ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्ध्निस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥
 [ब्रह्मा संरक्षतु॥] ॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।
 [यं]हीं। स्योना पृथिवि भवोऽनृक्षरा निवेशनी।
 यच्छानः शर्म सुप्रथाः॥

[यं]हीं भूर्भुवः सुवः। विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय
 साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
 उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
 अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
 [विष्णुः संरक्षतु॥] ॥१०॥



॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् ॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
 च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 ॐ अं। विभूरसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
 हिंसीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥
 ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
 च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 ॐ आं। वह्निरसि हव्यवाहनो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
 हिंसीः॥ आं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥
 ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
 च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ इं। श्वात्रोऽसि प्रचेता रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मा
हिंसीः॥ इं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मूर्ध्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ई। तुथोऽसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मा
हिंसीः॥ ई [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ उं। उशिगंसि कवी रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मा
हिंसीः॥ उं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नेत्रयोः^{३४} स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऊं। अङ्घारिरसि बम्भारी रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मा
हिंसीः॥ ऊं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऋं। अवस्युरसि दुवस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मा
हिंसीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ॠं। शुन्ध्यूरसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा

मां हि०सीः॥ ॐ [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ लं। सम्राडसि कृशान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मा
हि०सीः॥ लं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ लृं। परिषद्योऽसि पवमानो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मा
मां हि०सीः॥ लृं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ एं। प्रतक्काऽसि नभस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मा
हि०सीः॥ एं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऐं। असम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मा
मां हि०सीः॥ ऐं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ॐं। ऋतधामाऽसि सुवर्ज्योती रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मा
मां हि०सीः॥ ॐं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय

च नमः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ औं। ब्रह्मज्योतिरसि सुवर्धामा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा
मा मां हिंसीः॥ औं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ अं। अजोऽस्येकपाद्रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ अः। अहिरसि बुध्नियो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ अः [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति।
ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-डाकिनी-सर्प-श्वापद-
वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु।
यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥



॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः ॥

मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञं समिमं दधातु।
या इष्टा उषसो निमृचंश्च ताः सन्दधामि हविषां घृतेन॥ गुह्याय नमः॥१॥

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्।
यद्वा इव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ॥ नाभ्यै नमः॥२॥

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।

अ॒पा॒५ रेता॒॑सि जि॒न्वति॑॥ हृ॒दया॒य नमः॑॥३॥

मूर्धा॑नं दि॒वो अ॒र॒तिं पृ॒थि॒व्या वै॑श्वा॒न॒र॒मृ॒ताय॑ जा॒तम॒ग्निम्।
क॒वि॒५ स॒म्राज॒मति॑थिं॒ जना॑नामा॒सन्ना पात्रं॑ ज॒नय॑न्त दे॒वाः॥ कण्ठाय॑
नमः॑॥४॥

म॒र्मा॑णि ते व॒र्मभि॑श्छादयामि सोमं॑स्त्वा॒ राजा॑ऽमृते॒नाभि॑वंस्ताम्।
उ॒रोर्व॑री॒यो व॑रि॒वस्ते अ॑स्तु ज॒यन्तं॑ त्वा॒मनु॑ मदन्तु दे॒वाः॥ मु॒खाय॑ नमः॑॥५॥
जा॒तवे॑दा॒ यदि॑ वा पा॒व॒कोऽसि॑। वै॒श्वा॒न॒रो यदि॑ वा वैद्यु॒तोऽसि॑।
शं प्र॒जाभ्यो॑ यज॑मानाय लो॒कम्। ऊ॒र्जं पु॒ष्टिं द॑दं॒द्भ्याव॑वृ॒थ्स्व॥ शि॒रसे॑
नमः॑॥६॥



॥ आत्मरक्षा ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्र॒ह्मा॑त्म॒न्वद॑सृजत। तद॑का॒मय॑त। स॒मा॒त्म॒ना प॑द्येयेति।
आ॒त्म॒न्ना॒त्म॒न्नि॒त्याम॑न्नयत। तस्मै॑ द॒श॒म॒५ हू॒तः प्र॑त्य॒शृ॒णोत्। स
द॒श॒हू॒तोऽभ॑वत्। द॒श॒हू॒तो ह॒ वै ना॑मैषः। तं वा ए॒तं द॒श॒हू॒त॒५ स॑न्तम्।
द॒श॒हो॒तेत्या॑चक्षते प॒रोक्षे॑ण। प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि दे॒वाः॥
आ॒त्म॒न्ना॒त्म॒न्नि॒त्याम॑न्नयत। तस्मै॑ स॒प्त॒म॒५ हू॒तः प्र॑त्य॒शृ॒णोत्। स
स॒प्त॒हू॒तोऽभ॑वत्। स॒प्त॒हू॒तो ह॒ वै ना॑मैषः। तं वा ए॒त॒५ स॒प्त॒हू॒त॒५ स॑न्तम्।
स॒प्त॒हो॒तेत्या॑चक्षते प॒रोक्षे॑ण। प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि दे॒वाः॥
आ॒त्म॒न्ना॒त्म॒न्नि॒त्याम॑न्नयत। तस्मै॑ ष॒ष्ठ॒५ हू॒तः प्र॑त्य॒शृ॒णोत्। स ष॒ड्भू॒तोऽभ॑वत्।
ष॒ड्भू॒तो ह॒ वै ना॑मैषः। तं वा ए॒त॒५ ष॒ड्भू॒त॒५ स॑न्तम्। ष॒ड्भू॒तेत्या॑चक्षते प॒रोक्षे॑ण।
प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि दे॒वाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत्। तस्मै पञ्चमं हूतः प्रत्यंशृणोत्। स
पञ्चहूतोऽभवत्। पञ्चहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतं सन्तम्।
पञ्चहोतेत्याचक्षते परोक्षेण। परोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत्। तस्मै चतुर्थं हूतः प्रत्यंशृणोत्। स
चतुर्हूतोऽभवत्। चतुर्हूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं चतुर्हूतं सन्तम्।
चतुर्होतेत्याचक्षते परोक्षेण। परोक्षप्रिया इव हि देवाः॥
तमब्रवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठं हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार इति।
तस्मान्नु हैनांश्चतुर्होतार इत्याचक्षते। तस्माच्छुश्रूषुः पुत्राणां हृद्यतमः।
नेदिष्ठो हृद्यतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मणो भवति। य एवं वेद।
आत्मने नमः॥

॥ शिवसङ्कल्पः ॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारु यन्ति।
यत्सम्मितामनुसंयन्ति प्राणिनस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं
यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किं च
न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥४॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हत्प्रतिष्ठं यदजिरं

जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥

यस्मिन्नुचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविंवाराः।

यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥६॥

यदत्र षष्ठं त्रिशतं सुवीरं यज्ञस्य गुह्यं नवनावमाय्यम्। दशं पञ्च त्रिंशतं

यत्परं च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥७॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति देवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं

तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥८॥

येनेदं विश्वं जगतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तमसो

ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशश्च। येनेदं जगद्भ्याप्तं

प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१०॥

ये मनो हृदयं ये च देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरश्मिः। ते श्रोत्रे चक्षुषी

सञ्चरन्तं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमेयं च व्यक्ताव्यक्तपरं च यत्।

सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१२॥

एकां च दश शतं च सहस्रं चायुतं च

नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च तन्मे

मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पञ्च पञ्चादश शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टकास्तं

शरीरं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। यस्य योनिं

परिपश्यन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१५॥

यस्येदं धीराः पुनन्ति क्वयौ ब्रह्माणमेतं त्वा वृणत इन्दुम्। स्थावरं जङ्गमं
द्यौराकाशं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१६॥

परात्परतरं चैव यत्पराच्चैव यत्परम्।
यत्परात्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१७॥

परात्परतरो ब्रह्मा तत्परात्परतो हरिः।
तत्परात्परतोऽधीशस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१८॥

या वेदादिषु गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी।
ऋग्यजुः सामाथर्वैश्च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१९॥

यो वै देवं महादेवं प्रणवं परमेश्वरम्।
यः सर्वं सर्ववेदैश्च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२०॥

प्रयतः प्रणवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तमम्।
ओङ्कारं प्रणवात्मानं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२१॥

योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज इश्वरः।
अकार्यो निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धनेन ह्यायुषा च बलेन च।
प्रजया पशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२३॥

कैलासशिखरे रम्ये शङ्करस्य शिवालये।
देवतास्तत्र मोदन्ते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२४॥

वि॒श्वत॑श्चक्षुरु॒त वि॒श्वतो॑मुखो वि॒श्वतो॑हस्त उ॒त वि॒श्वत॑स्पात्। सं बा॒हुभ्यां
नम॑ति॒ सम्पत॑त्रैर्द्यावा॑पृथि॒वी ज॒नय॑न्दे॒व एक॑स्तन्मे॒ मनः॑
शि॒वसं॑ङ्कल्पम॑स्तु॥ २५॥

त्र्य॒म्बकं॑ यजामहे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टि॒वर्ध॑नम्।
उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृत्यो॑र्मु॒क्षीय॑ माऽमृता॒त्तन्मे॒ मनः॑
शि॒वसं॑ङ्कल्पम॑स्तु॥ २६॥

च॒तुरो॑ वेदान॑धीयी॒त सर्व॑शास्त्रम॒यं वि॑दुः।
इति॑हा॒सपु॑राणा॒नां तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑ङ्कल्पम॑स्तु॥ २७॥

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑
उ॒क्षित॑म्। मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा
न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॒रिष॑स्तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑ङ्कल्पम॑स्तु॥ २८॥

मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॒ आयु॑षि॒ मा नो॒ गोषु॑ मा नो॒
अ॒श्वेषु॑ री॒रिषः॑। वी॒रान्मा॑ नो॒ रु॒द्र भा॒मि॒तोऽव॑धी॒रह॑विष्म॒न्तो नम॑सा वि॒धेम ते॒
तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑ङ्कल्पम॑स्तु॥ २९॥

ऋ॒तं स॒त्यं प॑रं ब्र॒ह्म पु॑रुषं कृष्ण॒पिङ्ग॑लम्।
ऊ॒र्ध्वरे॑तं वि॒रूपा॑क्षं वि॒श्वरू॑पाय॒ वै नमो॑
नम॑स्तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑ङ्कल्पम॑स्तु॥ ३०॥

क॒द्रु॒द्राय॑ प्रचै॑तसे मी॒दुष्ट॑माय॒ तव्य॑से।
वो॒ चे॒म॒ शन्त॑म॒ हृदे॑। स॒र्वो ह्ये॑ष रु॒द्रस्तस्मै॑ रु॒द्राय॑ नमो॒ अस्तु॑ तन्मे॒ मनः॑
शि॒वसं॑ङ्कल्पम॑स्तु॥ ३१॥

ब्रह्म॑जज्ञानं प्रथ॒मं पु॑रस्ता॒द्वि॒सीम॑तः सुरु॒चो वे॒न आ॑वः।

सबुध्रियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च
विवस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३२॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय
हविषा विधेम तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३३॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्वं उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय
हविषा विधेम तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै
रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३५॥

गन्धद्वारां दुराधरूपां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां
तामिहोपह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३६॥

य इदं शिवसङ्कल्पं सदा ध्यायन्ति ब्राह्मणाः।
ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥
हृदयाय नमः॥



॥ पुरुषसूक्तम् ॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा।
अत्यतिष्ठद्वशाङ्गुलम्॥ पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्धृतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदत्रैनातिरोहति॥ एतावानस्य महिमा। अतो

ज्यायाँश्च पूरुषः।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः।

पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वङ्मकामत्। साशनानशने अभि॥

तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत।

पश्चाद्धूमिमथो पुरः॥

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म

इध्मः शरद्धविः॥ सप्तास्याऽऽसन्परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा

यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं

जातमग्रतः।

तेन देवा अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं

पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्।

यजुस्तस्मादजायत॥ तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः। गावो ह

जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥ यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा

व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥ ब्राह्मणोऽस्य

मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्याँ शूद्रो अजायत॥ चन्द्रमा मनसो जातः।

चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥ नाभ्या

आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा

लोकाँ अकल्पयन्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि
विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार।

शक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था
अयनाय विद्यते॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥

शिरसे स्वाहा॥



॥ उत्तरनारायणम् ॥

अद्भ्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाच्च। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टा
विदधद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्।
आदित्यवर्णं तमसुः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था
विद्यतेयनाय॥ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते।

तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः॥ यो
देवेभ्य आतपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो
रुचाय ब्राह्मणे॥ रुचं ब्राह्मं जनयन्तः। देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वेवं ब्राह्मणो
विद्यात्। तस्य देवा असन् वशे॥ ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे।
नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं
मनिषाण॥

शिखायै वषट्॥



॥ अप्रतिरथम् ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आशुः शिशानो वृषभो न युध्मो घनाघनः क्षोभेणश्चरषणीनाम्।

सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेनां अजयत् साकमिन्द्रः।

सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्चवनेन धृष्णुना। तदिन्द्रेण जयत्
तत्सहस्रं युधौ नर इषुहस्तेन वृष्णा। स इषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशी
संस्तृष्टा स युध इन्द्रो गुणेन। सः सृष्टजिह्वसोमपा बाहुशर्ध्वध्वन्वा
प्रतिहिताभिरस्ता।

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रां अपबाधमानः। प्रभञ्जन्सेनाः

प्रमृणो युधा जयन्तस्माकमेध्यविता रथानाम्। गोत्रभिर्दं गोविदं वज्रबाहुं

जयन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजसा। इमं संजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं

सखायोऽनु स रंभध्वम्। बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी

सहमान उग्रः। अभिवीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ

गोवित्। अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदायो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकं सेनां अवतु प्र युध्मु। इन्द्र आसां नेता

बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां

मरुतो यन्त्वग्रै। इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुता शर्ध

उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्।

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानु देवा अवता हवेषु। उद्धर्षय

मघवन्नायुधान्युत् सत्त्वंनां मामकानां महाशसि। उद्ध्वहन् वाजिनां

वाजिनान्युद्रथानां जयतामेतु घोषः। उप प्रेत जयता नरः स्थिरा वः सन्तु

बाहवः। इन्द्रो वः शर्म यच्छत्वनाधृष्या यथाऽसंथ। अवसृष्टा परां पत्

शरव्ये ब्रह्मसंशिता।

गच्छामित्रान् प्रविश मैषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि
 सोमस्त्वा राजाऽमृतैनाभिवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं
 त्वामनु मदन्तु देवाः। यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव। इन्द्रो
 नस्तत्र वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥



॥ प्रतिपूरुषम् (सं०) ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपत्येकमतिरिक्तं यावन्तो गृह्याः स्मस्तेभ्यः कमकरं
 पशूनां शर्मासि शर्म यजमानस्य शर्म मे यच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयाय
 तस्थ आखुस्ते रुद्र पशुस्तं जुषस्वैष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राऽम्बिकया तं
 जुषस्व भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजं सुभेषजं
 यथाऽसति। सुगं मेषाय मेष्या अवांम्ब रुद्रमदिमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा
 नः श्रेयसः कर्द्यथा नो वस्यसः कर्द्यथा नः पशुमतः कर्द्यथा नो
 व्यवसाययात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव
 बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ एष ते रुद्रभागस्तं जुषस्व तेनावसेन परो
 मूर्जवतोऽतीह्यवततधन्वा पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः॥

॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवदयते।
 एकमतिरिक्तम्। जनिष्यमाणा एव प्रजा रुद्रान्निरवदयते। एकंकपाला
 भवन्ति। एकधैव रुद्रं निरवदयते। नाभिघारयति। यदभिघारयैत्।

अ॒न्त॒र॒व॒चा॒रि॒णः॑ रु॒द्रं कुर्यात्। ए॒को॒ल्मु॒केन॑ य॒न्ति। तद्धि रु॒द्रस्य॑ भा॒ग॒धेय॑म्।
 इ॒मां दि॒शं य॒न्ति। ए॒षा वै रु॒द्रस्य॑ दिक्। स्वा॒या॒मे॒व दि॒शि रु॒द्रं नि॒रव॑द॒यते।
 रु॒द्रो वा अ॑प॒शुका॑या॒ आह॑त्यै नातिष्ठ॒त। अ॒सौ ते॑ प॒शुरि॒ति निर्दि॑शेद्यं
 द्वि॒ष्यात्। यमे॒व द्वेष्टि॑। तम॑स्मै प॒शुं निर्दि॑शति। यदि न द्वि॒ष्यात्। आ॒खु॒स्ते
 प॒शुरि॒ति ब्रू॑यात्। न ग्रा॒म्यान् प॒शून् हि॒नस्ति॑। ना॒र॒ण्यान्। च॒तुष्प॑थे जु॒होति॑।
 ए॒ष वा अ॑ग्नी॒नां प॒ङ्क्ति॑शो॒ नाम॑। अ॒ग्नि॒वत्ये॒व जु॒होति॑। म॒ध्य॒मेन॑ प॒र्णेन॑ जु॒होति॑।
 स्रु॒ग॒घ्येषा॑। अथो॒ खलु॑। अ॒न्त॒मेनै॒व हो॑त॒व्यम्। अ॒न्त॒त ए॒व रु॒द्रं नि॒रव॑द॒यते।
 ए॒ष ते॑ रु॒द्र भा॒गः स॒ह स्व॒स्त्राऽम्बि॑क॒येत्या॑ह। श॒र॒द्वा अ॒स्याम्बि॑का॒ स्वसा॑।
 तया॒ वा ए॒ष हि॑न॒स्ति। यः॑ हि॒नस्ति॑। तयै॒वैन॑ स॒ह श॑म॒यति॑। भे॒ष॒जं ग॒व॒
 इ॒त्या॑ह। याव॑न्त ए॒व ग्रा॒म्याः प॒शवः॑। तेभ्यो॑ भे॒ष॒जं क॑रोति। अ॒वा॒म्ब
 रु॒द्रम॑दि॒म॒हीत्या॑ह। आ॒शिष॑मे॒वैता॑माशा॒स्ते। त्र्य॑म्ब॒कं य॒जाम॑ह॒ इत्या॑ह।
 मृ॒त्योर्मु॑क्षी॒य माऽमृ॑ता॒दिति॑ वा॒वैत॑दा॒ह। उ॒त्कि॑र॒न्ति। भ॒ग॑स्य ली॒प्सन्ते॑। मू॒ते
 कृ॒त्वाऽऽस॑ज॒न्ति। यथा॒ ज॒नं य॒तेऽव॑सं॒ क॒रोति॑। ता॒दृगे॒व तत्। ए॒ष ते॑ रु॒द्र
 भा॒ग इत्या॑ह नि॒रव॑त्यै। अ॒प्र॒तीक्ष॑मा॒य॒न्ति। अ॒पः परि॑षिञ्च॒ति।
 रु॒द्रस्या॒न्तर्हि॑त्यै। प्र॒ वा ए॒तेऽस्मा॑ल्लो॒काच्च॑व॒न्ते। ये त्र्य॑म्ब॒कैश्च॑र॒न्ति। आ॒दि॒त्यं
 च॒रुं पु॒नरे॑त्य॒ निर्व॑पति। इ॒यं वा अ॑दि॒तिः। अ॒स्यामे॒व प्र॑ति॒तिष्ठ॑न्ति।
 ने॒त्रत्र॑या॒य वो॒षट्॥



॥ शतरुद्रीयम् (सं०) ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वम॑ग्रे रु॒द्रो अ॒सुरो॑ म॒हो दि॒वस्त्व॑ श॒र्धो मा॑रु॒तं पृ॒क्ष ई॒शिषे॑। त्वं
 वा॒तैर॑रु॒णैर्या॑सि शङ्ग॒यस्त्वं पृ॒षा वि॑ध॒तः पा॑सि॒ नु त्म॑ना॒। आ वो॒

राजा॑नमध्व॒रस्य॑ रु॒द्रः॑ हो॒ता॒रः॑ स॒त्य॒य॒जः॑ रो॒द॑स्योः। अ॒ग्निं पु॒रा
त॑नयि॒त्नो॒र॒चित्ता॒द्धि॒र॒ण्य॒रूप॑मव॑से कृ॒णुध्व॑म्। अ॒ग्निर्हो॒ता नि ष॑सा॒दा
य॒जी॒यानु॑प॒स्थे मा॒तुः सु॑र॒भावुं लो॒के। यु॒वां क॒विः पु॑रु॒निष्ठ॑ ऋ॒तावां ध॑र्ता
कृ॒ष्टी॒नामु॑त म॒र्य्य इ॒द्धः॑।

सा॒ध्वीम॑क॒र्दे॒ववी॑तिं नो अ॒द्य य॒ज्ञस्य॑ जि॒ह्वा॒म॒वि॒दाम् गु॒ह्या॑म्। स
आ॒युरा॒ऽगा॑त्सु॒रभि॑र्वसा॒नो भ॒द्राम॑क॒र्दे॒वही॑तिं नो अ॒द्य। अ॒क्र॒न्द॒द॒ग्निः
स्त॒नय॑न्नि॒व द्यौः क्षा॒मा रे॑रि॒ह॒द्वीरु॑धः स॒मञ्ज॑न्। स॒द्यो ज॑ज्ञा॒नो वि ही॑मि॒द्धो
अ॒ख्य॒दा रो॑द॒सी भा॒नुना॑ भा॒त्यन्तः॑। त्वे व॑सू॒नि पु॑र्व॒णीक॑ हो॒तर्दो॑षा
व॒स्तो॒रे॒रिरे॑ य॒ज्ञिया॑सः।

क्षामे॑व वि॒श्वा भु॑व॒नानि॑ यस्मि॒न्सः॑ सौ॒भ॒गानि॑ दधि॒रे पा॑व॒के। तुभ्यं॑ ता
अ॒ङ्गि॒रस्त॑म॒ विश्वाः॑ सु॒क्षित॑यः पृथ॑क्। अ॒ग्ने का॑मा॒य ये॑मि॒रे। अ॒श्या॑म॒ तं
का॑म॒म॒ग्ने त॒वो॒त्य॒श्याम॑ र॒यिः॑ र॒यि॒वः सु॑वी॒रम्। अ॒श्या॑म॒ वाज॑म॒भि
वा॒जय॑न्तो॒ऽश्या॑म॒ द्यु॒म॒म॒जरा॑ऽज॒रन्ते॑। श्रेष्ठं॑ य॒विष्ठ॑ भा॒रता॑ऽग्ने द्यु॒मन्त॑मा भ॑र।

वसो॑ पुरु॒स्पृह॑ः र॒यिम्। स श्चि॑ता॒नस्त॑न्य॒तू रौच॑न॒स्था
अ॒ज॒रै॒भिर्ना॑न॒दद्वि॑र्य॒विष्ठः॑। यः पा॑व॒कः पु॑रु॒तमः॑ पु॒रूणि॑ पृथू॒न्य॒ग्नि॑र॒नुया॑ति
भ॑र्वन्। आ॒यु॒ष्टे वि॒श्वतो॑ दध॒दय॑म॒ग्निर्व॑र॒ण्यः॑। पु॒नस्ते॑ प्रा॒ण आ॑य॒ति परा॑
य॒क्ष्मः॑ सु॒वामि॑ ते। आ॒यु॒र्दा अ॒ग्ने ह॒विषो॑ जुषा॒णो घृ॑तप्र॒तीको॑ घृ॒तयो॑नि॒रेधि॑।
घृ॒तं पी॑त्वा मधु॒ चारु॑ ग॒व्यं पि॑ते॒व पु॒त्रम॑भि॒रक्ष॑तादि॒मम्।

तस्मै॑ ते प्र॒ति॒ह॒र्य॑ते जा॒तवे॑दो वि॒च॑र॒षणे॑। अ॒ग्ने जना॑मि सु॒ष्टुति॑म्। दि॒वस्परि॑
प्र॒थ॒मं ज॑ज्ञे अ॒ग्नि॒र॒स्मद्वि॑तीयं॒ परि॑ जा॒तवे॑दाः। तृ॒तीय॑म॒प्सु नृ॑म॒णा
अ॒ज॑स्र॒मि॒न्धान॑ ए॒नं ज॑रते स्वा॒धीः। शुचिः॑ पा॒वक॑ व॒न्द्यो॒ऽग्ने बृ॑ह॒द्वि॒रौच॑से। त्वं
घृ॒तेभि॑राहु॒तः। दृ॒शा॒नो रु॒क्म उ॒र्व्या व्य॑द्यौ॒र्दुर्म॑र॒षमा॑युः श्रि॒ये रु॑चा॒नः।

अ॒ग्नि॒र॒मृ॒तो॑ अ॒भ॒व॒द्वयो॑भि॒र्यदे॑नं॒ द्यौर॑ज॒नय॑त्सु॒रेताः॑।

आ य॒दि॒षे नृ॒पतिं॑ ते॒ज आ॒न॒द्बु॒चि रे॒तो नि॒षि॒क्तं द्यौ॒र॒भी॒कै। अ॒ग्निः श॒र्ध॒म॒न॒व॒द्यं
यु॒वा॒न॒ः स्व॒धि॒यं ज॒नय॑त्सु॒दय॑च्च। स ते॒जी॒य॒सा म॒न॒सा त्वो॒त उ॒त शि॒क्ष
स्व॒प॒त्यस्य॑ शि॒क्षोः। अ॒ग्रे रा॒यो नृ॒त॒म॒स्य प्र॒भू॒तौ भू॒यामं॑ ते सु॒ष्टु॒तय॑श्च॒ वस्वः॑।
अ॒ग्रे स॒ह॒न्त॒मा भ॑र द्यु॒म॒स्य प्रा॒स॒हा र॒यि॒म्।

वि॒श्वा यश्च॑र॒ष्णीर॒भ्यां॒सा वा॒जे॒षु सा॒स॒ह॒त्। त॒म॒ग्रे पृ॒त॒ना स॒ह॒ र॒यि॒ः
स॒ह॒स्व आ भ॑र। त्व॒ हि स॒त्यो अ॒द्भु॒तो दा॒ता वा॒ज॒स्य गो॒म॒तः। उ॒क्षा॒न्ना॒य
व॒शा॒न्ना॒य सो॒म॒पृ॒ष्ठाय॑ वे॒ध॒सै। स्तो॒मैर्वि॑धे॒मा॒ग्नये॑। व॒द्वा हि सू॒नो अ॒स्य॑द्वा॒स॒द्वा
च॒क्रे अ॒ग्नि॒र्ज॒नुषा॑ऽज्माऽन्न॒म्। स त्वं न॑ ऊ॒र्ज॒सन् ऊ॒र्जं धा॒ रा॒जे॒व जे॒रवृ॑के
क्षे॒ष्य॒न्तः।

अ॒ग्न आ॒यू॒षि प॒व॒स आ सु॒वो॒र्ज॒मि॒षं च नः॑। आ॒रे बा॑ध॒स्व दु॒च्छु॒ना॒म्। अ॒ग्रे
प॒व॒स्व स्व॒पा अ॒स्मे व॒र्चः सु॒वी॒र्य॒म्। द॒ध॒त्पो॒ष॒ र॒यिं म॒यि। अ॒ग्रे पा॒व॒क
रो॒चि॒षा म॒न्द्रया॑ दे॒व जि॒ह्वा॒या। आ दे॒वान् व॑क्षि॒ यक्षि॑ च। स नः॑ पा॒व॒क
दी॒दि॒वोऽग्रे॑ दे॒वा इ॒हाऽऽव॑ह। उ॒प॒ य॒ज्ञ॒ ह॒विश्च॑ नः। अ॒ग्निः शु॒चिं व्र॑त॒त॒मः
शु॒चिर्वि॒प्रः शु॒चिः क॒विः। शु॒चीं रो॒च॒त आ॒हु॒तः। उ॒द॒ग्रे शु॒चय॑स्त॒व शु॒क्रा
भ्रा॒ज॒न्त ई॒र॒ते। त॒व ज्यो॒ती॒ष्प्य॒र्चयः॑॥

॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्व॒म॒ग्रे रु॒द्रो अ॒सु॒रो म॒हो दि॒वः। त्व॒ श॒र्धो मा॒रु॒तं पृ॒क्ष ई॒शि॒षे। त्वं
वा॒तै॒र॒रु॒णै॒र्या॒सि श॒ङ्ग॒यः। त्वं पृ॒षा वि॑ध॒तः पा॑सि॒ नु त्म॑ना॒। दे॒वा दे॒वेषु॑
श्र॒य॒ध्वम्। प्र॒थ॒मा द्वि॒तीये॑षु श्र॒य॒ध्वम्। द्वि॒तीया॑स्तृ॒तीये॑षु श्र॒य॒ध्वम्।

तृतीयाश्चतुर्थेषु श्रयध्वम्। चतुर्थाः पञ्चमेषु श्रयध्वम्। पञ्चमाः षष्ठेषु
 श्रयध्वम्॥ षष्ठाः सप्तमेषु श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषु श्रयध्वम्। अष्टमा
 नवमेषु श्रयध्वम्। नवमा दशमेषु श्रयध्वम्। दशमा एकादशेषु श्रयध्वम्।
 एकादशा द्वादशेषु श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रयोदशेषु श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चतुर्दशेषु
 श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पञ्चदशेषु श्रयध्वम्। पञ्चदशाः षोडशेषु श्रयध्वम्॥
 षोडशाः सप्तदशेषु श्रयध्वम्। सप्तदशा अष्टादशेषु श्रयध्वम्। अष्टादशा
 ऐकान्नविंशेषु श्रयध्वम्। ऐकान्नविंशा विंशेषु श्रयध्वम्। विंशा
 एकविंशेषु श्रयध्वम्। एकविंशा द्वाविंशेषु श्रयध्वम्।
 द्वाविंशास्त्रयोविंशेषु श्रयध्वम्। त्रयोविंशाश्चतुर्विंशेषु श्रयध्वम्।
 चतुर्विंशाः पञ्चविंशेषु श्रयध्वम्। पञ्चविंशाः षड्विंशेषु श्रयध्वम्॥
 षड्विंशाः सप्तविंशेषु श्रयध्वम्। सप्तविंशा अष्टाविंशेषु श्रयध्वम्।
 अष्टाविंशा ऐकान्नत्रिंशेषु श्रयध्वम्। ऐकान्नत्रिंशास्त्रिंशेषु श्रयध्वम्।
 त्रिंशा ऐकत्रिंशेषु श्रयध्वम्। एकत्रिंशा द्वात्रिंशेषु श्रयध्वम्।
 द्वात्रिंशास्त्रयस्त्रिंशेषु श्रयध्वम्। देवास्त्रिंशेकादशास्त्रिंशेषु श्रयध्वम्। उत्तरे
 भवता उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्त्वानः। यत्काम इदं जुहोमि। तन्मे समृध्यताम्।
 वयं स्याम पतयो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥
 ॐ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ अस्त्राय फट्॥

॥ पञ्चाङ्गम् ॥

हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
 नृषद्वरसदृतसद्धोमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥
 प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
 यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
 तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
 धियो यो नः प्रचोदयात्॥
 विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
 आसिञ्चतु प्रजापतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥



॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
 सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
 [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
 य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
 [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचौ वेन आवः।
 सबुध्रिया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥१॥
 [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥
 [मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उपश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विष्टितं जगत्।
 स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्वीयो अपसेध शत्रून्॥

[वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मञ्जुहुराणमेनो भूर्यिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥
[पञ्चाम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते अग्ने रुद्रिया तनूस्तया नः पाहि तस्यांस्ते स्वाहा॥
[कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इमं यमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्त्राः
कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व॥
[कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



॥ लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम् ॥

अथाऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम्।

गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।

व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥

कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्।

ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥

वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्।

अमृते नाप्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥

दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।

नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥

सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।

एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥

अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्लवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम् ॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठतु। वक्त्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरश्विनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरसि महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः सर्वतोऽग्निज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अ॒ग्नि॒र्मे वा॒चि श्रि॒तः। वा॒ग्धृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(जिह्वा)

वा॒यु॒र्मे प्रा॒णे श्रि॒तः। प्रा॒णो हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(नासिका)

सू॒र्यो मे॒ चक्षु॑षि श्रि॒तः। चक्षु॑र॒हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(नेत्रे)

च॒न्द्रमा॑ मे॒ मन॑सि श्रि॒तः। मनो॑ हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (वक्षः)

दि॒शो मे॒ श्रोत्रे॑ श्रि॒ताः। श्रोत्र॑ हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑

ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपो मे रेतंसि श्रिताः। रेतो हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (गुह्यम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीरं हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओषधिवनस्पतयो मे लोमंसु श्रिताः। लोमानि हृदये। हृदयं मयि।
अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रो मे बलं श्रितः। बलं हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि।
(बाहू)

पर्जन्यो मे मूर्ध्नि श्रितः। मूर्धा हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशानो मे मन्यौ श्रितः। मन्युरहृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा मे आत्मनि श्रितः। आत्मा हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनर्म आत्मा पुनरायुरागात्। पुनः प्राणः पुनराकूतमागात्। वैश्वानरो
रश्मिभिर्वावृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य
स्थापनं कृत्वा मानसैराधयेत्॥)



॥ आत्मपूजा ॥

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः।
आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर॥

॥ कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् ॥

ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम् ।
निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम् ॥ १ ॥

गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम् ।
श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम् ॥ २ ॥

लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम् ।
स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥ ३ ॥

अक्षमालां सुधाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि ।
पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम् ॥ ४ ॥

श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम् ।
सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम् ॥ ५ ॥

वामाङ्गसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम् ।
जपाकुसुमसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम् ।
सुवर्णरत्नखचितमकुटेन विराजिताम् ॥ ६ ॥

ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाञ्चिताम् ।
राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम् ॥ ७ ॥

सन्तप्तहेमखचित-ताटङ्काभरणान्विताम् ।
ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम् ॥ ८ ॥

पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम् ।
स्वर्णकङ्कणसंयुक्तैश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥ ९ ॥

सुवर्णरत्नखचित-काञ्चीदामविराजिताम् ।
कदलीललितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम् ॥ १० ॥

श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम् ।
अन्योन्याश्लिष्टहृद्वाहू गौरीशङ्करसंज्ञकम् ॥ ११ ॥

सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम्।
आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम्॥१२॥

मङ्गलायतनं देवं युवानमति सुन्दरम्।
ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले सुखासीनं सहोमया॥१३॥

आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर।
सच्चिदानन्द भूतेश पार्वतीश नमोऽस्तु ते॥१४॥



॥ प्रदक्षिणम् ॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रनीललोहित। एषां पुरुषाणामेषां पशूनां मा भर्माऽरो
मो एषां किं चनाऽऽममत्॥ या तै रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहभेषजी।
शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे॥ इमां रुद्राय तवसे कपर्दिनै
क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतिम्॥ यथा नः शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामं
अस्मिन्ननातुरम्॥ मृडा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम
ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदश्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो
महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः
पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥ मा नस्तोके तनये मा
न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र
भामितोऽवधीरहविष्मन्तो नमसा विधेम ते॥ आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने
क्षयद्वीराय सुम्रमस्मे तै अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म
यच्छ द्विर्होः॥ स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहृलुमुग्रम्। मृडा
जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्तै अस्मन्निवपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्य
हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरंघायोः। अव स्थिरा मघवंद्यस्तनुष्व
मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमनां भव।

पर॒मे वृ॒क्ष आ॒युधं॑ नि॒धाय॑ कृ॒त्तिं वसा॑न् आ च॒र पिना॑कं बिभ्र॒दा ग॑हि॥
 वि॒किरि॑द् वि॒लोहि॑त नम॒स्ते अस्तु॑ भगवः। यास्ते॑ स॒हस्र॑
 हे॒तयो॒ऽन्यम॒स्मन्नि॑व॒पन्तु॑ ताः॥ स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑धा बा॒हुवो॑स्तव हे॒तयः॑।
 तासा॒मीशा॑नो भगवः परा॒चीना॑ मुखा॒ कृधि॑॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥



॥ नमस्काराः ॥

स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑शो ये रु॒द्रा अधि॑ भू॒म्याम्। तेषा॑ः स॒हस्र॑योज॒नेऽव॒धन्वा॑नि
 तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥१॥

अ॒स्मिन् म॑ह॒त्यर्ण॑वे॒ऽन्तरि॑क्षे भ॒वा अधि॑। तेषा॑ः स॒हस्र॑योज॒नेऽव॒धन्वा॑नि
 तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥२॥

नील॑ग्री॒वाः शि॒ति॒कण्ठाः॑ शर्वा॑ अधः, क्ष॑माच॒राः। तेषा॑ः
 स॒हस्र॑योज॒नेऽव॒धन्वा॑नि तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥३॥

नील॑ग्री॒वाः शि॒ति॒कण्ठा॑ दि॒वः रु॒द्रा उप॑श्रिताः। तेषा॑ः
 स॒हस्र॑योज॒नेऽव॒धन्वा॑नि तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥४॥

ये वृ॒क्षेषु॑ स॒स्मिञ्ज॑रा नील॑ग्री॒वा वि॒लोहि॑ताः। तेषा॑ः स॒हस्र॑योज॒नेऽव॒धन्वा॑नि
 तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥५॥

ये भू॒ताना॑मधि॒पत॑यो वि॒शि॒खासः॑ क॒पर्दि॑नः। तेषा॑ः स॒हस्र॑योज॒नेऽव॒धन्वा॑नि
 तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥६॥

ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विध्य॑न्ति पा॒त्रेषु॑ पि॒बन्तो॑ जना॒न्। तेषा॑ः स॒हस्र॑योज॒नेऽव॒धन्वा॑नि
 तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥७॥

ये प॒थां प॑थि॒रक्ष॑य ऐल॒बृदा॑ य॒व्युधः॑। तेषा॑ः स॒हस्र॑योज॒नेऽव॒धन्वा॑नि
 तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥८॥

ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒काव॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑। तेषां॑ सह॒स्रयो॒जने॒ऽव॒धन्वा॑नि
तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥१॥

य ए॒ताव॑न्तश्च भू॒यांसश्च॑ दि॒शो रु॒द्रा वि॑तस्थिरे। तेषां॑
सह॒स्रयो॒जने॒ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॑सि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥१०॥

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये पृ॒थि॒व्यां येषा॑म॒न्नमिष॑व॒स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॒चीर्द॑शं दक्षि॒णा द॑शं
प्र॒ती॒चीर्द॑शोदी॒चीर्द॑शो॒र्ध्वास्ते॑भ्यो नम॒स्ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो
द्वेष्टि॑ तं वो ज॒म्भे द॑धामि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥११॥

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये॒ऽन्तरि॑क्षे येषां॑ वा॒त इष॑व॒स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॒चीर्द॑शं दक्षि॒णा द॑शं
प्र॒ती॒चीर्द॑शोदी॒चीर्द॑शो॒र्ध्वास्ते॑भ्यो नम॒स्ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो
द्वेष्टि॑ तं वो ज॒म्भे द॑धामि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥१२॥

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये दि॒वि येषां॑ व॒रुष॑मिष॒वस्ते॑भ्यो द॒श प्रा॒चीर्द॑शं दक्षि॒णा द॑शं
प्र॒ती॒चीर्द॑शोदी॒चीर्द॑शो॒र्ध्वास्ते॑भ्यो नम॒स्ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो
द्वेष्टि॑ तं वो ज॒म्भे द॑धामि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥१३॥

नम॑स्कारान् कृ॒त्वा॥



॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना ॥

अ॒ग्रावि॑ष्णू स॒जोष॑से॒मा व॑र्धन्तु वां गि॒रः। द्यु॒मैर्वा॒जैर्भिरा॑ग॒तम्॥ वा॒जंश्च॑ मे
प्र॒सव॑श्च॒ मे प्र॑य॒तिश्च॑ मे प्र॒सि॑तिश्च॒ मे धी॑तिश्च॒ मे क्र॑तुश्च॒ मे स्वर॑श्च॒ मे
श्लो॒कश्च॑ मे श्रा॒वश्च॑ मे श्रु॒तिश्च॑ मे ज्यो॒तिश्च॑ मे सु॒वंश्च॑ मे प्रा॒णश्च॑ मेऽपा॒नश्च॑ मे
व्या॒नश्च॑ मेऽसु॑श्च॒ मे चि॑त्तं च॒ म आ॒धी॑तं च॒ मे वा॒क्त्रं मे॒ मन॑श्च॒ मे चक्षु॑श्च॒ मे
श्रो॒त्रं च॑ मे दक्ष॑श्च॒ मे बल॑ं च॒ म ओज॑श्च॒ मे सह॑श्च॒ म आ॒यु॑श्च॒ मे ज॒रा च॑ म

आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे
परूषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा
च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे
वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे
त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च
मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे
सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे
सुमतिश्च मे॥२॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च
मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता
च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च
मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च म ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च
मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं
च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे॥३॥

ऊर्क् च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे
सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे रयिश्च मे
रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे बहु च मे भूयश्च मे
पूर्णं च मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूयवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे व्रीहयश्च
मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे
मसुराश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे॥४॥

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे
 वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे सीसं च मे त्रपुश्च मे श्यामं च मे
 लोहं च मेऽग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्यं च
 मेऽकृष्टपच्यं च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च
 मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे
 शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे
 सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे
 मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे धाता च
 म इन्द्रश्च मे विष्णुश्च म इन्द्रश्च मेऽश्विनौ च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म
 इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे पृथिवी च म इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म
 इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे मूर्धा च म इन्द्रश्च मे
 प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे॥६॥

अ॒शुश्च मे र॒श्मिश्च मेऽदा॑भ्यश्च मेऽधि॑पतिश्च म उपा॒शुश्च मेऽन्तर्या॑मश्च म
 ऐ॒न्द्रवा॒यवश्च मे मै॒त्रावरु॑णश्च म आ॒श्विनश्च मे प्रति॑प्रस्थानश्च मे शु॒क्रश्च मे
 म॒न्थी च म आग्र॑यणश्च मे वैश्व॑देवश्च मे ध्रु॒वश्च मे वैश्वान॑रश्च म ऋ॒तुगृ॑हाश्च
 मेऽति॒ग्राह्या॑श्च म ऐ॒न्द्राग्र॑श्च मे वैश्व॑देवश्च मे मरु॒त्वतीया॑श्च मे माहे॒न्द्रश्च म
 आदि॒त्यश्च मे सावि॑त्रश्च मे सार॒स्वतश्च मे पौ॒ष्णश्च मे पा॒त्नीव॑तश्च मे
 हा॒रियो॒जुनश्च मे॥७॥

इ॒ध्मश्च मे ब॒र्हिश्च मे वेदि॑श्च मे धि॒ष्णि॒याश्च मे सु॒चश्च मे चम॑साश्च मे
 ग्रा॒वाण॑श्च मे स्वर॑वश्च म उप॒रवा॑श्च मेऽधि॑षवणे च मे द्रोण॑कल॒शश्च मे
 वा॒यव्या॑नि च मे पू॒तभृ॑च्च म आ॒धव॑नीयश्च म आ॒ग्नीध्रं॑ च मे ह॒विर्धानं॑ च मे
 गृ॒हाश्च मे सद॑श्च मे पुरो॒डाशा॑श्च मे प॒चता॑श्च मेऽव॑भृथश्च मे स्व॒गाका॑रश्च

मे॥८॥

अ॒ग्निश्च॑ मे॒ घ॒र्मश्च॑ मे॒ ऽर्कश्च॑ मे॒ सूर्यश्च॑ मे॒ प्रा॒णश्च॑ मे॒ ऽश्वमे॑धश्च॑ मे॒ पृथि॑वी च॒
 मे॒ ऽदि॑तिश्च॑ मे॒ दि॒तिश्च॑ मे॒ द्यौश्च॑ मे॒ श॒क्र॒री॒र॒ङ्गुल॑यो॒ दि॒शश्च॑ मे॒ य॒ज्ञेन॑
 क॒ल्पन्ता॑मृ॒क्कं मे॒ सा॒मं च॑ मे॒ स्तोम॑श्च॑ मे॒ य॒जुश्च॑ मे॒ दी॒क्षा च॑ मे॒ तप॑श्च॑ म॒
 ऋ॒तुश्च॑ मे॒ व्र॒तं च॑ मे॒ ऽहो॒रा॒त्रयो॑र्वृ॒ष्ट्या बृ॑ह॒द्रथ॑न्त॒रे च॑ मे॒ य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पेता॑म्॥९॥
 ग॒र्भाश्च॑ मे॒ व॒त्साश्च॑ मे॒ त्र्य॒विश्च॑ मे॒ त्र्य॒वी च॑ मे॒ दि॒त्यवा॑च्च॑ मे॒ दि॒त्यौही॑ च॑ मे॒
 प॒श्चा॒विश्च॑ मे॒ प॒श्चा॒वी च॑ मे॒ त्रि॒व॒त्सश्च॑ मे॒ त्रि॒व॒त्सा च॑ मे॒ तु॒र्यवा॑च्च॑ मे॒ तु॒र्यौही॑
 च॑ मे॒ प॒ष्ठवा॑च्च॑ मे॒ प॒ष्ठौही॑ च॑ म॒ उ॒क्षा च॑ मे॒ व॒शा च॑ म॒ ऋ॒षभ॑श्च॑ मे॒ वे॒हच्च॑
 मे॒ ऽन॒ङ्गां च॑ मे॒ धे॒नुश्च॑ म॒ आ॒यु॒र्य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑ प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पता॑मपा॒नो
 य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑ व्या॒नो य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑ च॒क्षु॒र्य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पता॑ः श्रो॒त्रं य॒ज्ञेन॑
 क॒ल्पतां॑ म॒नो य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑ वा॒ग्य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पता॑मा॒त्मा य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑ य॒ज्ञो
 य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पता॑म्॥१०॥

एका॑ च॒ मे॒ ति॒स्रश्च॑ मे॒ प॒ञ्च॑ च॒ मे॒ स॒प्त च॑ मे॒ न॒व च॑ म॒ एका॑द॒श च॑ मे॒
 त्रयो॑द॒श च॑ मे॒ प॒ञ्चद॑श च॒ मे॒ स॒प्तद॑श च॒ मे॒ न॒वद॑श च॒ म॒ एक॑विं॒शति॑श्च॑ मे॒
 त्रयो॑विं॒शति॑श्च॑ मे॒ प॒ञ्चविं॑शतिश्च॑ मे॒ स॒प्तविं॑शतिश्च॑ मे॒ न॒वविं॑शतिश्च॑ म॒
 एक॑त्रिं॒शच्च॑ मे॒ त्रय॑स्त्रिं॒शच्च॑ मे॒ च॒त॒स्रश्च॑ मे॒ ऽष्टौ॑ च॑ मे॒ द्वा॒द॒श च॑ मे॒ षोड॑श
 च॑ मे॒ विं॒शति॑श्च॑ मे॒ च॒तुर्विं॑शतिश्च॑ मे॒ ऽष्टा॑विं॒शति॑श्च॑ मे॒ द्वा॒त्रिं॒शच्च॑ मे॒
 षट्त्रिं॑शच्च॑ मे॒ च॒त्वारिं॑शच्च॑ मे॒ च॒तुश्च॑त्वारिं॒शच्च॑ मे॒ ऽष्टा॑च॒त्वारिं॑शच्च॑ मे॒
 वा॒जश्च॑ प्र॒स॒वश्चा॑पि॒जश्च॑ ऋ॒तुश्च॑ सु॒वश्च॑ मूर्धा॑ च॒ व्य॒श्रि॒यश्चा॑न्त्याय॒नश्चा॑न्त्य॒श्च
 भौ॒व॒नश्च॑ भु॒व॒नश्चा॑धि॒पति॑श्च॥११॥

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडा॑ दे॒वह॑र्म॒नु॒र्य॒ज्ञनी॑र्बृह॒स्पति॑रु॒क्थाम॑दा॒निं श॑सि॒षद्वि॑श्वे॒दे॒वाः सू॑क्त॒वाचः॑
 पृथि॑वि मा॒त॒र्मा मां हि॑सि॒र्मधु॑ म॒निष्ये॑ म॒धुं ज॒निष्ये॑ म॒धुं व॒क्ष्यामि॑ म॒धुं

वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा
 अवन्तु शोभायै पितरोऽनुमदन्तु॥
 ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
 सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
 तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
 तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
 मे अस्तु सदाशिवोम्॥
 तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
 तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (दशवारं जपेत्)।
 महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



॥ प्रार्थना ॥



॥ श्रीरुद्रजपः ॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्त्रस्य। अघोर ऋषिः।
 अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष
 रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः।
 महादेवायेति कीलकम्।

श्री साम्बसदाशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥
॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः।
चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः।
निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः।
ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
सर्वक्रत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः।
दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा।
चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्।
निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं।
ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।
सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्।
भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ ध्यानम् ॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत्
ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णन्दु-वान्तामृतैः।
अस्तोकाप्लुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन्
ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिञ्चेच्छिवम्॥

ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भसित-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः
कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शशि-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः।
त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः
रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥

॥पञ्चपूजा॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि।
 हं आकाशात्मने पूषैः पूजयामि।
 यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि।
 रं अग्न्यात्मने दीपं दर्शयामि।
 वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि।
 सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः१ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
 ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥
 ॐ महागणपतये नमः॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च
 मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता
 च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च
 मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च
 मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं
 च मे शयनं च मे सृषा च मे सुदिनं च मे॥
 ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—प्रथमं गन्धतोयं च

...
 त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्राविष्णू सजोषंसेमा वर्धन्तु वां गिरः। द्युमैर्वाजैभिरागतम्॥ वाजंश्च मे
 प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे
 श्लोकश्च मे श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानश्च मे
 व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे
 श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च म ओजश्च मे सहश्च म आयुश्च मे जरा च म
 आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे
 परूरूषि च मे शरीराणि च मे॥

यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियो रुद्रो महर्षिः।
 हिरण्यगर्भं पश्यत जायमानं स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्तु॥
 अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
महादेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—द्वितीयं पञ्चगव्यकम्।

...
 त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
 ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा
 च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे
 वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे
 त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे

सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथं
च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मृतिश्च मे सुमृतिश्च मे॥

यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायोऽस्ति कश्चित्।

वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥

अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

शिवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—पञ्चामृतं तृतीयं स्यात्

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च
मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धृता
च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च

मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च म ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयुक्ष्मं च
मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं
च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे॥

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानुशुः।

परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेतद्यतयो विशन्ति॥

अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—घृतस्नानं चतुर्थकम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ऊर्क् मे सूनृतां च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधुं च मे सग्धिश्च मे
सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च मे औद्भिद्यं च मे रयिश्च मे
रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभुं च मे प्रभुं च मे बहुं च मे भूयश्च मे
पूर्णं च मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूयवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे व्रीहयश्च
मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे
मसुराश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः सन्न्यास योगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।

ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥

अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—पञ्चमं पयसा स्नानं

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अश्मां च मे मृत्तिका च मे गिरयंश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे
वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयंश्च मे सीसं च मे त्रपुंश्च मे श्यामं च मे
लोहं च मेऽग्निश्च म् आपंश्च मे वीरुधंश्च म् ओषधयश्च मे कृष्टपुच्यं च
मेऽकृष्टपुच्यं च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च
मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वसुं च मे वसतिश्च मे कर्म च मे
शक्तिश्च मेऽर्थश्च म् एमंश्च म् इतिश्च मे गतिश्च मे॥

दहं विपापं परमैऽश्मभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसं स्थम्।
तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपासितव्यम्॥
अनेन पञ्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
नीललोहितः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...
अभिषेकः—दधिस्नानं तु षष्ठकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्निश्च म् इन्द्रश्च मे सोमश्च म् इन्द्रश्च मे सविता च म् इन्द्रश्च मे

सरस्वती च म॒ इन्द्रश्च मे पूषा च॑ म॒ इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म॒ इन्द्रश्च मे
 मित्रश्च॑ म॒ इन्द्रश्च मे वरुणश्च म॒ इन्द्रश्च मे त्वष्टा च॑ म॒ इन्द्रश्च मे धाता च॑
 म॒ इन्द्रश्च मे विष्णुश्च म॒ इन्द्रश्च मेऽश्विनौ च॑ म॒ इन्द्रश्च मे मरुतश्च॑ म॒
 इन्द्रश्च मे विश्वे च॑ मे देवा इन्द्रश्च मे पृथिवी च॑ म॒ इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च॑ म॒
 इन्द्रश्च मे द्यौश्च॑ म॒ इन्द्रश्च मे दिशश्च म॒ इन्द्रश्च मे मूर्धा च॑ म॒ इन्द्रश्च मे
 प्रजापतिश्च म॒ इन्द्रश्च मे॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
 तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥
 अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
 ईशानः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—सप्तमं मधुना स्नानम्

...
 त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अ॒शुश्च मे रश्मिश्च॑ मेऽदा॒भ्यश्च मेऽधि॑पतिश्च म॒ उपा॒शुश्च मेऽन्तर्या॑मश्च म॒
 ऐन्द्र॑वायवश्च मे मैत्रावरु॑णश्च म॒ आश्वि॑नश्च मे प्रतिप्र॑स्थानश्च मे शु॒क्रश्च मे
 म॒न्थी च॑ म॒ आग्र॑यणश्च मे वैश्वदे॑वश्च मे ध्रु॒वश्च मे वैश्वान॑रश्च म॒ ऋतु॑ग्रहाश्च
 मेऽति॑ग्राह्याश्च म॒ ऐन्द्रा॑ग्रश्च मे वैश्वदे॑वश्च मे मरु॒त्वतीया॑श्च मे माहेन्द्र॑श्च म॒
 आदि॑त्यश्च मे सावि॑त्रश्च मे सारस्व॑तश्च मे पौष्ण॑श्च मे पाली॒वत॑श्च मे
 हारि॑योज॒नश्च मे॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
 भवे भवे नार्तिं भवे भवस्व माम्। भवोद्धवाय नमः॥
 अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
विजयः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—इक्षुसारमथाष्टमम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
 इध्मश्च मे बर्हिश्च मे वेदिश्च मे धिष्ण्याश्च मे सुचश्च मे चमसाश्च मे
 ग्रावाणश्च मे स्वरवश्च म उपरवाश्च मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलशश्च मे
 वायव्यानि च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च म आग्नीध्रं च मे हविर्धानं च मे
 गृहाश्च मे सदश्च मे पुरोडाशाश्च मे पचताश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे॥
 वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
 कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
 सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥
 अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
भीमः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। ...
अभिषेकः—नवमं फलसारं च

ॐ
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च
मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे शर्करीरङ्गुलयो दिशश्च मे यज्ञेन
कल्पन्तामृक्च मे सामं च मे स्तोमश्च मे यजुश्च मे दीक्षा च मे तपश्च म
ऋतुश्च मे व्रतं च मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
देवदेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। ...
अभिषेकः—दशमं नाळिकेरकम्।

ॐ
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

गर्भाश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाच्च मे दित्यौही च मे
पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाच्च मे तुर्यौही

चं मे प॒ष्ठवा॑च्चं मे प॒ष्ठौही॑ चं म उ॒क्षा चं मे व॒शा चं म ऋ॒षभ॑श्चं मे वे॒हच्चं॑
 मेऽन॒ङ्गां चं मे धे॒नुश्चं॑ म आ॒यु॒र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ कल्पतामपा॒नो
 य॒ज्ञेन॑ कल्पतां व्या॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां चक्षु॒र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां॑ श्रोत्रं य॒ज्ञेन॑
 कल्पतां मनो॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां वा॒ग्य॒ज्ञेन॑ कल्पतामा॒त्मा य॒ज्ञेन॑ कल्पतां य॒ज्ञो
 य॒ज्ञेन॑ कल्पताम्॥

तत्पु॒रुषाय॑ वि॒द्महे॑ महादे॒वाय॑ धीमहि। तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॒चोद॑यात्॥
 अनेन॑ द॒शम॑-वा॒र-ज॒पेन॑ भगवान् सर्वात्मकः
 भवो॒द्भवः॑ सु॒प्रीतः॑ सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। . . .
 अभिषेकः—एकादशं गन्धतोयं द्वादशं तीर्थमुच्यते॥

त्र्य॒म्बकं॑ यजामहे सु॒ग॒न्धिं पु॒ष्टि॒वर्ध॑नम्।
 उ॒र्वारु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृत्योर्मु॒क्षीय॑ माऽमृता॑त्॥
 यो रु॒द्रो अ॒ग्नौ यो अ॒प्सु य ओष॑धीषु यो रु॒द्रो वि॒श्वा भु॑वनाऽऽवि॒वेश॑ तस्मै॑
 रु॒द्राय॑ नमो॑ अस्तु॥ तमु॒ष्टुहि॑ यः स्वि॒षुः सु॒धन्वा॑ यो वि॒श्वस्य॑ क्षयति
 भेष॑जस्य॥

(ऋक्) यक्ष्वा॑महे सौम॒न॒साय॑ रु॒द्रं नमो॑भिर्दे॒वम॑सुरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो॒
 भग॑वान॒यं मे भग॑वत्तरः। अ॒यं मे॑ वि॒श्वभे॑षजोऽयं शि॒वाभि॑र्मर्शनः॥

ये ते॑ स॒हस्र॑म॒युतं॑ पाशा॒ मृत्यो॑ म॒र्त्याय॑ हन्त॒वे। तान् य॒ज्ञस्य॑ मा॒यया॑
 सर्वा॑न॒व यजामहे॑। मृत्य॒वे स्वाहा॑ मृत्य॒वे स्वाहा॑॥ ओं नमो भगवते रुद्राय

विष्णवे मृत्युर्मे पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः।

तेनान्नेनाप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि॥

एका च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे सप्त च मे नव च मे एकादश च मे
त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे एकविंशतिश्च मे
त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे
एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे षोडश
च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मे द्वात्रिंशच्च मे
षट्त्रिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाचत्वारिंशच्च मे
वाजश्च प्रसवश्चापिजश्च क्रतुश्च सुवश्च मूर्धा च व्यश्रियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च
भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥

अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥

[इडा देवहूर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शसिषद्विश्वेदेवाः सूक्तवाचः
पृथिवि मातर्मा मां हिंसीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं
वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासं शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा
अवन्तु शोभायै पितरोऽनुमदन्तु॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।

ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

अ॒सौ योऽव॑स॒र्पति॑ नील॑ग्रीवो॒ विलो॑हितः। उ॒तैनं॑ गो॒पा अ॑दृ॒शन्न॑दृ॒शन्नुद॑हार्यः।
उ॒तैनं॑ वि॒श्वा भू॑तानि॒ स दृ॒ष्टो मृ॑डयाति नः॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। रु॒द्राय॑
नमः॑। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो॑ अस्तु नील॑ग्रीवाय सह॑स्राक्षाय मी॒दुषे॑। अथो॒ ये अ॑स्य॒ सत्वा॑नोऽहं
तेभ्यो॑ऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। का॒लाय॑ नमः॑। यज्ञोपवीताभरणानि
समर्पयामि॥९॥

प्र मु॑ञ्च॒ धन्वं॑न॒स्त्वमु॑भयो॒रार्ति॑यो॒र्ज्याम्। याश्च॑ ते॒ हस्त॑ इष॑वः परा॒ ता भ॑गवो
वप॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। कल॑विकरणाय॒ नमः॑। दि॒व्यपरि॑मलगन्धान्
धारयामि। गन्ध॑स्योपरि अक्ष॑तान् समर्पयामि॥१०॥

अ॒व॒तत्य॑ धनु॒स्त्व॑ सह॑स्राक्ष॒ शते॑षुधे। नि॒शीर्य॑ श॒ल्यानां॑ मु॒खा शि॒वो नः॑
सु॒मना॑ भव॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। बल॑विकरणाय॒ नमः॑। पु॒ष्पैः
पूज॑यामि॥११॥

ॐ भवाय॑ देवाय नमः। ॐ शर्वाय॑ देवाय नमः।
ॐ ईशानाय॑ देवाय नमः। ॐ पशुपतये॑ देवाय नमः।
ॐ रुद्राय॑ देवाय नमः। ॐ उग्राय॑ देवाय नमः।
ॐ भीमाय॑ देवाय नमः। ॐ महते॑ देवाय नमः॥
ॐ भवस्य॑ देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य॑ देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ ईशानस्य॑ देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य॑ पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
 ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ श्रीरुद्रनाम त्रिशती ॥

नमो हिरण्यबाहवे नमः। सेनान्यै नमः।
 दिशां च पतये नमः। नमो वृक्षेभ्यो नमः।
 हरिकेशेभ्यो नमः। पशूनां पतये नमः।
 नमः सस्मिञ्जराय नमः। त्विषीमते नमः।
 पृथीनां पतये नमः। नमो बभ्रुशाय नमः।
 विव्याधिने नमः। अन्नानां पतये नमः।
 नमो हरिकेशाय नमः। उपवीतिने नमः।
 पुष्टानां पतये नमः। नमो भवस्य हेतुयै नमः।
 जगतां पतये नमः। नमो रुद्राय नमः।
 आतताविने नमः। क्षेत्राणां पतये नमः।
 नमः सूताय नमः। अहन्त्याय नमः।
 वनानां पतये नमः। नमो रोहिताय नमः।
 स्थपतये नमः। वृक्षाणां पतये नमः।
 नमो मन्त्रिणे नमः। वाणिजाय नमः।
 कक्षाणां पतये नमः। नमो भुवन्तये नमः।
 वारिवस्कृताय नमः। ओषधीनां पतये नमः।
 नम उच्चैर्घोषाय नमः। आक्रन्दयते नमः।
 पत्नीनां पतये नमः। नमः कृत्स्नवीताय नमः।
 धावते नमः। सत्त्वेनां पतये नमः॥
 नमः सहमानाय नमः। निव्याधिने नमः।

आ॒व्या॒धिनी॑नां॒ पत॑ये नमः॑। नमः॑ ककु॒भाय॒ नमः॑।
 निष॒ङ्गिणे॒ नमः॑। स्तेना॑नां॒ पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ निष॒ङ्गिणे॒ नमः॑। इषु॑धिमते॒ नमः॑।
 तस्क॑राणां॒ पत॑ये नमः॑। नमो॑ व॒श्वते॒ नमः॑।
 परि॒व॒श्वते॒ नमः॑। स्ता॒यूनां॒ पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ निचे॒रवे॒ नमः॑। परि॒च॒राय॒ नमः॑।
 अर॑ण्यानां॒ पत॑ये नमः॑। नमः॑ सू॒का॒विभ्यो॒ नमः॑।
 जिघा॑ँस॒द्भ्यो॒ नमः॑। मुष्ण॑तां॒ पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ऽसि॒म॒द्भ्यो॒ नमः॑। नक्तं॑ चर॒द्भ्यो॒ नमः॑।
 प्र॒कृ॒न्तानां॒ पत॑ये नमः॑। नम॑ उ॒ष्णी॒षिने॒ नमः॑।
 गि॒रि॒च॒राय॒ नमः॑। कु॒लु॒ञ्चानां॒ पत॑ये नमः॑।
 नम॑ इषु॒म॒द्भ्यो॒ नमः॑। ध॒न्वा॒विभ्य॑श्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒त॒न्वा॒नेभ्यो॒ नमः॑। प्र॒ति॒द॒धा॒नेभ्य॑श्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒य॒च्छ॒द्भ्यो॒ नमः॑। वि॒सृ॒ज॒द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ऽस्य॒द्भ्यो॒ नमः॑। वि॒ध्य॒द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒सी॒नेभ्यो॒ नमः॑। श॒या॒नेभ्य॑श्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ स्व॒प॒द्भ्यो॒ नमः॑। जाग्र॑द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑स्ति॒ष्ठ॒द्भ्यो॒ नमः॑। धाव॑द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ स॒भा॒भ्यो॒ नमः॑। स॒भा॒प॒तिभ्य॑श्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ अ॒श्व॑भ्यो॒ नमः॑। अ॒श्व॑प॒तिभ्य॑श्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑॥
 नम॑ आ॒व्या॒धिनी॑भ्यो॒ नमः॑। वि॒वि॒ध्य॒न्ती॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ उ॒ग॒णा॒भ्यो॒ नमः॑। तृ॒ह॒ती॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ गृ॒थ्स॑भ्यो॒ नमः॑। गृ॒थ्स॑प॒तिभ्य॑श्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ व्रा॒त॑भ्यो॒ नमः॑। व्रा॒त॑प॒तिभ्य॑श्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।

नमो॑ गणे॒भ्यो नमः॑। गण॑पति॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ वि॒रूपे॒भ्यो नमः॑। वि॒श्वरूपे॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ म॒हद्भ्यो॒ नमः॑। क्षु॒ल्लके॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ र॒थिभ्यो॒ नमः॑। अ॒रथे॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ र॒थेभ्यो॒ नमः॑। र॒थप॑ति॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ सेना॑भ्यो॒ नमः॑। सेना॑नि॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ क्ष॒त्तृभ्यो॒ नमः॑। स॒ङ्ग॒ही॒तृभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑स्तक्ष॒भ्यो नमः॑। र॒थका॑रे॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ कुला॑ले॒भ्यो नमः॑। क॒मरि॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यो॒ नमः॑। नि॒षादे॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ इषु॒कृद्भ्यो॒ नमः॑। ध॒न्व॒कृद्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ मृ॒गयु॑भ्यो॒ नमः॑। श्व॒निभ्य॑श्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ श्व॒भ्यो नमः॑। श्व॒पति॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑॥
 नमो॑ भ॒वाय॑ च॒ नमः॑। रु॒द्राय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ श॒र्वाय॑ च॒ नमः॑। प॒शुप॑तये च॒ नमः॑।
 नमो॑ नील॑ग्रीवाय च॒ नमः॑। शि॒ति॒क॒ण्ठाय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ क॒पर्दि॑ने च॒ नमः॑। व्यु॒प्तके॑शाय च॒ नमः॑।
 नमः॑ स॒हस्रा॑क्षाय च॒ नमः॑। श॒तध॑न्वने च॒ नमः॑।
 नमो॑ गि॒रि॒शाय॑ च॒ नमः॑। शि॒पि॒वि॒ष्टाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ मी॒ढुष्ट॑माय च॒ नमः॑। इषु॑मते च॒ नमः॑।
 नमो॑ ह॒स्वाय॑ च॒ नमः॑। वा॒म॒नाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ बृ॒हते॑ च॒ नमः॑। व॒र्षी॑यसे च॒ नमः॑।
 नमो॑ वृ॒द्धाय॑ च॒ नमः॑। स॒ंवृ॒ध्वने॑ च॒ नमः॑।

नमो अग्रियाय च नमः। प्रथमाय च नमः।
 नम आशवे च नमः। अजिराय च नमः।
 नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः।
 नम ऊर्म्याय च नमः। अवस्वन्याय च नमः।
 नमः स्रोतस्याय च नमः। द्वीप्याय च नमः॥
 नमो ज्येष्ठाय च नमः। कनिष्ठाय च नमः।
 नमः पूर्वजाय च नमः। अपरजाय च नमः।
 नमो मध्यमाय च नमः। अपगल्भाय च नमः।
 नमो जघन्याय च नमः। बुधियाय च नमः।
 नमः सोभ्याय च नमः। प्रतिसर्याय च नमः।
 नमो याम्याय च नमः। क्षेम्याय च नमः।
 नम उर्वर्याय च नमः। खल्याय च नमः।
 नमः श्लोक्याय च नमः। अवसान्याय च नमः।
 नमो वन्याय च नमः। कक्ष्याय च नमः।
 नमः श्रवाय च नमः। प्रतिश्रवाय च नमः।
 नम आशुषेणाय च नमः। आशुरथाय च नमः।
 नमः शूराय च नमः। अवभिन्दते च नमः।
 नमो वर्मिणे च नमः। वरूथिने च नमः।
 नमो बिल्मिने च नमः। कवचिने च नमः।
 नमः श्रुताय च नमः। श्रुतसेनाय च नमः॥
 नमो दुन्दुभ्याय च नमः। आहन्याय च नमः।
 नमो धृष्णवे च नमः। प्रमृशाय च नमः।
 नमो दूताय च नमः। प्रहिताय च नमः।

नमो॑ निष॒ङ्गिणे॑ च॒ नमः॑। इ॒षु॒धि॒मते॑ च॒ नमः॑।
 नम॑स्ती॒क्ष्णेष॑वे च॒ नमः॑। आ॒यु॒धिने॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ स्वा॒यु॒धाय॑ च॒ नमः॑। सु॒ध॒न्व॒ने च॒ नमः॑।
 नमः॑ सु॒त्याय॑ च॒ नमः॑। प॒थ्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ का॒ट्याय॑ च॒ नमः॑। नी॒प्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ सू॒द्याय॑ च॒ नमः॑। स॒र॒स्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ ना॒द्याय॑ च॒ नमः॑। वै॒श॒न्ताय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ कू॒प्याय॑ च॒ नमः॑। अ॒व॒ट्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ व॒र्ष्याय॑ च॒ नमः॑। अ॒व॒र्ष्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ मे॒घ्याय॑ च॒ नमः॑। वि॒द्यु॒त्याय॑ च॒ नमः॑।
 नम॑ ई॒ध्रियाय॑ च॒ नमः॑। आ॒त॒प्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ वा॒त्याय॑ च॒ नमः॑। रे॒ष्मियाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ वा॒स्त॒व्याय॑ च॒ नमः॑। वा॒स्तु॒पाय॑ च॒ नमः॑॥
 नमः॑ सो॒माय॑ च॒ नमः॑। रु॒द्राय॑ च॒ नमः॑।
 नम॑स्ता॒म्राय॑ च॒ नमः॑। अ॒रु॒णाय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ श॒ङ्गाय॑ च॒ नमः॑। प॒शु॒प॒तये॑ च॒ नमः॑।
 नम॑ उ॒ग्राय॑ च॒ नमः॑। भी॒माय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ अ॒ग्रे॒व॒धाय॑ च॒ नमः॑। दू॒रे॒व॒धाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ ह॒न्त्रे च॒ नमः॑। ह॒नी॒य॒से च॒ नमः॑।
 नमो॑ वृ॒क्षे॒भ्यो नमः॑। ह॒रि॒केशे॒भ्यो नमः॑।
 नम॑स्ता॒राय॑ नमः॑। नमः॑ श॒म्भ॒वे च॒ नमः॑।
 म॒यो॒भ॒वे च॒ नमः॑। नमः॑ श॒ङ्क॒राय॑ च॒ नमः॑।
 म॒य॒स्क॒राय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ शि॒वाय॑ च॒ नमः॑।

शिव॒त॒राय॑ च॒ नमः॑। नम॒स्ती॒र्थ्याय॑ च॒ नमः॑।

कू॒ल्याय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ पा॒र्याय॑ च॒ नमः॑।

अ॒वा॒र्याय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ प्र॒त॒र॒णाय॑ च॒ नमः॑।

उ॒त्त॒र॒णाय॑ च॒ नमः॑। नम॑ आ॒ता॒र्याय॑ च॒ नमः॑।

आ॒ला॒द्याय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ श॒ष्याय॑ च॒ नमः॑।

फे॒न्याय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ सि॒क्त्याय॑ च॒ नमः॑।

प्र॒वा॒ह्याय॑ च॒ नमः॑॥

नम॑ इ॒रि॒ण्याय॑ च॒ नमः॑। प्र॒प॒थ्याय॑ च॒ नमः॑।

नमः॑ कि॒श॒िलाय॑ च॒ नमः॑। क्षय॑णाय च॒ नमः॑।

नमः॑ क॒प॒र्दि॒नै च॒ नमः॑। पु॒ल॒स्तये॑ च॒ नमः॑।

नमो॑ गो॒ष्ठ्याय॑ च॒ नमः॑। गृ॒ह्याय॑ च॒ नमः॑।

नम॑स्त॒ल्प्याय॑ च॒ नमः॑। गे॒ह्याय॑ च॒ नमः॑।

नमः॑ का॒ट्याय॑ च॒ नमः॑। गृ॒ह्रे॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑।

नमो॑ हृ॒द॒य्याय॑ च॒ नमः॑। नि॒वे॒ष्याय॑ च॒ नमः॑।

नमः॑ पा॒स॒व्याय॑ च॒ नमः॑। र॒ज॒स्याय॑ च॒ नमः॑।

नमः॑ शु॒ष्क्याय॑ च॒ नमः॑। ह॒रि॒त्याय॑ च॒ नमः॑।

नमो॑ लो॒प्याय॑ च॒ नमः॑। उ॒ल॒प्याय॑ च॒ नमः॑।

नम॑ ऊ॒र्व्याय॑ च॒ नमः॑। सू॒र्म्याय॑ च॒ नमः॑।

नमः॑ प॒र्ण्याय॑ च॒ नमः॑। प॒र्ण॒श॒द्याय॑ च॒ नमः॑।

नमो॑ऽप॒गु॒र॒मा॒णाय॑ च॒ नमः॑। अ॒भि॒घ्न॒ते च॒ नमः॑।

नम॑ आ॒खि॒व॒द॒ते च॒ नमः॑। प्र॒खि॒व॒द॒ते च॒ नमः॑। नमो॑ वो॒ नमः॑।

कि॒रि॒के॒भ्यो नमः॑। दे॒वा॒ना॒ं हृ॒द॒ये॒भ्यो नमः॑।

नमो॑ वि॒क्षी॒ण॒के॒भ्यो नमः॑। नमो॑ वि॒चि॒न्व॒त्के॒भ्यो नमः॑।

नमं आनिर्हृतेभ्यो नमः। नमं आमीवृत्केभ्यो नमः।



॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | |
|---------------------|----------------------------|----|
| ॐ शिवाय नमः | ॐ उग्राय नमः | |
| ॐ महेश्वराय नमः | ॐ कपालिने नमः | |
| ॐ शम्भवे नमः | ॐ कामारये नमः | |
| ॐ पिनाकिने नमः | ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः | |
| ॐ शशिशेखराय नमः | ॐ गङ्गाधराय नमः | |
| ॐ वामदेवाय नमः | ॐ ललाटाक्षाय नमः | |
| ॐ विरूपाक्षाय नमः | ॐ कालकालाय नमः | |
| ॐ कपर्दिने नमः | ॐ कृपानिधये नमः | ३० |
| ॐ नीललोहिताय नमः | ॐ भीमाय नमः | |
| ॐ शङ्कराय नमः | ॐ परशुहस्ताय नमः | १० |
| ॐ शूलपाणिने नमः | ॐ मृगपाणये नमः | |
| ॐ खट्वाङ्गिने नमः | ॐ जटाधराय नमः | |
| ॐ विष्णुवल्लभाय नमः | ॐ कैलासवासिने नमः | |
| ॐ शिपिविष्टाय नमः | ॐ कवचिने नमः | |
| ॐ अम्बिकानाथाय नमः | ॐ कठोराय नमः | |
| ॐ श्रीकण्ठाय नमः | ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | |
| ॐ भक्तवत्सलाय नमः | ॐ वृषाङ्गाय नमः | |
| ॐ भवाय नमः | ॐ वृषभारूढाय नमः | ४० |
| ॐ शर्वाय नमः | ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| ॐ त्रिलोकेशाय नमः | ॐ सामप्रियाय नमः | २० |
| ॐ शितिकण्ठाय नमः | ॐ स्वरमयाय नमः | |
| ॐ शिवाप्रियाय नमः | ॐ त्रयीमूर्तये नमः | |

| | | | |
|---------------------------|----|---------------------|----|
| ॐ अनीश्वराय नमः | | ॐ सूक्ष्मतनवे नमः | |
| ॐ सर्वज्ञाय नमः | | ॐ जगद्ध्यापिने नमः | |
| ॐ परमात्मने नमः | | ॐ जगद्गुरवे नमः | |
| ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | | ॐ व्योमकेशाय नमः | |
| ॐ हविषे नमः | | ॐ महासेनजनकाय नमः | |
| ॐ यज्ञमयाय नमः | ५० | ॐ चारुविक्रमाय नमः | |
| ॐ सोमाय नमः | | ॐ रुद्राय नमः | |
| ॐ पञ्चवक्त्राय नमः | | ॐ भूतपतये नमः | |
| ॐ सदाशिवाय नमः | | ॐ स्थाणवे नमः | ८० |
| ॐ विश्वेश्वराय नमः | | ॐ अहये बुध्याय नमः | |
| ॐ वीरभद्राय नमः | | ॐ दिगम्बराय नमः | |
| ॐ गणनाथाय नमः | | ॐ अष्टमूर्तये नमः | |
| ॐ प्रजापतये नमः | | ॐ अनेकात्मने नमः | |
| ॐ हिरण्यरेतसे नमः | | ॐ सात्त्विकाय नमः | |
| ॐ दुर्धर्षाय नमः | | ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | |
| ॐ गिरीशाय नमः | ६० | ॐ शाश्वताय नमः | |
| ॐ गिरिशाय नमः | | ॐ खण्डपरशवे नमः | |
| ॐ अनघाय नमः | | ॐ अजाय नमः | |
| ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः | | ॐ पाशविमोचकाय नमः | ९० |
| ॐ भर्गाय नमः | | ॐ मृडाय नमः | |
| ॐ गिरिधन्वने नमः | | ॐ पशुपतये नमः | |
| ॐ गिरिप्रियाय नमः | | ॐ देवाय नमः | |
| ॐ कृत्तिवाससे नमः | | ॐ महादेवाय नमः | |
| ॐ पुरारातये नमः | | ॐ अव्ययाय नमः | |
| ॐ भगवते नमः | | ॐ हरये नमः | |
| ॐ प्रमथाधिपाय नमः | ७० | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ मृत्युञ्जयाय नमः | | ॐ अव्यग्राय नमः | |

ॐ दक्षाध्वरहराय नमः

ॐ सहस्रपदे नमः

ॐ हराय नमः

१००

ॐ अपवर्गप्रदाय नमः

ॐ भगनेत्रभिदे नमः

ॐ अनन्ताय नमः

ॐ अव्यक्ताय नमः

ॐ तारकाय नमः

ॐ सहस्राक्षाय नमः

ॐ परमेश्वराय नमः

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवा५ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मोदुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय

त्रिकाग्रिका॒लाय॑ कालाग्रिरु॒द्राय॑ नीलक॒ण्ठाय॑ मृत्युञ्ज॒याय॑ सर्वेश्व॒राय॑
सदाशि॒वाय॑ श्रीमन्महादे॒वाय॑ नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृ॒ह॒त्साम॑ क्षत्र॒भृद्वृद्ध॑ वृ॒ष्णियं॑ त्रि॒ष्टुभौजः॑ शु॒भित॑मु॒ग्रवी॑रम्। इन्द्र॒स्तोमे॑न
पञ्चद॒शेन॑ म॒ध्यमि॑दं वा॒तेन॑ स॒गरे॑ण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्याना॒मीश्वरः॑ सर्वभू॒तानां॑ ब्रह्माधि॑पतिर्ब्रह्म॒णोऽधि॑पतिर्ब्रह्मा॑ शिवो
मे अस्तु सदाशि॒वोम्॥ ॐ ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय
नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय
नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
द्वितीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

मया कृतान्यनेकानि पापानि हर शङ्कर।
गृहाणार्घ्यमुमाकान्त शिवरात्रौ प्रसीद मे॥२॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

पूर्वे नन्दि महाकालौ गणभृङ्गी च दक्षिणे।
वृषस्कन्दौ पश्चिमे ते देशकालौ तथोत्तरे।
गङ्गा च यमुना पार्श्वे पूजां गृह्ण नमोऽस्तुते॥२॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करौमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()^{३५} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{३६} नक्षत्र ()^{३७} नाम योग () करण युक्तायां
च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ
अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां

^{३५}पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^{३६}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{३७}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं तृतीय-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो
रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषु गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवा गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं
समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः
सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं
समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाङ्गम्भयन्त्सर्वाश्च

यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥
 असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु
 श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।
 स्नानं समर्पयामि॥

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥
 स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
 ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
 ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उत्तैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
 उत्तैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय
 नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं
 तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि
 समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्त्तियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो
 वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
 धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अ॒व॒त॒त्य॒ ध॒नु॒स्त्व॑ सह॒स्राक्ष॑ श॒तै॒षु॒धे। नि॒शी॒र्य॑ श॒ल्य॒ानां॑ मु॒खा शि॒वो नः॑
 सु॒म॒ना भ॒व॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। ब॒ल॒वि॒कर॒णाय॑ न॒मः। पु॒ष्पैः
 पू॒ज॒यामि॥११॥

ॐ भ॒वाय॑ दे॒वाय॑ न॒मः। ॐ श॒र्वाय॑ दे॒वाय॑ न॒मः।
 ॐ ई॒शाना॑य दे॒वाय॑ न॒मः। ॐ प॒शुप॑तये दे॒वाय॑ न॒मः।
 ॐ रु॒द्राय॑ दे॒वाय॑ न॒मः। ॐ उ॒ग्राय॑ दे॒वाय॑ न॒मः।
 ॐ भी॒माय॑ दे॒वाय॑ न॒मः। ॐ म॒ह॒ते दे॒वाय॑ न॒मः॥
 ॐ भ॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै न॒मः। ॐ श॒र्वस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै न॒मः।
 ॐ ई॒शानस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै न॒मः। ॐ प॒शुप॑तेर्दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै न॒मः।
 ॐ रु॒द्रस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै न॒मः। ॐ उ॒ग्रस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै न॒मः।
 ॐ भी॒मस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै न॒मः। ॐ म॒ह॒तो दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै न॒मः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | |
|-------------------------|----------------------------|
| ॐ शि॒वाय॑ न॒मः | ॐ शि॒पि॒वि॒ष्टाय॑ न॒मः |
| ॐ म॒हेश्व॑राय न॒मः | ॐ अ॒म्बिका॑नाथाय न॒मः |
| ॐ श॒म्भवे॑ न॒मः | ॐ श्री॒कण्ठ॑ाय न॒मः |
| ॐ पि॒नाकि॑ने न॒मः | ॐ भ॒क्तव॑त्स॒लाय॑ न॒मः |
| ॐ श॒शिशे॑ख॒राय॑ न॒मः | ॐ भ॒वाय॑ न॒मः |
| ॐ वा॒मदे॒वाय॑ न॒मः | ॐ श॒र्वाय॑ न॒मः |
| ॐ वि॒रूपा॑क्षाय न॒मः | ॐ त्रि॒लोके॑शाय न॒मः |
| ॐ क॒पर्दि॑ने न॒मः | ॐ शि॒तिक॑ण्ठाय न॒मः |
| ॐ नी॒ललो॑हि॒ताय॑ न॒मः | ॐ शि॒वाप्रि॑याय न॒मः |
| ॐ शङ्क॑राय न॒मः | ॐ उ॒ग्राय॑ न॒मः |
| ॐ शू॒लपा॑णिने न॒मः | ॐ क॒पालि॑ने न॒मः |
| ॐ ख॒ट्वाङ्गि॑ने न॒मः | ॐ का॒मा॒रये॑ न॒मः |
| ॐ वि॒ष्णु॒वल्ल॑भाय न॒मः | ॐ अ॒न्धका॑सुर॒सूद॑नाय न॒मः |

ॐ गङ्गाधराय नमः
 ॐ ललाटाक्षाय नमः
 ॐ कालकालाय नमः
 ॐ कृपानिधये नमः ३०
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ परशुहस्ताय नमः
 ॐ मृगपाणये नमः
 ॐ जटाधराय नमः
 ॐ कैलासवासिने नमः
 ॐ कवचिने नमः
 ॐ कठोराय नमः
 ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
 ॐ वृषाङ्गाय नमः
 ॐ वृषभारूढाय नमः ४०
 ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
 ॐ सामप्रियाय नमः
 ॐ स्वरमयाय नमः
 ॐ त्रयीमूर्तये नमः
 ॐ अनीश्वराय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
 ॐ हविषे नमः
 ॐ यज्ञमयाय नमः ५०
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॐ सदाशिवाय नमः

ॐ विश्वेश्वराय नमः
 ॐ वीरभद्राय नमः
 ॐ गणनाथाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ हिरण्यरेतसे नमः
 ॐ दुर्धर्षाय नमः
 ॐ गिरीशाय नमः ६०
 ॐ गिरिशाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः
 ॐ भर्गाय नमः
 ॐ गिरिधन्वने नमः
 ॐ गिरिप्रियाय नमः
 ॐ कृत्तिवाससे नमः
 ॐ पुरारातये नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ प्रमथाधिपाय नमः ७०
 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
 ॐ जगद्धापिने नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ व्योमकेशाय नमः
 ॐ महासेनजनकाय नमः
 ॐ चारुविक्रमाय नमः
 ॐ रुद्राय नमः
 ॐ भूतपतये नमः
 ॐ स्थाणवे नमः ८०

ॐ अहये बुध्याय नमः
 ॐ दिगम्बराय नमः
 ॐ अष्टमूर्तये नमः
 ॐ अनेकात्मने नमः
 ॐ सात्त्विकाय नमः
 ॐ शुद्धविग्रहाय नमः
 ॐ शाश्वताय नमः
 ॐ खण्डपरशवे नमः
 ॐ अजाय नमः
 ॐ पाशविमोचकाय नमः
 ॐ मृडाय नमः
 ॐ पशुपतये नमः
 ॐ देवाय नमः
 ॐ महादेवाय नमः

ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ हरये नमः
 ॐ पूषदन्तभिदे नमः
 ॐ अव्यग्राय नमः
 ॐ दक्षाध्वरहराय नमः
 ॐ हराय नमः
 ॐ भगनेत्रभिदे नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ सहस्राक्षाय नमः
 ॐ सहस्रपदे नमः
 ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ तारकाय नमः
 ॐ परमेश्वराय नमः

१००

१०

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशाल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
 निषङ्गर्थिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥ १२॥

या ते हेतिर्मादुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
 परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
 सन्दर्शयामि॥ १३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै।
 उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।

सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मुनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
 मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
 शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय
 नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय
 नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
 द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
 तृतीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
 करोमि विधिवद्वत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥
 इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
 करोमि विधिवद्वत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥निशीथे॥

दुःखदारिद्र्यभारैश्च दग्धोऽहं पार्वतीपते।
 त्रायस्व मां महादेव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

नमोऽव्यक्ताय सूक्ष्माय नमस्ते त्रिपुरान्तक।
 पूजां गृहाण देवेश यथाशक्त्युपपादिताम्॥३॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
 तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥
इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥
इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करौमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धं श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे

शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
 ()^{३८} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
 त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
 भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{३९} नक्षत्र ()^{४०} नाम योग () करण युक्तायां
 च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ
 अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
 पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
 जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
 रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
 पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं चतुर्थ-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
 रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
 पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
 विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
 नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो
 रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
 समर्पयामि॥ २॥

^{३८}पृष्ठं २९१ पश्यताम्

^{३९}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{४०}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

या तै रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥ अर्घ्यं
समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः
सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं
समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु
श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।
स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नदहार्यः।
 उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय
 नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं
 तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि
 समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोऽरारिभ्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो
 वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
 धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः
 सुमना भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः
 पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ शिवाय नमः

ॐ शम्भवे नमः

ॐ महेश्वराय नमः

ॐ पिनाकिने नमः

| | | | |
|-----------------------|----|----------------------------|----|
| ॐ शशिशेखराय नमः | | ॐ परशुहस्ताय नमः | |
| ॐ वामदेवाय नमः | | ॐ मृगपाणये नमः | |
| ॐ विरूपाक्षाय नमः | | ॐ जटाधराय नमः | |
| ॐ कपर्दिने नमः | | ॐ कैलासवासिने नमः | |
| ॐ नीललोहिताय नमः | | ॐ कवचिने नमः | |
| ॐ शङ्कराय नमः | १० | ॐ कठोराय नमः | |
| ॐ शूलपाणिने नमः | | ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | |
| ॐ खट्वाङ्गिने नमः | | ॐ वृषाङ्गाय नमः | |
| ॐ विष्णुवल्लभाय नमः | | ॐ वृषभारूढाय नमः | ४० |
| ॐ शिपिविष्टाय नमः | | ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| ॐ अम्बिकानाथाय नमः | | ॐ सामप्रियाय नमः | |
| ॐ श्रीकण्ठाय नमः | | ॐ स्वरमयाय नमः | |
| ॐ भक्तवत्सलाय नमः | | ॐ त्रयीमूर्तये नमः | |
| ॐ भवाय नमः | | ॐ अनीश्वराय नमः | |
| ॐ शर्वाय नमः | | ॐ सर्वज्ञाय नमः | |
| ॐ त्रिलोकेशाय नमः | २० | ॐ परमात्मने नमः | |
| ॐ शितिकण्ठाय नमः | | ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| ॐ शिवाप्रियाय नमः | | ॐ हविषे नमः | |
| ॐ उग्राय नमः | | ॐ यज्ञमयाय नमः | ५० |
| ॐ कपालिने नमः | | ॐ सोमाय नमः | |
| ॐ कामारये नमः | | ॐ पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः | | ॐ सदाशिवाय नमः | |
| ॐ गङ्गाधराय नमः | | ॐ विश्वेश्वराय नमः | |
| ॐ ललाटाक्षाय नमः | | ॐ वीरभद्राय नमः | |
| ॐ कालकालाय नमः | | ॐ गणनाथाय नमः | |
| ॐ कृपानिधये नमः | ३० | ॐ प्रजापतये नमः | |
| ॐ भीमाय नमः | | ॐ हिरण्यरेतसे नमः | |

| | | | |
|--------------------|----|---------------------|-----|
| ॐ दुर्धर्षाय नमः | | ॐ अनेकात्मने नमः | |
| ॐ गिरीशाय नमः | ६० | ॐ सात्त्विकाय नमः | |
| ॐ गिरिशाय नमः | | ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | |
| ॐ अनघाय नमः | | ॐ शाश्वताय नमः | |
| ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः | | ॐ खण्डपरशवे नमः | |
| ॐ भर्गाय नमः | | ॐ अजाय नमः | |
| ॐ गिरिधन्वने नमः | | ॐ पाशविमोचकाय नमः | १० |
| ॐ गिरिप्रियाय नमः | | ॐ मृडाय नमः | |
| ॐ कृत्तिवाससे नमः | | ॐ पशुपतये नमः | |
| ॐ पुरारातये नमः | | ॐ देवाय नमः | |
| ॐ भगवते नमः | | ॐ महादेवाय नमः | |
| ॐ प्रमथाधिपाय नमः | ७० | ॐ अव्ययाय नमः | |
| ॐ मृत्युञ्जयाय नमः | | ॐ हरये नमः | |
| ॐ सूक्ष्मतनवे नमः | | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ जगद्ध्यापिने नमः | | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ जगद्गुरवे नमः | | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ व्योमकेशाय नमः | | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ महासेनजनकाय नमः | | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ चारुविक्रमाय नमः | | ॐ अव्यक्ताय नमः | |
| ॐ रुद्राय नमः | | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ भूतपतये नमः | | ॐ सहस्रपदे नमः | |
| ॐ स्थाणवे नमः | ८० | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः | |
| ॐ अहये बुध्याय नमः | | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ दिगम्बराय नमः | | ॐ तारकाय नमः | |
| ॐ अष्टमूर्तये नमः | | ॐ परमेश्वराय नमः | |

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशाल्यो बाणवा ५ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मादुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्रिकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय
नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय
नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
चतुर्थ-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

किं न जानासि देवेश त्वयि भक्तिं प्रयच्छ मे।
स्वपादाग्रतले देव दास्यं देहि जगत्पते॥४॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

बद्धोऽहं विविधैः पाशैः संसारभयबन्धनैः।
पतितं मोहजाले मां त्वं समुद्धर शङ्कर॥४॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम् ॥

संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शङ्कर।
प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



॥ सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

आचमनम्। शुक्लाम्बरधरं + शान्तये। प्राणायामः।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेरङ्घ्रियुगं स्मरामि॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थागतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्।
श्रीरामः स्मरणेनैव व्यपोहति न संशयः॥

श्रीराम राम राम।

तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च।
योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्॥

श्रीहरे गोविन्द गोविन्द गोविन्द।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्, अद्य -

श्रीभगवतः विष्णोः नारायणस्य अचिन्त्यया अपरिमितया शक्त्या
 भ्रियमाणस्य महाजलौघस्य मध्ये परिभ्रमताम् अनेककोटिब्रह्माण्डानाम्
 एकतमे पृथिवी-अप्-तेजो-वायु-आकाश-अहङ्कार-महद्-अव्यक्तैः आवरणैः
 आवृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डकरण्डमध्ये चतुर्दशभुवनान्तर्गते भूमण्डले
 जम्बू-प्लक्ष-शाक-शाल्मलि-कुश-क्रौञ्च-पुष्कराख्य-सप्तद्वीपमध्ये जम्बूद्वीपे
 भारत-किम्पुरुष-हरि-इलावृत-रम्यक-हिरण्य-कुरु-भद्राश्व-केतुमाल-
 नववर्षमध्ये भारतवर्षे

इन्द्र-चेरु-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारण-भरत-नवखण्डमध्ये
 भरतखण्डे सुमेरु-निषद-हेमकूट-हिमाचल-माल्यवत्-पारियात्रक-गन्धमादन-
 कैलास-विन्ध्याचलादि-अनेकपुण्यशैलानां मध्ये

दण्डकारण्य-चम्पकारण्य-विन्ध्यारण्य-वीक्षारण्य-श्वेतारण्य-वेदारण्यादि-
 अनेकपुण्यारण्यानां मध्ये कर्मभूमौ रामसेतुकेदारयोः मध्ये
 भागीरथी-यमुना-नर्मदा-त्रिवेणी-मलापहारिणी-गौतमी-कृष्णवेणी-तुङ्गभद्रा-
 कावेर्यादि-अनेकपुण्यनदी-विराजिते

इन्द्रप्रस्थ-यमप्रस्थ-अवन्तिकापुरी-हस्तिनापुरी-अयोध्यापुरी-द्वारका-मथुरा-
 पुरी-मायापुरी-काशीपुरी-काशीपुर्यादि-अनेकपुण्यपुरी-विराजिते -

सकलजगत्सृष्टुः परार्धद्वयजीविनः ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे पञ्चाशद्-अब्दादौ
 प्रथमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे अहि द्वितीये यामे तृतीये
 मुहूर्ते स्वायम्भुव-स्वारोचिष-उत्तम-तामस-रैवत-चाक्षुषाख्येषु षट् मनुषु
 अतीतेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे
 अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये

()^{४१} नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त
 / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह /
 कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्ल /
 कृष्ण) पक्षे () शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /

भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{४२} नक्षत्र ()^{४३} नाम योग () करण युक्तायां च

एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् () शुभतिथौ-

अनादि-अविद्या-वासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः

कर्मगतिभिः विचित्रासु योनिषु पुनःपुनः अनेकधा जनित्वा केनापि
पुण्यकर्मविशेषेण इदानीन्तन-मानुष-द्विजजन्म-विशेषं प्राप्तवतः मम -

जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षणपर्यन्तं बाल्ये कौमारे यौवने मध्यमे
वयसि वार्धके च जागृत्-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्थासु

मनो-वाक्-कायाख्य-त्रिकरणचेष्टया कर्मेन्द्रिय-ज्ञानेन्द्रिय-व्यापारैः

सम्भावितानाम् इह जन्मनि जन्मान्तरे च ज्ञानाज्ञानकृतानां महापातकानां

महापातक-अनुमन्तृत्वादीनां समपातकानाम् उपपातकानां मलिनीकरणानां

गर्ह्यधन-आदान-उपजीवनादीनाम् अपात्रीकरणानां जातिभ्रंशकराणां

विहितकर्मत्याग-निन्दितसमाचरणादीनां ज्ञानतः सकृत् कृतानाम् अज्ञानतः

असकृत् कृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं -

महागणपत्यादिसमस्तवैदिकदेवतासन्निधौ

()-पुण्यकाल-स्नानमहं करिष्ये। अप उपस्पृश्या।

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम।

भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुम् अर्हसि॥

(प्रोक्षण-मन्त्राः/स्नान-मन्त्राः)

स्नात्वा वस्त्रं धृत्वा कुलाचारवत् पुण्ड्रधारणं च कृत्वा आचम्या।



^{४२}पृष्ठं २९२ पश्यताम्

^{४३}पृष्ठं २९३ पश्यताम्

विभाग: २

उपाङ्गा:

संवत्सर-नामानि

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च॥१॥

ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः॥२॥

सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ॥३॥

हेमलम्बो विलम्बोऽथ विकारी शार्वरी प्लवः।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ॥४॥

प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः॥५॥

पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः॥६॥

- | | |
|--------------|----------------|
| १. प्रभवः | १२. बहुधान्यः |
| २. विभवः | १३. प्रमाथी |
| ३. शुक्लः | १४. विक्रमः |
| ४. प्रमोदः | १५. वृषः |
| ५. प्रजापतिः | १६. चित्रभानुः |
| ६. अङ्गिराः | १७. सुभानुः |
| ७. श्रीमुखः | १८. तारणः |
| ८. भावः | १९. पार्थिवः |
| ९. युवा | २०. व्ययः |
| १०. धाता | २१. सर्वजित् |
| ११. ईश्वरः | २२. सर्वधारी |

| | |
|----------------|------------------|
| २३. विरोधी | ४२. कीलकः |
| २४. विकृतिः | ४३. सौम्यः |
| २५. खरः | ४४. साधारणः |
| २६. नन्दनः | ४५. विरोधिकृत् |
| २७. विजयः | ४६. परितापी |
| २८. जयः | ४७. प्रमादी |
| २९. मन्मथः | ४८. आनन्दः |
| ३०. दुर्मुखः | ४९. राक्षसः |
| ३१. हेमलम्बः | ५०. नलः |
| ३२. विलम्बः | ५१. पिङ्गलः |
| ३३. विकारी | ५२. कालयुक्तिः |
| ३४. शार्वरी | ५३. सिद्धार्थी |
| ३५. प्लवः | ५४. रौद्रः |
| ३६. शुभकृत् | ५५. दुर्मतिः |
| ३७. शोभनः | ५६. दुन्दुभिः |
| ३८. क्रोधी | ५७. रुधिरोद्गारी |
| ३९. विश्वावसुः | ५८. रक्ताक्षः |
| ४०. पराभवः | ५९. क्रोधनः |
| ४१. प्लवङ्गः | ६०. क्षयः |

नक्षत्र-नामानि

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्लेषा मघास्तथा॥१॥

पूर्वफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफल्गुनी ततः।
हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा तदननतरम्॥२॥

अनूराधा ततो जयेष्ठा ततो मूलं निगद्यते।
पूर्वाषाढोतराषाढा त्वभिजिह्वणस्ततः॥३॥

धनिष्ठा शतताराख्य पूर्वा भाद्रपदा ततः।
उत्तरा भाद्रपदा चैव रेवत्येतानि भानि च॥४॥

| | |
|------------------|---------------------|
| १. अश्विनी | १५. स्वाती |
| २. अपभरणी | १६. विशाखा |
| ३. कृत्तिका | १७. अनूराधा |
| ४. रोहिणी | १८. ज्येष्ठा |
| ५. मृगशीर्षम् | १९. मूला |
| ६. आर्द्रा | २०. पूर्वाषाढा |
| ७. पुनर्वसुः | २१. उत्तराषाढा |
| ८. पुष्यः | २२. श्रवणम् |
| ९. आश्लेषा | २३. श्रविष्ठा |
| १०. मघा | २४. शतभिषक् |
| ११. पूर्वफल्गुनी | २५. पूर्वप्रोष्ठपदा |
| १२. उत्तरफल्गुनी | २६. उत्तरप्रोष्ठपदा |
| १३. हस्तः | २७. रेवती |
| १४. चित्रा | |

योग-नामानि

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यं शोभनस्तथा।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥

गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः।
सिद्धः साध्यः शुभः शुभ्रो ब्राह्मो माहेन्द्र-वैधृती॥

| | |
|--------------|--------------|
| १. विष्कम्भः | ३. आयुष्मान् |
| २. प्रीतिः | ४. सौभाग्यम् |

| | |
|--------------|----------------|
| ५. शोभनः | १७. व्यतीपातः |
| ६. अतिगण्डः | १८. वरीयान् |
| ७. सुकर्म | १९. परिघः |
| ८. धृतिः | २०. शिवः |
| ९. शूलः | २१. सिद्धः |
| १०. गण्डः | २२. साध्यः |
| ११. वृद्धिः | २३. शुभः |
| १२. ध्रुवः | २४. शुभ्रः |
| १३. व्याघातः | २५. ब्राह्मः |
| १४. हर्षणः | २६. माहेन्द्रः |
| १५. वज्रः | २७. वैधृतिः |
| १६. सिद्धिः | |

